धींधवाल पब्लिकेशन

DHP-03

तृतीय संशोधित संस्करण

Dhindhwal Publication

नवगठित जिलों के अनुसार

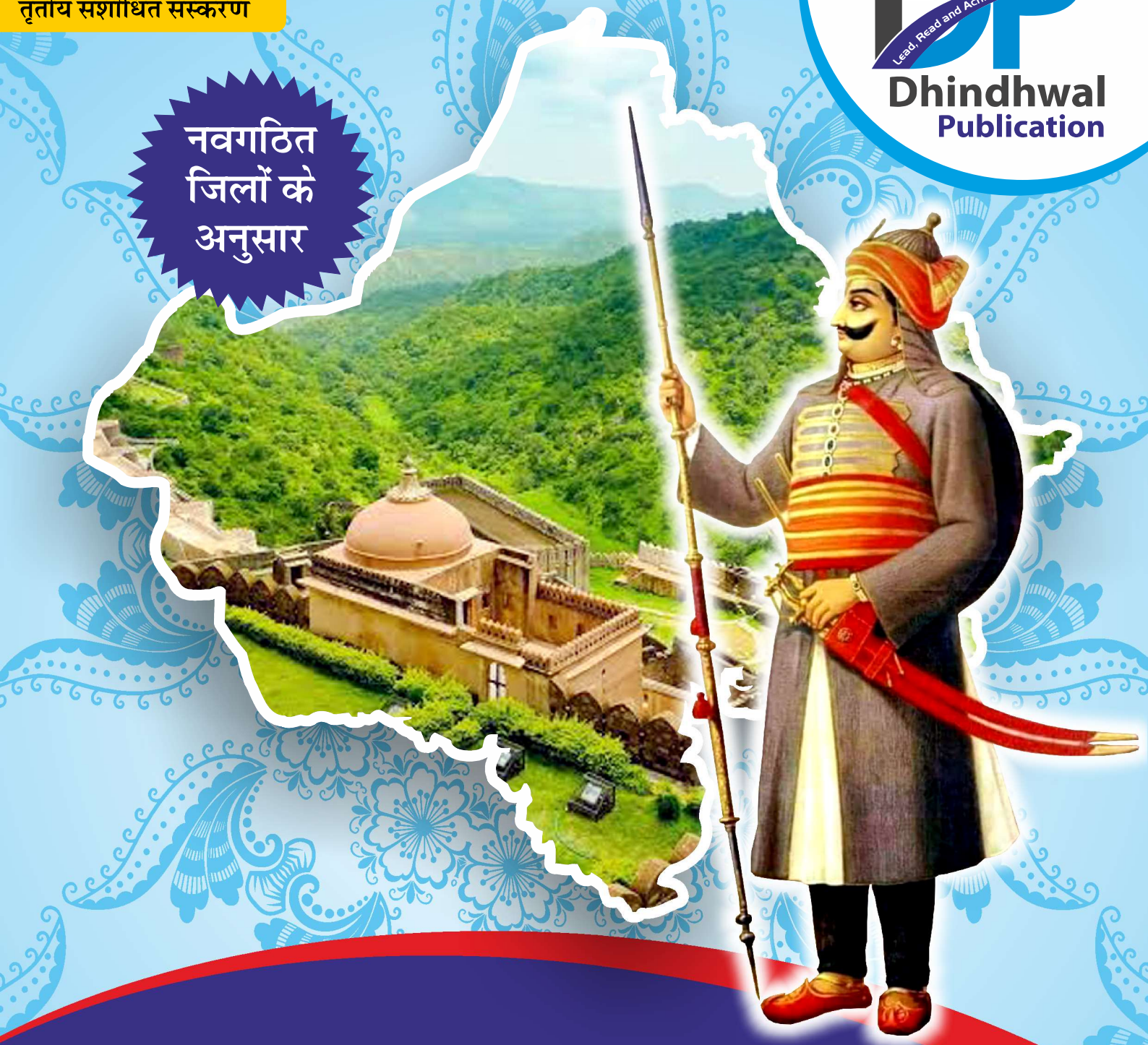

राजस्थान का इतिहास

- मा.शि. बोर्ड की पुस्तकों पर आधारित
- राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी की पुस्तकों व सुजस पर आधारित प्रामाणिक जानकारी
- इतिहास का तथ्यात्मक अध्ययन
- गत परीक्षाओं के प्रश्नो सहित

होशियार सिंह
उप निरीक्षक, राज. पुलिस

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

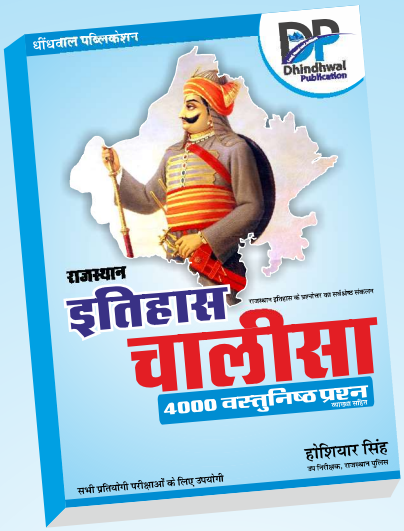

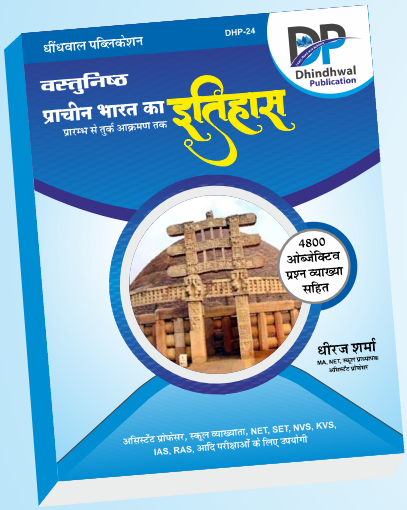

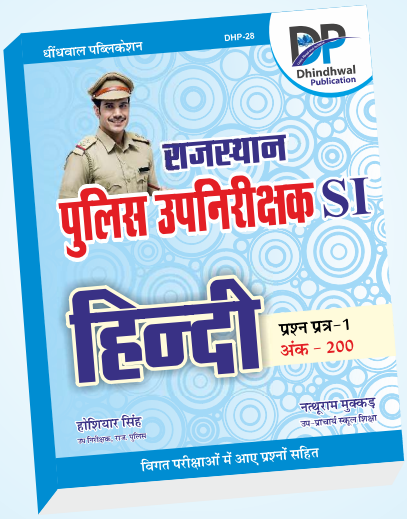

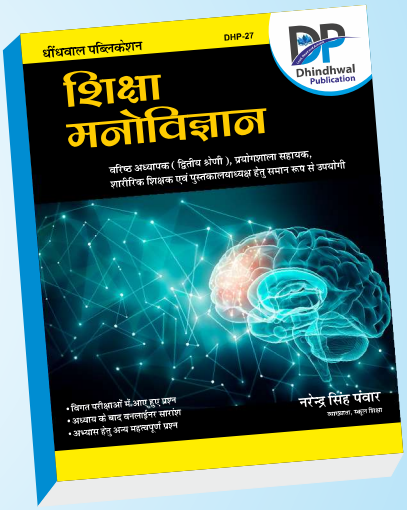

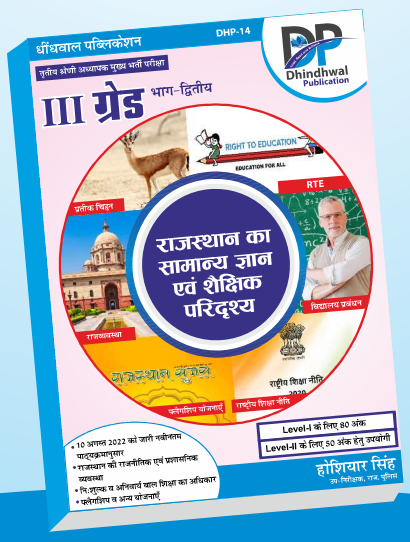

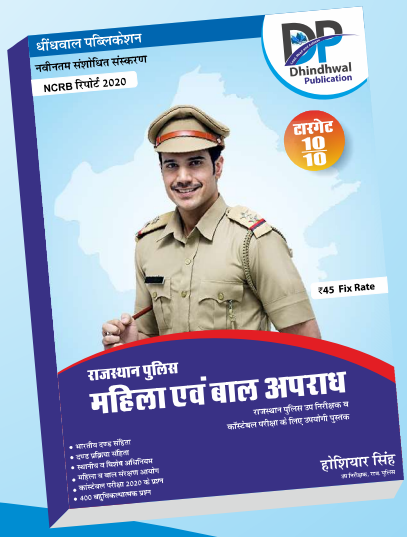

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

सदैव छात्र हितार्थ

जुड़िए पब्लिकेशन के टेलीग्राम चैनल से

Dhindhwal Publication

@DHINDHWAL2021GK

- निःशुल्क मार्गदर्शन
- निःशुल्क टैस्ट सीरीज (पीडीएफ फॉर्मेट में)
- विज्ञप्ति सिलेबस व परिणाम संबंधी जानकारी
- शैक्षणिक समाचार
- डाउट क्लियर करने के लिए पब्लिकेशन के लेखकों से सीधा संवाद
- भूगोल जैसे विषय के अद्यतन आँकड़े

टेलीग्राम में जाकर धींधवाल पब्लिकेशन/Dhindhwal Publication सर्च करके इसे जोइन कर सकते हैं।
टेलीग्राम ग्रुप का लिंक प्राप्त करने के लिए 8306733800 पर वाट्सअप मैसेज करें।

होशियार सिंह

उप निरीक्षक, राज. पुलिस

: लेखक परिचय :

होशियार सिंह का जन्म ग्राम रतनपुरा तहसील राजगढ़ जिला चुरू (राजस्थान) में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही वर्ष 2003 से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आरम्भ की, राजस्थान पुलिस (जिला बीकानेर वर्ष 2008) में कानिस्टेबल के पद पर चयन के साथ ही 2008 में तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद पर चयन हुआ। आपने 5 वर्ष तक जिला राजसमंद में तृतीय श्रेणी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् द्वितीय श्रेणी शिक्षक (हिन्दी) 2013 में चयन होने पर आपने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कतरियासर (बीकानेर) में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् राजस्थान पुलिस उपनिरीक्षक 2014 में चयन हुआ, वर्तमान में आप राजस्थान पुलिस में उप निरीक्षक हैं, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

लेखक की अन्य पुस्तकें

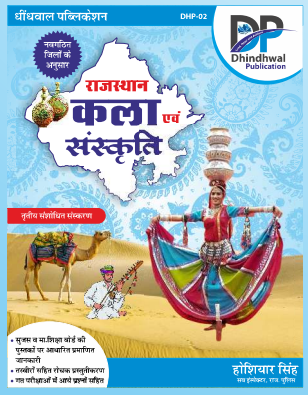

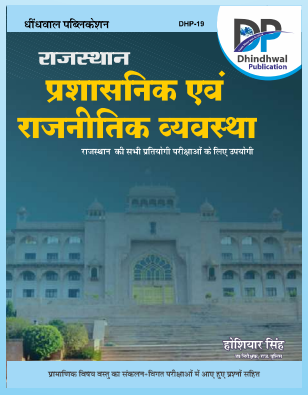

धींधवाल पब्लिकेशन
बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

नवगठित जिलों के अनुसार

प्रस्तुत करते हैं-

Dhindhwal Publication

राजस्थान का इतिहास

- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वर्तमान पाठ्यपुस्तकों पर आधारित।
- राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की पुस्तकों व सुजस पर आधारित
- इतिहास की घटनाओं व तथ्यों का क्रमिक और सरल वर्णन।
- विगत परीक्षाओं में आये हुए 1000 से अधिक प्रश्नों का संकलन।

RAS, कॉलेज व्याख्याता, स्कूल व्याख्याता, शिक्षक IInd ग्रेड, शिक्षक IIIrd ग्रेड, REET, CET, H.M., पुलिस उपनिरीक्षक, पटवार, ग्रामसेवक, राजस्थान पुलिस कानिस्टेबल, राजस्थान हाइकोर्ट, वनरक्षक, वनपाल, पुस्तकालयाध्यक्ष व राजस्थान की अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी पुस्तक।

धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

लेखक :- होशियार सिंह
(उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस)

प्रकाशक:-

धींधवाल पब्लिकेशन

B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर

मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication

- धींधवाल पब्लिकेशन

- Hoshiyar singh Examwala

बुक कोड- DHP 03

© सर्वाधिकार- लेखक

मूल्य- ₹ 600.00

तृतीय संशोधित संस्करण

मुद्रक-

पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इसके किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुन: उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णत: वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अत: ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अत: दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

भूमिका

प्रिय परीक्षार्थियो,

राजस्थान का इतिहास के प्रथम दो संस्करणों की शानदार सफलता के बाद इस पुस्तक का 'तृतीय संशोधित संस्करण' आपके समक्ष प्रस्तुत है। प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम को आधार बनाकर अद्यतन की गई है।

☞ **पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ–**

- पुस्तक को राजस्थान के नवगठित जिलों के अनुसार अद्यतन किया गया है।
- पुस्तक की भाषा शैली सरल, सहज और ग्राह्य बनायी गई है।
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों व सुजस पर आधारित।
- हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की पुस्तकों पर आधारित प्रामाणिक सामग्री का संकलन।
- राजस्थान लोक सेवा आयोग व राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड के पैटर्न के अनुरूप गहन व व्यापक पाठ्यसामग्री का संकलन।
- वर्ष 2023 सहित विगत प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए 1000 से अधिक प्रश्नों का समावेश किया गया है।
- प्रत्येक अध्याय के बाद सारगर्भित विवरण व सारणियों का संकलन।

मैं ईश्वर और अपने माता–पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मैं अपने सहयोगियों मुकेश कुमावत, मनीराम मूण्ड, अशोक जाखड़, विक्रम सिंह, लालचन्द जाट, दिनेश कूकणा, सुन्दरलाल, मो. रफीक (टाईपिस्ट) व असलम अली (टाईपिस्ट) का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम से पुस्तक को अद्यतन करना संभव हो पाया।

''जो सफर की शुरुआत करते है, वो मंजिल को पार करते है
एकबार चलने का हौसला तो रखो, मुसाफिरों के तो रास्ते भी इंतजार करते है''

होशियार सिंह
उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस
मो.- 8118833800

विषय–सूची

क्र.सं.	विषय–सूची	पृष्ठ संख्या
1	राजस्थान के इतिहास के स्रोत ➢ राजस्थान के प्रमुख शिलालेख ➢ राजस्थान के फारसी भाषा के लेख ➢ प्रमुख ताम्र पत्र ➢ विभिन्न रियासतों के सिक्के व मुद्राएँ	1–23
2	राजस्थान की प्रमुख सभ्यताएँ एवं पुरास्थल	24–39
3	राजस्थान का प्राचीन पौराणिक, ऐतिहासिक स्वरूप व जनपद युग	40–46
4	राजपूतों की उत्पत्ति	47–51
5	गुर्जर प्रतिहार राजवंश	52–58
6	चौहान राजवंश	59–76
7	मेवाड़ का गुहिल राजवंश	77–114
8	आमेर का कछवाहा राजवंश	115–130
9	मारवाड़ का राठौड़ राजवंश	131–151
10	बीकानेर का राठौड़ राजवंश	152–160
11	जाट राजवंश	161–167
12	राजस्थान के अन्य महत्त्वपूर्ण राजवंश आबू, जालौर, मालवा व वागड़ के परमार जैसलमेर का भाटी राजवंश, करौली का यादव राजवंश चावड़ा राजवंश, टोंक का मुस्लिम राजवंश, झालावाड़ का झाला राजवंश अलवर का कछवाहा राजवंश, शेखावाटी का कछवाहा राजवंश किशनगढ़ का राठौड़ राजवंश डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ व शाहपुरा का गुहिल राजवंश	168–185
13	राजस्थान में मध्यकालीन प्रशासन व सामंती व्यवस्था	186–200
14	राजस्थान में मराठा हस्तक्षेप एवं उसका प्रभाव	201–208
15	राजस्थान में अंग्रेजी प्रभूत्व और उसके प्रभाव	209–215
16	राजस्थान में 1857 की क्रांति	216–228
17	1857 की क्रांति के बाद सुधारों और राजनीतिक चेतना का काल	229–236
18	राजस्थान के जनजाति एवं किसान आन्दोलन	237–252
19	राजस्थान में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन	253–260
20	राजस्थान में प्रजामण्डल व स्वतंत्रता आंदोलन	261–272
21	राजस्थान का एकीकरण	273–285
22	राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्त्व एवं स्वतंत्रता सेनानी	286–306
23	राजस्थान की इतिहास प्रसिद्ध महिलाएँ	307–312

1 राजस्थान के इतिहास के स्रोत

राजस्थान के प्रमुख शिलालेख

- **शिलालेख/अभिलेख**– पत्थर की शिलाओं, दीवारों व स्तम्भों आदि पर किसी भी प्रकार की जानकारी लिखी हुई मिलती है, उन्हे शिलालेख या अभिलेख कहा जाता है।
- **प्रशस्ति**– जब किसी शिलालेख पर किसी शासक की उपलब्धियों का यशोगान मिलता है तो उसे प्रशस्ति कहते हैं।
- भारत में पहली बार शिलालेख ईरानी **राजा दारा प्रथम** की प्रेरणा से महान **मौर्य शासक अशोक** ने लगाये थे। अशोक के शिलालेख एकाष्म थे। अशोक के शिलालेखों में चार लिपियाँ थी– **ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरेमाईक** व **यूनानी**।
- अभिलेखों के अध्ययन को **'एपिग्राफिक'** कहते हैं।
- भारत में संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख **शक शासक रूद्रदामन** का **'जूनागढ़ अभिलेख'** (गुजरात) है।
- राजस्थान के प्रारम्भिक शिलालेखों की भाषा **संस्कृत** है, जबकि मध्यकालीन शिलालेखों की भाषा **संस्कृत, फारसी, उर्दू** और **राजस्थानी** है।
- शिलालेखों में वर्णित घटनाओं के आधार पर हमें तिथिक्रम निर्धारित करने में सहायता मिलती है। बहुत से शिलालेख राजस्थान के विभिन्न शासकों और दिल्ली के सुल्तानों तथा मुगल सम्राटों के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं।

❖ बड़ली गाँव का शिलालेख (443 ई.पूर्व)–

- यह शिलालेख **केकड़ी जिले** के **बड़ली गाँव** (भिनाय) के **भिलोत माता मंदिर** से एक स्तम्भ के टुकड़े से प्राप्त हुआ है यह **राजस्थान** का सबसे प्राचीन शिलालेख है इसकी लिपि **ब्राह्मी** है। खंडित अवस्था में यह शिलालेख डॉ. **जी. एच. औझा** को 1912 ई. में मिला था, वर्तमान में **अजमेर संग्रहालय** में रखा है। भारत का दूसरा **पुराना अभिलेख** माना जाता है।

❖ अशोक के शिलालेख (तीसरी शताब्दी ई.पूर्व)–

- मौर्य **सम्राट अशोक** के 250 ई. पूर्व के ये दोनों शिलालेख **विराटनगर** की पहाड़ी (कोटपुतली–बहरोड़) से मिले हैं।
  1 **भाब्रु शिलालेख**, 2.**बैराठ शिलालेख**

❖ भाब्रु शिलालेख–

- **बीजक की पहाड़ी** (बैराठ/विराटनगर) से यह शिलालेख **कैप्टन बर्ट** को 1837 ई. में मिला था। **भाब्रु** नामक गाँव (कोटपुतली–बहरोड़) बैराठ से 12 मील दूर है लेकिन कैप्टन बर्ट ने भ्रमवश इसे भाब्रु शिलालेख नाम दे दिया। इसकी भाषा **प्राकृत** व लिपि **ब्राह्मी** है। इस अभिलेख में **सम्राट अशोक** द्वारा **बुद्ध, धम्म एवं संघ में आस्था** प्रकट की गयी है, इस अभिलेख से अशोक के **बौद्ध धर्म का अनुयायी** होना सिद्ध होता है साथ ही राजस्थान के इस प्रदेश में **मौर्य शासन** होने का प्रमाण प्राप्त होता है।

❖ बैराठ शिलालेख–

- बैराठ से प्राप्त यह शिलालेख **भीम डुँगरी** की तलहटी से एक चट्टान पर उत्कीर्ण है। इस लघु शिलालेख की खोज **पुरातत्त्ववेता कार्लाइल** ने 1871–72 ई. में की। इसकी भाषा **प्राकृत** व लिपि **ब्राह्मी** है। यह शिलालेख अशोक के **रूपनाथ** और **सहसराम** अभिलेखों की प्रतिलिपि है। समय के प्रभाव के कारण यह शिलालेख इतना घिस गया है कि इसे पढ़ा नही जा सकता।

❖ नगरी का लेख– (200–150 ई.पू.)

- यह एक खंड लेख है जो मूल लेख का दाहिना भाग है, यह लेख **डॉ. ओझा** को नगरी (चित्तौड़गढ़) नामक स्थान पर प्राप्त हुआ था, जिसे ओझा ने **उदयपुर संग्रहालय** में रखवा दिया था। इसमें दो पंक्तियों में बहुत कम अक्षर दिखाई देते हैं। इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख की लिपि से मिलती जुलती है। **स्रोत– राजस्थान के इतिहास के स्रोत, गोपीनाथ शर्मा (हिन्दी ग्रन्थ अकादमी)**

❖ घोसुण्डी शिलालेख –(द्वितीय शताब्दी ई.पू.)

- चित्तौड़ से सात मील दूर **घोसुण्डी गाँव** से कई शिलाखण्डों में टुटा हुआ प्राप्त हुआ था, इस लेख की भाषा **संस्कृत** व लिपि **ब्राह्मी** है। इस लेख में वर्णित है कि गजवंश के पाराशरी के पुत्र **सर्वतात** ने यहाँ **अश्वमेध यज्ञ** किया था एवं **संकर्षण और वासुदेव** द्वारा पूजाग्रह के चारों ओर पत्थर की चारदीवारी बनाने का उल्लेख है।
- इसमें द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में **भागवत धर्म का प्रचार, संकर्षण** तथा **वासुदेव** की मान्यता और **अश्वमेध यज्ञ** के प्रचलन आदि का वर्णन है। घोसुण्डी शिलालेख को सर्वप्रथम **डॉ. भंडारकर** ने पढ़ा था। वर्तमान में यह **उदयपुर संग्रहालय** में सुरक्षित है। **स्रोत–राजस्थान के इतिहास के स्रोत, गोपीनाथ शर्मा**
- इसे **'हाथीबाड़ा शिलालेख'** भी कहा जाता है।

❖ बिचपुरिया यूप–स्तम्भ लेख –(224 ई.)

- जयपुर रियासत के **उणियारा ठिकाने** (वर्तमान टोंक जिले में) के बिचपुरिया मंदिर के आंगन से प्राप्त हुआ है। यह नगर प्राचीन **मालव प्रान्त** के क्षेत्र में गिना जाता है। इससे **यज्ञानुष्ठान** का बोध होता है, परन्तु यज्ञ विशेष के नाम की हमें जानकारी नहीं होती।

❖ नांदसा यूप स्तम्भ लेख–(225 ई.)

- भीलवाड़ा जिले में स्थित **नांदसा गाँव** (गंगापुर) में एक तालाब

मुरण्डा की मुद्राएँ अपने–अपने चिह्नों सहित पाई गई हैं।

- इन मुद्राओं के अध्ययन से प्रतीत होता है कि **रंगमहल** का क्षेत्र **कनिष्क तृत्तीय** के काल में अधिवासित हो गया था। इससे यह भी अनुमान किया जाता है कि यह क्षेत्र ईसा की द्वितीय शताब्दी से लेकर छठी शताब्दी तक बसा रहा।

❖ बैराठ के उत्खनन से प्राप्त मुद्राएँ–

- बैराठ (कोटपुतली–बहरोड़) के उत्खनन से **बौद्ध विहार** के अवशेष मिले हैं, जिनके चौथे कमरे से एक मिट्टी के भाण्ड में एक **कपड़े** में बँधी हुई **कुल 36 मुद्राएँ** (जिनमें 8 पंचमार्क चाँदी की मुद्राएँ, 28 इंडोग्रीक व यूनानी मुद्राएँ) मिली हैं।
- इन 28 मुद्राओं में 16 मुद्राएँ **यूनानी शासक मिनेन्डर** का होना इस बात का प्रमाण है कि बैराठ **यूनानी शासकों** के अधिकार में था।
- इन मुद्राओं से यह भी स्पष्ट होता है कि **बीजक** की पहाड़ी पर **बौद्धों** के निवास स्थान थे और वे 50 ई. तक बने रहे।

❖ सांभर के उत्खनन से प्राप्त मुद्राएँ–

- सांभर (जयपुर ग्रामीण) के उत्खनन से **200 सिक्के** मिले हैं, जिनमें 6 चाँदी के **पंचमार्क सिक्के** हैं। इसके अलावा 6 ताँबे की **'इण्डो सेसेनियन' मुद्राएँ** भी मिली हैं। एक **हविष्क की मुद्रा** मिली है।
- इसी तरह एक चाँदी की **'इण्डोग्रीक'** मुद्रा, जो **एन्टिमकोजनिकफोरस** नामक यूनानी शासक की भी मिली है, जो प्रारम्भिक स्तर का काल निर्धारण करती है।
- यहाँ से कुछ **यौधेय मुद्राएँ** भी मिली है, जो सम्भवतः रोहतक से यहाँ आई हों। इन मुद्राओं में एक **यौधेय मुद्रा**, जो बहुत छोटी है बड़े महत्त्व की है। इस पर दो पंक्तियों में ब्राह्मी लिपि में **'बबुधना'** तथा **'गण'** अंकित है।

❖ कुषाण सिक्के–

- कुषाणवंशी शासक **वीम कदफिस** ने सर्वप्रथम भारत में सोने का सिक्का तैयार करवाया जो भारतीय मुद्रा शास्त्र की महत्वपूर्ण घटना है। राजस्थान से भी कुषाण शासकों के सोने व तांबे के सिक्के **खेतड़ी** (नीमकाथाना), **जमवारामगढ़** (जयपुर ग्रामीण) और **बीकानेर** आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

❖ गुप्तकालीन सिक्के–

- बयाना (भरतपुर) के **नगलाछैल** नामक ग्राम से गुप्तकालीन सोने के लगभग **1800 सिक्के** मिले हैं। यह गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों का **सबसे बड़ा भंडार** है। इनमें से सर्वाधिक सिक्के **'चन्द्रगुप्त द्वितीय'** विक्रमादित्य के समय के हैं। अन्य सिक्कों में कुमारगुप्त प्रथम तथा समुद्रगुप्त के सिक्के भी हैं। इनमें **ब्राह्मी लिपि** का प्रयोग किया गया है।
- ऐसा अनुमान किया जाता है कि 540 ई. के बाद **हुणों के आक्रमण** के कारण इस खजाने को जमीन में गाड़ दिया गया हो। इन सिक्कों में **चन्द्रगुप्त प्रथम** के 10, **समुद्रगुप्त** के 173, **काचगुप्त** के 15, **चन्द्रगुप्त द्वितीय** के 961, **कुमारगुप्त प्रथम** के 623 तथा **स्कन्दगुप्त** का 1 सिक्का एवं 5 सिक्के खंडित अवस्था में मिले हैं।
- राजस्थान पुरातत्व विभाग को **भेड़** (टोंक जिले में रैढ के निकट) से **6 गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राएँ** मिली हैं। जिनके बारे में अनुमान किया जाता है या तो इस भाग पर गुप्तों का अधिकार रहा हो या व्यापारिक प्रक्रिया के द्वारा यहाँ आई हों।
- राजस्थान में गुप्तकालीन सिक्के **नगलाछैल** (भरतपुर), **भेड** (टोंक), **अहेड़ा** (केकड़ी), **मौराली** व **सांभर** (जयपुर ग्रामीण), **सुखपुरा** और **रैढ** (टोंक) से प्राप्त हुई हैं।
- सांभर के **नालियासर** (जयपुर ग्रामीण) की रजत मुद्राओं से जो **कुमारगुप्त प्रथम** की हैं और जिन पर मयूर की आकृति बनी हुई है, प्रमाणित होता है कि उस समय स्वामी **कार्तिक** की पूजा लोकप्रिय थी।

❖ गुर्जर प्रतिहारों के सिक्के–

- **आदि वराह शैली के सिक्के**– गुर्जर प्रतिहारों के सिक्कों पर सेसेनियन शैली का प्रभाव नजर आता है ये सिक्के तौल, आकार व शैली में सेसेनियन सिक्कों से मिलते जुलते है, ये सिक्के अधिकांशतः **ताँबा मिश्रित चाँदी** के बने हैं। इन सिक्कों के अग्रभाग में **सेसेनियन यज्ञकुण्ड** तथा **'श्री मदादि वराह'** नागरी में अंकित है पृष्ठ भाग में **सूर्यचक्र** तथा **वराह की मूर्ति** बनी रहती है ऐसे सिक्कों को **'आदि वराह' शैली** का नाम दिया गया है।

गधिया सिक्के– मारवाड़ में **गुर्जर प्रतिहारों** द्वारा प्रचलित किये गये **ताँबे के सिक्के** भी मिलते हैं। इन पर राजा के आधे शरीर का चिह्न तथा यज्ञकुण्ड बना हुआ है परन्तु ये चिह्न अस्पष्ट होने के कारण **गधे के मुँह जैसा** दिखाई देता है इन्हें **'गधिया सिक्के'** कहा जाता है। ये सिक्के 11वीं व 12वीं सदी तक प्रचलित थे। **स्रोत– राजस्थान के इतिहास के स्रोत, गोपीनाथ शर्मा (हिन्दी ग्रन्थ अकादमी) पेज नम्बर– 24**

- **आदि वराह द्रम**– **कन्नौज** के शासक **मिहिरभोज** व **विनायकपाल** द्वारा प्रचलित ये सिक्के राजस्थान में पाये गये हैं, इन्हे 'आदि वराह द्रम' कहा गया है।

❖ चौहानों के सिक्के–

- **द्रम, विंशोपक, रूपक, दीनार**– राजस्थान में 11वीं से 13वीं शताब्दी तक के **सांभर, अजमेर, जालौर** व **नाडोल के चौहान** शासकों के कई **चाँदी व ताँबे के सिक्के** प्राप्त हुये हैं। चौहानों के शिलालेखों में इनके लिए द्रम, विंशोपक, रूपक व दीनार आदि

2 राजस्थान की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ एवं पुरास्थल

- प्राचीन स्थलों के उत्खनन से पूर्व राजस्थान के इतिहास के बारे में **मौर्यकाल** (300 ई.पूर्व) तक की ही जानकारी उपलब्ध थी, क्योंकि इतिहास से सम्बन्धित लिखित प्रमाण के रूप में **अशोक के शिलालेख** ही उपलब्ध थे।
- 1920–21 ई. में **हड़प्पा** (पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में मोंटगुमरी जिले में) व उसके बाद 1922–23 में **मोहनजोदड़ों** के खनन से भारत में लगभग 2500 ई.पूर्व की **सैंधव सभ्यता** की उपस्थिति का ज्ञान हुआ। सिन्धु सभ्यता से प्राप्त लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है अतः उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री से ही हमें इस सभ्यता के बारे में जानकारी मिल पाती है।
- सिन्धु घाटी सभ्यता को **भारत की प्रथम नगरीय क्रान्ति** कहा जाता है यह एक **नगर प्रधान** एवं **व्यापार प्रधान** सभ्यता थी। भारत में सिन्धु सभ्यता के सर्वाधिक स्थल **गुजरात** में खोजे गए हैं।

☞ **सर जॉन मार्शल** ने सिन्धु घाटी सभ्यता की कालावधि 3250 ई. पूर्व से 2750 ई. पूर्व बताई है।

☞ **व्हीलर महोदय** ने इसकी कालावधि 2500 ई. पूर्व से 1500 ई. पूर्व मानी है।

☞ **कार्बन डेटिंग** पद्धति से इसकी अवधि 2350 ई. पूर्व निर्धारित की गई है।

- **सिन्धु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल –**
- **हड़प्पा** (पाकिस्तान), **मोहनजोदड़ो** (पाकिस्तान), **चहुन्दड़ो** (पाकिस्तान), **कोटदजी** (पाकिस्तान), **कालीबंगा** (हनुमानगढ़), **रंगमहल** (गंगानगर), **बनावली** (हरियाणा), **रोपड़** (पंजाब), **लोथल** (गुजरात), **धौलावीरा** (गुजरात), **राखीगढ़ी** (हरियाणा) आदि।

राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण का कार्य 1871 ई. में सर्वप्रथम प्रारम्भ करने का श्रेय **ए.सी.एल. कार्लाइल (Archibald Campbell Carlyle)** को है।

- अध्ययन की दृष्टि से मानव के सम्पूर्ण इतिहास को तीन भागों में बांटा जाता है–
  1. प्राक् इतिहास काल
  2. आद्य इतिहास काल
  3. ऐतिहासिक काल

1. प्राक् इतिहास काल–

(20,00,000 ई.पूर्व से 3000 ई.पूर्व तक)– इतिहास का वह कालखण्ड, जिसमें लेखन कला का विकास नहीं हुआ था या उस समय की **लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं** है उसे प्राक् इतिहास काल कहते हैं। यह युग सृष्टि के आरम्भ से **हड़प्पा सभ्यता** के पूर्व तक था।

2. आद्य इतिहास काल–

- प्राक् इतिहास काल व ऐतिहासिक काल के मध्य का काल **'पुरा/आद्य इतिहासकाल'** कहा जाता है इस काल की **लिखित सामग्री तो उपलब्ध** है परन्तु या तो वह अस्पष्ट है अथवा उनकी लिपि को अभी **पढ़ना संभव नहीं** हुआ है। यह युग हड़प्पा सभ्यता के काल से **600 ई.पूर्व** तक रहा है।

3. ऐतिहासिक काल–

- इतिहास का वह कालखण्ड जिसकी पुरातात्त्विक सामग्री के साथ–साथ **लिखित सामग्री** भी उपलब्ध है उसे ऐतिहासिक काल कहा जाता है। यह युग 600 ई.पूर्व से वर्तमान तक जारी है। **स्रोत– राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, कक्षा–10**

राजस्थान में प्रागैतिहासिक काल के अवशेष

- यह मानव सभ्यता का **पाषाण युग** था इस काल में मनुष्य के जीवन के मूल आधार **पत्थर के उपकरण एवं हथियार** थे। राजस्थान में **बनास, बेड़च, गंभीरी, वाघन** एव **चम्बल नदी** की घाटियों में एवं इनके समीपवर्ती स्थानों की खुदाई से पता चलता है कि यहाँ **प्रस्तरयुगीन मानव** निवास करता था। इस काल में **पत्थर के हथियार** व उपकरण प्रचलित थे।

- मानव सभ्यता के उद्भव के इस काल को **'पाषाण काल'** कहते हैं इसे तीन भागों में बांटा गया है–
  1. **पुरापाषाण काल** /पेलियोलेथिक युग
     Paleolithic Age/Early Stone age
     (20,00,000 ई. पूर्व–12,000 ई. पूर्व तक)
  2. **मध्य पाषाण काल** /मेसोलिथिक युग
     Masolithic Age/Middle Stone age
     (12,000 ई. पूर्व–10,000 ई. पूर्व तक)
  3. **नव/उत्तर पाषाण काल** /नियोलिथिक युग
     Neolithic Age (10,000 ई. पूर्व–3,000 ई. पूर्व तक)

स्रोत– हमारे अतीत–1 कक्षा–6 NCERT

1. पुरापाषाण काल–

इस काल में मनुष्य पत्थर के खुरदरे औजार हाथ कुठार, गंडासे आदि प्रयोग में लाता था। राजस्थान में विभिन्न स्थानों से उत्खनन से प्राप्त विभिन्न प्रकार के पाषाण, विशेष रूप से **क्वार्टजाइट** पत्थर के अनेक उपकरणों से ज्ञात होता है कि आज से लगभग दो या डेढ़ लाख वर्ष पूर्व राजस्थान में एक मानव संस्कृति विद्यमान थी। इस युग में मनुष्य

- यहाँ से एक **अग्निकुण्ड** भी मिला है, जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं की अस्थि के अवशेष मिले हैं जो यहाँ के मानव की **आखेटवृत्ति की पुष्टि** करते हैं।
- इस सभ्यता का काल 500 ई. पूर्व से 200 ई. तक माना जाता है। यहाँ **नव पाषाणकालीन** सभ्यता के प्रमाण मिले हैं।

❖ डीडवाना सभ्यता– (डीडवाना–कुचामन)

(पुरा पाषाणकालीन स्थल)

→ राजस्थान में पुरा पाषाणकालीन मानव संस्कृति के चिह्न लूनी नदी के किनारे एवं जालौर जिले में बालू के टीलों में **श्रीमती बी. आलचिन** द्वारा खोजे गए हैं।

→ ब्रिटिश पुरातत्त्ववेता **ओरेल स्टेन** ने 1942 ई. में **सरस्वती नदी** का स्वतंत्र सर्वे किया था, उनकी सर्वे रिपोर्ट 'A Survey Work of Ancient Sites along the lost Saraswati river' के नाम से है।

अन्य पाषाणयुगीन स्थल–

→ **डडीकर** (अलवर)– अलवर के डडीकर–हाजीपुर से 2003 में सात हजार वर्ष पुराने **पाषाणकालीन शैल चित्र** मिले हैं।

→ **भानगढ़ व ढ़िगरिया**–(अलवर) यहाँ पर पुरापाषाणकालीन हाथ कुल्हाड़ी के अवशेष मिले हैं।

→ **विराटनगर/बैराठ**–(**कोटपुतली–बहरोड़**) यहाँ से कुछ प्राकृतिक गुफाओं तथा शैलाश्रयों से पुरापाषाण से उत्तरपाषाण कालीन सामग्री प्राप्त हुई है। यहाँ से **हाथ कुल्हाड़ी** के अवशेष मिले हैं। बैराठ से बड़ी मात्रा में **शैलचित्र** प्राप्त हुए हैं।

→ **दर** (भरतपुर)– कुछ **चित्रित शैलाश्रय** खोजे गए हैं, जिनमें व्याघ्र, बारहसिंघा, मानव आकृति एवं सूर्य का चित्रांकन किया गया है।

→ **आलनिया, भानपुरा, तिपटिया** (कोटा) स्थानों पर शैलचित्र मिले हैं। **डॉ. जगतनारायण श्रीवास्तव** ने 1978 में हाड़ौती के घने जंगलों और पथरीली कंदराओं में शैलचित्रों की खोज की थी।

→ **इन्द्रगढ़** (कोटा)– यहाँ से 1870 ई. मे **सी.ए. हैकेट** को पत्थर के औजार (हैण्डएक्स, एश्यूलियन, क्लीवर) मिले हैं।

→ **गरदड़ा सभ्यता** (बूँदी)– यहाँ छाजा नदी किनारे **पहली बर्ड राईडर रॉक पेटिंग** मिली है। जो देश की पहली पुरामहत्त्व की पेटिंग है।

→ **बांका गाँव** (भीलवाड़ा)– यहाँ राज्य की पहली **अंलकृत गुफा** मिली है।

→ **जायल** (नागौर)– **पुरापाषाणकालीन** सभ्यता स्थल है यहाँ से हस्त कुठार व चॉपर नामक पत्थर के उपकरण मिले हैं।

→ **डीडवाना** के सिंघी तालाब, इन्दोला की ढ़ाणी, अमरपुरा, जानकीपुरा, कोलिया व **जायल** (नागौर) से पुरापाषाणकालीन **हस्तनिर्मित कुल्हाड़ियाँ** प्राप्त हुई है।

→ **सोहनपुरा** (नीमकाथाना)– यहाँ से चित्रित **शैलाश्रय** प्राप्त हुए हैं। 1994 ई. में **मुरारी लाल शर्मा** ने गणेश्वर जोधपुरा संस्कृति के शैलकला पुरास्थल सोहनपुरा की खोज की थी।

→ **हरसौरा** (अलवर)– चित्रित **शैलाश्रय** प्राप्त हुए हैं।

→ **चन्द्रावती** (झालावाड़)– यह एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से एक **चर्ट पत्थर** प्राप्त हुआ है जिस पर रेखाचित्र बना हुआ है।

→ **सोजत व धनेरी** (पाली)– लघुपाषाणकालीन स्थल है।

→ **बूढ़ा पुष्कर**– (अजमेर) **पुरापाषाणकालीन** सभ्यता स्थल है।

→ **होकरा**– (अजमेर) **पुरापाषाणकालीन** सभ्यता स्थल है।

→ **झर** (जयपुर ग्रामीण)– यहाँ पर पुरातात्त्विक श्रीमती आलचिन को उत्तर पाषाणकाल के अवशेष '**माइक्रोलिथ**' मिले हैं।

→ **दयारामपुरा** (जयपुर ग्रामीण)– यहाँ प्रागैतिहासिक काल के काली व लाल मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े मिले हैं।

☞ राजस्थान में **अरावली पर्वत श्रृंखला** में व **चम्बल नदी** की घाटियों में शैलाश्रयों में **प्रागैतिहासिक काल** के मानव द्वारा उकेरे गए शैलचित्र प्राप्त हुए हैं इनमें सर्वाधिक **आखेट दृश्य** उपलब्ध होते हैं।

☞ बूँदी के पुरातत्त्वविद **ओमप्रकाश शर्मा** ने बूँदी से भीलवाड़ा तक 35 किमी. लम्बी विश्व की सबसे लम्बी **शैलचित्र श्रृंखला** खोजी है जो **बूँदी** जिले में 20 किमी. व **भीलवाड़ा** जिले में 15 किमी. क्षेत्र में **गैंदी का छज्जा** नामक स्थान तक फैली है। यह शैलचित्र श्रृखंला रेवा नदी, मांगली नदी, घोड़ापछाड़ नदी के चट्टानी कगारों पर स्थित है।

☞ **राजस्थान में धातु काल**– पाषाण युग की समाप्ति के बाद धातु युग का आरम्भ होता है सर्वप्रथम मानव ने **ताँबे** का प्रयोग करना प्रारम्भ किया, उसके बाद मिश्रित धातु **कांसे** का तथा सबसे बाद **लोहे** का प्रयोग किया।

- **ताम्र पाषाण, ताम्र एवं ताम्रकांस्य काल**– राजस्थान में अनेक स्थानों से ताम्र पाषाण व ताम्र काल के अवशेष मिले हैं। राजस्थान की प्रमुख ताम्रयुगीन सभ्यताएँ निम्न हैं –

❖ गणेश्वर सभ्यता (नीमकाथाना)–

- उपनाम– भारत की **ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी/ताम्रयुगीन सभ्यताओं में प्राचीनतम/ताम्रसंचयी संस्कृति**
- **डॉ. विजय कुमार** ने रेडियो कार्बन पद्धति के आधार पर गणेश्वर को ताम्रयुगीन सभ्यताओं में **प्राचीनतम** मानते हुये इसे **'भारतीय ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी'** कहा है। यह

राजस्थान की प्रमुख सभ्यताएँ

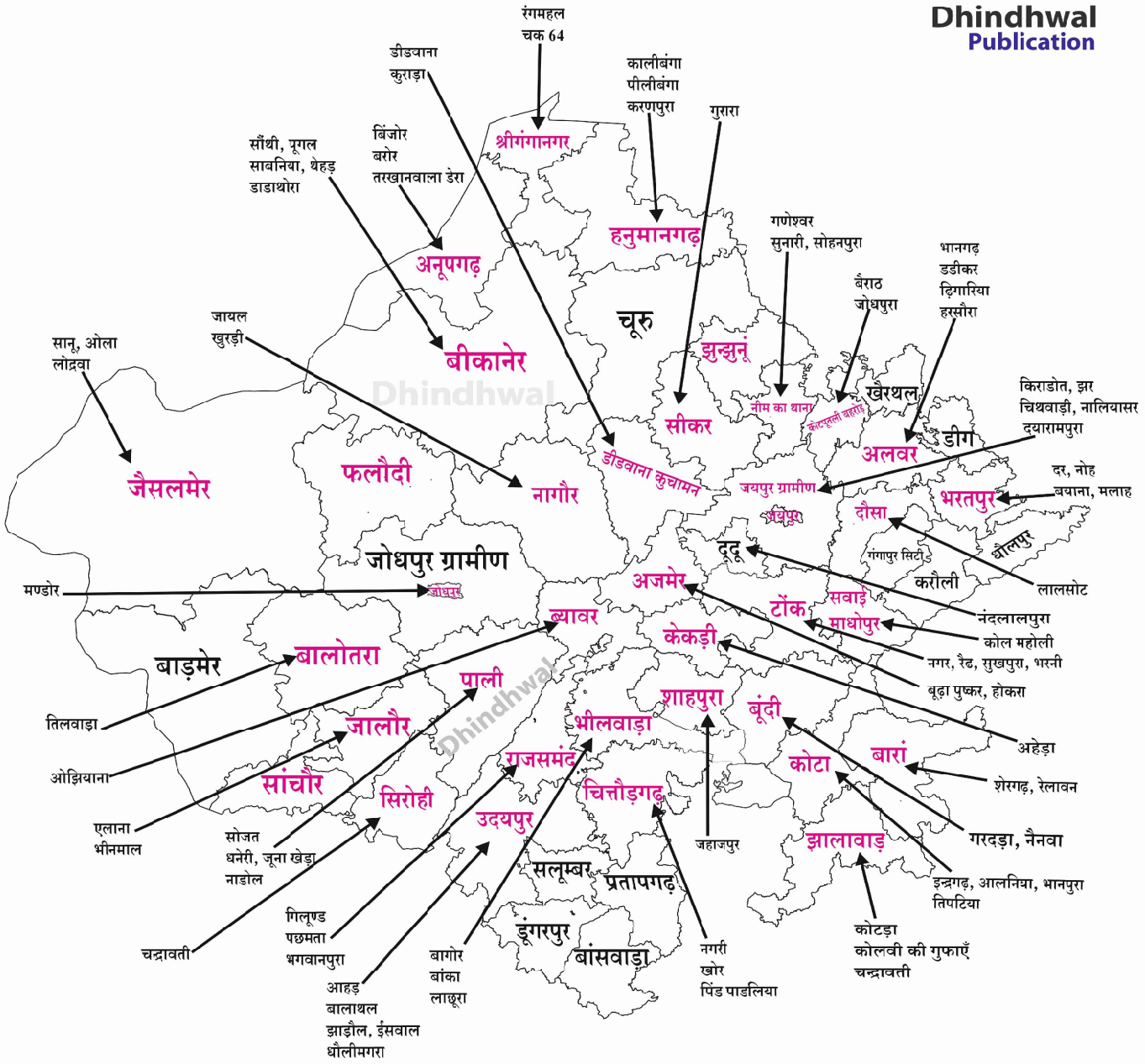

✡ प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न–

1. निम्नलिखित में से किस पुरास्थल के निवासी वस्त्र बुनाई की तकनीक से परिचित थे? **(वरिष्ठ अध्यापक–2023)**
बालाथल / गणेश्वर / बैराठ / कालीबंगा
बैराठ

नोट– यह प्रश्न **डिलीट** होना चाहिए था। क्योंकि बैराठ के अलावा बालाथल से भी कपड़े के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

2. निम्न में से किस सभ्यता को भारत में सभी ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी माना जाता है? **गणेश्वर** **(वरिष्ठ अध्यापक–2023)**
3. गिलूण्ड और भगवानपुरा किस सभ्यता से संबंधित हैं?
आहड़ **(वरिष्ठ अध्यापक–2023)**
4. पुरातात्वविद् नीलरत्न बनर्जी और कैलाशनाथ दीक्षित निम्नलिखित किस पुरास्थल के उत्खनन से संबद्ध रहे हैं?
बैराठ **(वरिष्ठ अध्यापक–2023)**

3 राजस्थान का पौराणिक, ऐतिहासिक स्वरूप एवं जनपद युग

- **राजस्थान में आर्यो का प्रवेश**– भारत में आर्यों का आगमन अनेक वर्षों पहले हुआ। आर्य एक सुसभ्य जाति मानी जाती है आर्यों के भारत में रहने के कारण भारत को 'आर्यावर्त' के नाम से जाना जाता है।
- आर्य जाति धीरे–धीरे सिन्धू, रावी, सतलज और गंगा यमुना के **दोआब क्षेत्रों** से निकल कर सुरक्षित और उपजाऊ मैदानों की खोज में सरस्वती नदी के उपत्यकाओं में प्रविष्ट हुए और वहीं रहने लगे। आर्यों ने 'सरस्वती नदी' के किनारे ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना की। सरस्वती नदी को कालीदास ने 'अन्त : सलीला' कहा है। ऋग्वेद में सरस्वती और दृषद्वती नदियों का वर्णन मिलता है, जो सम्भवतः राजस्थान में बहती थी।
- आर्य सर्वप्रथम राजस्थान के **उत्तरी भाग** में सरस्वती व दृषद्वती नदी के किनारे पर आकर बसे। घोसुण्डी शिलालेख (चित्तौड़) से हमें पता चलता है कि राजस्थान के **इतिहास की शुरूआत** आर्यों के आगमन से ही होती है आर्यों के समय राजस्थान को हम 'ब्रह्मवर्त' के नाम से जानते थे।
- पुरातात्विक स्थल अनूपगढ़ के दूसरे ढेर से व तरखान वाला डेरा (अनूपगढ़) की खुदाई से आर्यकालीन भूरी मिट्टी के बर्तन व अन्य अवशेषों से भी हमें ज्ञात होता है कि **सरस्वती** और **दृषद्वती** के तटीय भागों की प्राचीन बस्तियाँ राजस्थान के पूर्वी भाग और दक्षिणी भागों (दोआब आदि स्थानों की ओर) में आकर बस गए। 'हिस्ट्री ऑफ मेडीवल हिन्दु इण्डिया' नामक पुस्तक में श्री **सी.वी. वैद्य** (चिंतामन विनायक वैद्य) लिखते हैं कि ''पुरातात्त्विक साधनों से हमें पता चलता है कि इस समय भीनमाल, सांचौर तथा सिरोही के आसपास यहाँ महाभारत कालीन **शाल्व जाति** रहा करती थी व कौरवों के पूर्वज जांगल प्रदेश में रहते थे''।

पौराणिक युग

- प्राचीन साहित्य और अभिलेखों में वर्तमान राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के भिन्न–भिन्न नाम मिलते हैं, इनमें मरू, धन्व, जांगल, मत्स्य व शूरसेन आदि हैं। मरू और धन्व दोनों का अर्थ एक ही है और उनका प्रयोग जोधपुर संभाग के मरूस्थल के लिए हुआ है। जोधपुर पहले 'मरू' फिर 'मरूवार' कहलाता था और कालान्तर में इसे 'मारवाड़' कहा जाने लगा।
- मरू– ऋग्वेद सहित पौराणिक ग्रन्थों, रामायण, चरक संहिता, महाभारत एवं वृहत् संहिता में **मरू प्रदेश** का वर्णन आता है। मरू प्रदेश आर्यों का **प्रारम्भिक जनतंत्र** था, जिसमें वर्तमान में बीकानेर, नागौर, डीडवाना–कुचामन, चुरू, गंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा व फलौदी के कुछ भाग सम्मिलित थे। कालांतर में इस क्षेत्र में कुछ विस्तार के साथ **कुरू, मद्र** तथा **जांगल** नामक जनपदों का निर्माण हुआ।
- 'जांगल' शब्द का प्रयोग उस क्षेत्र के लिए किया गया है जहाँ शमी, कैर या पीलू आदि होते हों। बीकानेर, नागौर, जोधपुर व आसपास का क्षेत्र महाभारत काल में 'जांगल देश' कहलाता था। इसकी राजधानी '**अहिछत्रपुर**' थी, जिसका साम्य वर्तमान **नागौर** से किया जाता है।
- कभी–कभी इसका नाम 'कुरू जांगला' और 'माद्रेय जांगला' भी मिलता है। बीकानेर के राजा इसी जांगल देश के स्वामी होने के कारण अपने को 'जांगलधर बादशाह' कहते थे।
- पौराणिक मान्यताओं और जनश्रुतियों के आधार पर राजस्थान में रामायण व महाभारतकालीन घटनाओं का पता चलता है हालांकि इनके कोई सर्वमान्य प्रमाण नहीं मिलते हैं–
- रामायण और महाभारत काल में राजस्थान में मरूप्रदेश, जांगलदेश तथा मत्स्यप्रदेश विद्यमान थे।

☞ **महाभारत** के अनुसार राजस्थान का जांगल देश (बीकानेर) कौरव–पांडव राज्य के अधीन था और मत्स्य राज्य उनका मित्र या अधीनस्थ राज्य था। **(स्रोत–राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, कक्षा–10)**

- पौराणिक उल्लेखों के अनुसार किसी समय यहाँ आज के समान रेगिस्तान नहीं था, अपितु यहाँ 'लवण सागर' नामक खारा समुद्र लहराता था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार जब भगवान राम लंका जाने के लिए वानरों सहित समुद्र के किनारे पहुँचे तो उन्होंने लंका पर चढ़ाई के लिए समुद्र से मार्ग मांगा। समुद्र ने भगवान श्रीराम का अनुरोध नहीं माना तो श्रीराम समुद्र का जल सोखने के लिए 'आग्नेयस्त्र' का प्रयोग करने लगे, जिसे देख समुद्र ने भयभीत होकर भगवान को समुद्र पार करने का उपाय बता दिया। समुद्र ने भगवान से प्रार्थना की कि इस अमोद्य आग्नेयास्त्र का प्रयोग 'द्रुमकुल्य' (लवण सागर का उत्तरी भाग) पर करें, जहाँ दुष्ट आभीर आदि समुद्र का जल अपवित्र करते हैं, भगवान ने वैसा ही किया, गम्भीर गर्जन के साथ समुद्र का पानी सूख गया, जिससे यहाँ समुद्र के स्थान पर **मरूस्थल** हो गया। उस स्थान पर जहाँ आग्नेयास्त्र गिरा, एक विशाल छिद्र हो गया, जिसे विमल जल का स्रोत फूटने लगा। यह स्रोत तीर्थराज पुष्कर कहलाता है।
- समुद्र के इस क्षेत्र से हटने की घटना को ऋग्वेदिक ऋषियों ने अपनी आँखों से देखा था। **ऋग्वेद** के 10वें मण्डल में पूर्व व पश्चिम के दो समुद्रों का स्पष्ट उल्लेख है, जिसका विवरण शतपथ ब्राह्मण में भी मिलता है।

4 राजपूतों की उत्पत्ति

- **हर्षवर्धन की मृत्यु** (647 ई.) के बाद भारत की राजनीतिक एकता जो गुप्तों के समय स्थापित हुई थी, पुनः समाप्त होने लगी। उत्तर भारत में अनेक छोटे–छोटे राज्यों की स्थापना हुई। यह राज्य आपस में संघर्षरत थे। इन संघर्षों के परिणामस्वरूप जो नए राजवंश उभरे वे **राजपूत राजवंश** कहलाते हैं।

❖ **राजपूत काल**– हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) से लेकर **मोहम्मद गौरी** के गुलामों द्वारा दिल्ली पर अधिकार (1206 ई.) तक के काल को **'राजपूत काल'** (700 ई. से 1200 ई.) कहा जाता है।

- **'राजपूत'** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **सातवीं शताब्दी** में मिलता है जो **राजपुत्र** (संस्कृत) शब्द का ही विकृत रूप है। चाणक्य के अर्थशास्त्र, कालिदास एवं बाणभट्ट के नाटकों में **'राजपुत्र'** शब्द का प्रयोग **सामन्तों** के अर्थ में किया गया है।
- **चीनी यात्री ह्वेनसांग** ने अपनी पुस्तक **'सी यू की'** में राजाओं को कहीं क्षत्रिय, कहीं राजपूत लिखा है। मुसलमानों के आक्रमण से पहले यहाँ के सभी शासक **क्षत्रिय** कहलाते थे, बाद में यहाँ के शासकों की जाति के लिए **राजपूत शब्द** प्रयोग किया जाने लगा।
- **डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा** ने राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि ''राजपूत शब्द का प्रयोग नया नहीं है। प्राचीन काल के ग्रन्थों में इसका व्यापक प्रयोग मिलता है। चाणक्य के **'अर्थशास्त्र'**, कालीदास के नाटकों व बाणभट्ट के **'हर्षचरित'** तथा **कादम्बरी** में इस शब्द का प्रयोग किया गया है।''
- चीनी यात्री **ह्वेनसांग** ने भी जो हर्षवर्धन के समय के आया था, राजाओं को कहीं **क्षत्रिय,** कहीं **राजपूत** लिखा है।''

- नोट– **8वीं शताब्दी** तक इस शब्द का प्रयोग **जाति** के लिए नहीं बल्कि **शासक वर्ग** के लिए अथवा कुलीन क्षत्रियों के लिए किया जाता था।

राजपूतों की उत्पत्ति

- राजपूतों की उत्पत्ति का प्रश्न अभी तक **विवादास्पद** बना हुआ है इसके सम्बन्ध में कई मत/सिद्धान्त मिलते हैं। जो निम्न प्रकार है–

❖ **अग्निकुण्ड से उत्पत्ति –**

- चन्दरबदाई ने अपने ग्रन्थ **'पृथ्वीराज रासो'** में राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुंड से बताई है। **आबू पर्वत** पर निवास करने वाले विश्वामित्र, गौतम, अगस्त्य व अन्य ऋषि धार्मिक अनुष्ठान करते थे, तो उसी समय दानव मांस, हड्डियाँ व मलमूत्र डालकर उनके अनुष्ठान को अपवित्र कर देते थे। इन दैत्यों का अन्त करने के लिए **वशिष्ठ मुनि** ने यज्ञ से तीन यौद्धाओं **(प्रतिहार, परमार, चालुक्य)** को उत्पन्न किया। जब ये तीनों भी यज्ञ की रक्षा करने में असफल रहे तो वशिष्ठ ऋषि ने यज्ञ से **चौथा यौद्धा** उत्पन्न किया, जो प्रथम तीन से ज्यादा ताकतवर और हथियार से सुसज्जित था, जिसका नाम **चाहमान (चौहान)** रखा गया। इस यौद्धा ने **आशापुरा माता** को अपनी कुलदेवी मानकर उसके आशीर्वाद से उन दैत्यों को मार भगाया। इस प्रकार राजपूतों का जन्म अग्निकुंड से हुआ, इसलिए यह राजपूत **'अग्निवंशीय'** कहलाते हैं।
- **चन्दबरदाई** ने अपने ग्रन्थ में राजपूतों की **36 शाखाओं** का वर्णन किया है।

राजपूतों की उत्पत्ति

- **अग्निकुण्ड से उत्पत्ति**
  - पृथ्वीराज रासो
  - भाटों ने
  - मुहणौत नैणसी
- **ब्राह्मणों से**
  - डॉ. भंडारकर
  - गोपीनाथ शर्मा
  - मंडोर शिलालेख
  - पिंगल सूत्रकृति
- **विदेशियों की संतान**
  - कर्नल जेम्स टॉड
- **सूर्यवंशी/चन्द्रवंशी**
  - अग्निपुराण
  - डॉ.दशरथ शर्मा
  - हर्षनाथ शिलालेख
  - हम्मीर महाकाव्य
- **वैदिक आर्यों की संतान**
  - मनुस्मृति
  - गौरीशंकर ओझा
- **कुषाण**
  - विलियम क्रूक
- **हूण**
  - वी.ए. स्मिथ
- **मिश्रित**
  - डी.पी चट्टोपाध्याय

5 प्रतिहार वंश (गुर्जर–प्रतिहार)

- गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन **छठी से बारहवीं** शताब्दी तक रहा है। **आठवीं से दसवीं शताब्दी** के दौरान राजस्थान में गुर्जर प्रतिहार वंश शक्तिशाली रहा। इस वंश का शासन राजस्थान ही नहीं बल्कि **पूरे उत्तरी भारत** में फैला हुआ था। प्रारम्भ में इनकी शक्ति के मुख्य केन्द्र **मण्डोर व भीनमाल** थे। राजस्थान में गुर्जर प्रतिहारों के **दो प्रमुख केन्द्र** (**मण्डोर व भीनमाल**) रहे हैं।
- बाद में **उज्जैन** तथा **कन्नौज** भी गुर्जर प्रतिहारों की शक्ति के केन्द्र रहे।
- **'गुर्जर–प्रतिहार'** शब्द दो शब्दों का योग है **गुर्जर शब्द**– गुर्जरात्रा प्रदेश (मरू प्रदेश का एक अंश) का प्रतीक है। **प्रतिहार शब्द**– किसी जाति या पद का प्रतीक है। (प्रतिहार– जो राजा के महलों के बाहर रक्षक का कार्य करते थे।) इस प्रकार प्रतिहार जाति द्वारा **गुर्जरात्रा प्रदेश** शासित करने के कारण गुर्जर प्रतिहार वंश का उद्भव हुआ।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** के अनुसार– ''छठी शताब्दी के मध्य तक राजस्थान नाम का न तो कोई राज्य था न कोई ईकाई। उस समय मरूप्रदेश का एक भाग **गुर्जरात्र प्रदेश** कहलाता था, गुर्जरात्र प्रदेश पर प्रतिहार शासन कर रहे थे, इसलिए उन्हें **गुर्जर–प्रतिहार** नाम से सम्बोधित किया जाने लगा।''
- बादामी के चालुक्य नरेश **पुल्केशियन द्वितीय** के **'ऐहोल अभिलेख'** में **गुर्जर जाति का सर्वप्रथम** उल्लेख मिलता है।
- **बाणभट्ट** ने अपनी पुस्तक **'हर्षचरित'** में गुर्जरों का वर्णन किया है। **हेनसांग** (चीनी यात्री) ने गुर्जर प्रदेश की राजधानी भीनमाल (**पीलामोलो**) को बताया है अपनी पुस्तक **'सी.यू.की.'** में गुर्जर प्रतिहार शब्द का संबोधन किया है।
- **डॉ. आर.सी. (रमेशचन्द्र) मजूमदार**– 'प्रतिहार शब्द का प्रयोग मंडोर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को **लक्ष्मण का वंशज** मानते हैं, लक्ष्मण भगवान राम की सेवा में एक प्रतिहार का कार्य करते थे, इसलिए वे लोग प्रतिहार कहलाए, कालान्तर में गुर्जरात्र प्रदेश पर शासन करने से **गुर्जर–प्रतिहार** कहलाए।'
- प्रसिद्ध इतिहासकार **रमेशचन्द्र मजूमदार** के अनुसार गुर्जर–प्रतिहारों ने छठी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम किया।
- **राष्ट्रकुटों** और **पालवंशीय राजाओं** के शिलालेख में तथा **अरब यात्रियों के वृत्तान्त** में प्रतिहारों को **'गुर्जर'** शब्द के साथ जोड़कर सम्बोधित किया गया है। **चन्देल वंश** के शिलालेखों में भी 'गुर्जर प्रतिहार' शब्द का उल्लेख मिलता है।
- **बाउक अभिलेख** (**मंडोर का शिलालेख 837 ई.**) के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवासन मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था।
- पम्पा कृत **विक्रमार्जुन विजय** में प्रतिहार महिपाल को '**गुर्जर राज**' कहा गया है।
- **डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा** ने प्रतिहारों को जाति न मानकर पद से सम्बन्धित माना है। इस पद से उस व्यक्ति का बोध होता है जो राजदरबार या महल के **द्वार–रक्षक** के रूप में सेवा करे।
- शिलालेखों में **नागभट्ट प्रथम** को **'राम का प्रतिहार'** लिखा गया है।

☞ **गुर्जर–प्रतिहार शैली**– 8वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण की जिस शैली का विकास हुआ, वह शैली **'महामारू शैली/गुर्जर–प्रतिहार शैली'** कहलाई। इस शैली में बने अधिकांश मंदिर **'सूर्य या विष्णु'** को समर्पित हैं। **10वीं** व **11वीं शताब्दी** में गुर्जर प्रतिहार शैली का पूर्ण विकास देखने का मिलता है।

गुर्जर–प्रतिहारों की उत्पत्ति

- नीलकुण्ड, देवली, राधनपुर (गुजरात), करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को **'गुर्जर प्रतिहार'** कहा है।
- मिहिरभोज के **ग्वालियर अभिलेख** में प्रतिहार शासक **'वत्सराज'** को विशुद्ध क्षत्रिय बताया है।
- **अरब यात्री**– अरब यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्ज या अल गुर्जर'** भी कहा है।
- **अलमसूदी**– 'अल मसूदी' ने प्रतिहारों को **'अल गुर्जर'** तथा प्रतिहार राजा को **'बोरा'** कहकर पुकारा है।
- **मिस्टर जैक्सन**– ने **बम्बई** गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है।
- **डॉ. गौरीशंकर ओझा**– ने प्रतिहारों को **क्षत्रिय** बताया है।
- **जॉर्ज कैनेडी** (इंग्लैण्ड)– ने इन्हें **'ईरानी मूल'** के बताया है।
- **डॉ. भण्डारकर**– ने इन्हें **'विदेशी'** बताया है।
- **कनिघंम**– ने इन्हें **'कुषाणवंशी'** कहा है।
- **पाश्चात्य इतिहासकारों** ने प्रतिहारों को **'गुर्जर'** माना है जो कि विदेशी **हूणों के साथ** भारत आए।
- **स्मिथ स्टेनफोनी**– ने इन्हें **'हूण वंशी'** कहा है।
- प्रतिहारों ने स्वयं को राम के भाई **'लक्ष्मण का वंशज'** माना है।

6 चौहान राजवंश

- **चौहानों की उत्पत्ति–**
चौहानों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में इतिहासकार एकमत नहीं है इसलिए चौहानों के वंश के सम्बन्ध में अब तक कोई भी **सर्वमान्य मत** स्थिर नहीं हो सका है। चौहानों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रमुख मत निम्न प्रकार है –
- **अग्निवंशीय**– पृथ्वीराज रासो, मूहणौत नैणसी, सूर्यमल्ल मिश्रण। **चन्दरबरदाई** (पृथ्वीराज रासो), **मूहणौत नैणसी** व **सूर्यमल्ल मिश्रण** चौहानों की उत्पत्ति वशिष्ठ ऋषि द्वारा आबू के अग्निकुण्ड से मानते हैं।
- **सूर्यवंशीय**– **जयानक** (पृथ्वीराज विजय), **नयनचन्द्र सूरी** (हम्मीर महाकाव्य), **जोधराज** (हम्मीर रासो), **नरपति नाल्ह** (बीसलदेव रासो) एवं **डॉ. गौरी शंकर हीराचंद ओझा** चौहानों को सूर्यवंशी मानते हैं।
- **विदेशी**– **कर्नल जेम्स टॉड, वी.ए. स्मिथ** व **विलियम क्रूक** जैसे विद्वान चौहानों के रस्मों रिवाज के आधार पर उन्हें विदेशी मानते हैं। कर्नल टॉड ने चौहानों को अग्निवंशीय स्वीकार कर इन्हें विदेशी (मध्य एशिया से आए हुए) बताया गया है।
- **ब्राह्मणवंशीय**– **जान कवि** (कायम खाँ रासो), **दशरथ शर्मा, डॉ. भंडारकर, बिजोलिया शिलालेख,** चन्द्रावती का लेख।
- **डॉ. दशरथ शर्मा** ने बिजोलिया शिलालेख के आधार पर चौहानों को ब्राह्मण माना है। चन्द्रावती के लेख में भी चौहानों को ब्राह्मणवंशीय माना है।
- कायम खाँ रासो में भी चौहानों की उत्पत्ति **वत्स** से बतायी गई है। इस कथन की पुष्टि सुण्डा तथा आबू अभिलेख से भी होती है।
- **चन्द्रवंशीय**– हाँसी शिलालेख व अचलेश्वर शिलालेख आबू
- **इन्द्रवंशीय**– रायपाल के सेवाड़ी (पाली) के शिलालेख में चौहानों को **'इन्द्र का वंशज'** बताते हुए इन्द्रवंशी बताया है।
- **खज जाति** से– **डॉ. भंडारकर**
- **सांभर झील**– **पं. रामकरण आसोपा** के अनुसार चौहान सांभर झील के चारों ओर रहने के कारण **'चाहुमान'** कहलाए।
- **चौहानों का मूल स्थान**– चौहानों का मूल स्थान **सपादलक्ष** (सांभर झील के आस–पास) का भू–भाग माना जाता है। पृथ्वीराज विजय, शब्द कल्पद्रुम कोष तथा लाडनूं लेख में चौहानों का निवास स्थान जांगल देश, सपादलक्ष, अहिछत्रपुर आदि उल्लेखित है। इससे स्पष्ट होता है कि चौहान जांगल देश के रहने वाले थे और उनके राज्यों का प्रमुख भाग सपादलक्ष था उन्हे इसलिए **'सपादलक्षीय नृपति'** भी कहते थे। इनकी प्रारम्भिक राजधानी अहिछत्रपुर (नागौर) थी, जब उनके राज्य का विस्तार हुआ तो राज्य की राजधानी **शाकम्भरी** (सांभर) हो गई बाद में इनकी

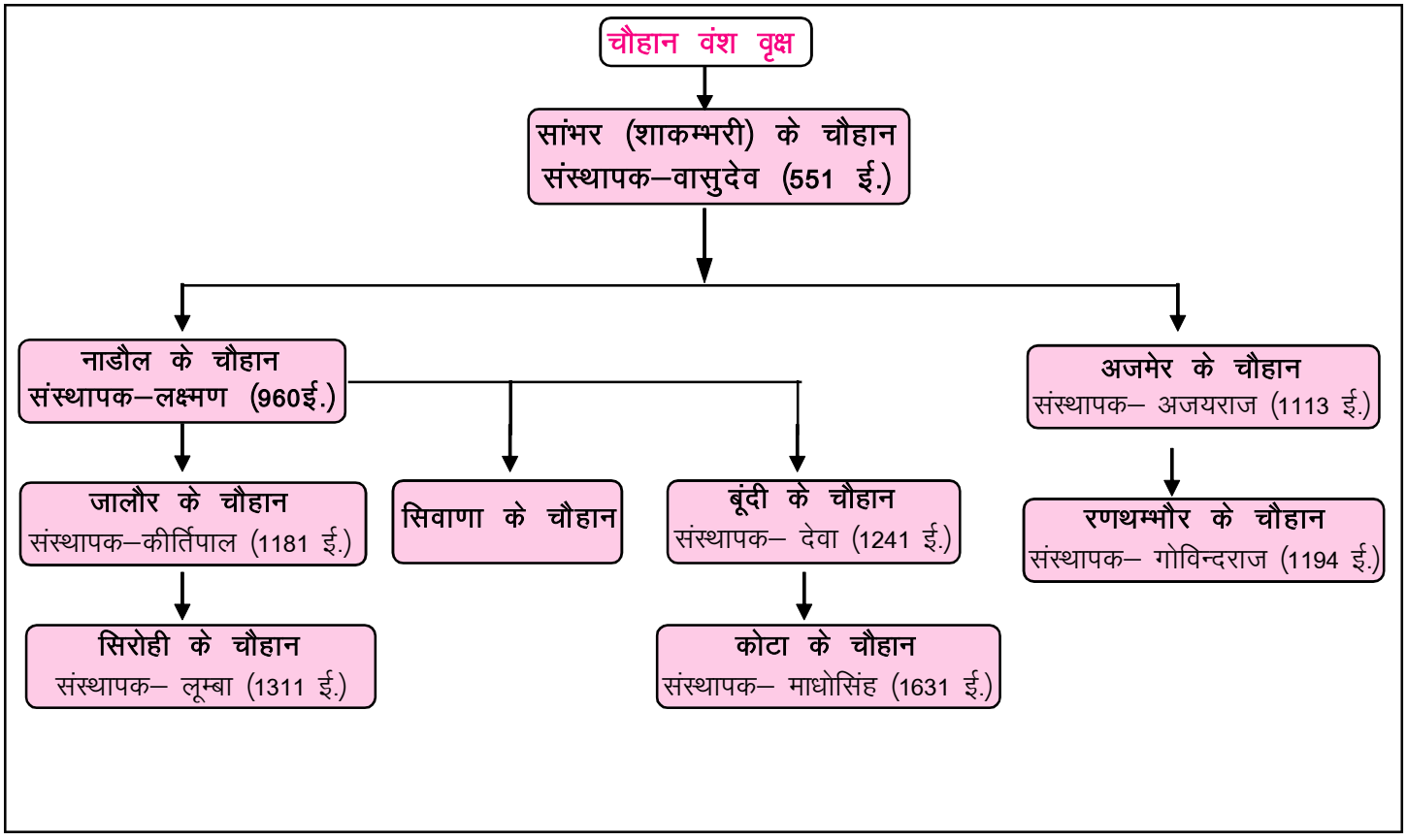

7 मेवाड़ का गुहिल राजवंश

मेवाड़ का इतिहास		
गुहिल वंश/सिसोदिया वंश (566 ई.–1947 ई.)		
1	गुहिल	566 ई.
2	शील	
3	अपराजित	
4	नागादिव्य	727 ई. में भीलों द्वारा हत्या
5	रावल बप्पा	734–753 ई.
6	रावल खुमाण प्रथम	753–773 ई.
7	मत्तट	773–793 ई.
8	भर्तृभट्ट	793–813 ई.
9	रावल सिंह	813–828 ई.
10	खुमाण सिंह द्वितीय	828–853 ई.
11	महायक	853–878 ई.
12	खुमाण तृतीय	878–903 ई.
13	भर्तृभट्ट द्वितीय	903–951 ई.
14	अल्लट	951–971 ई.
15	नरवाहन	971–973 ई.
16	शालिवाहन	973–977 ई.
17	शक्ति कुमार	977–993 ई.
18	अम्बा प्रसाद	993–1007 ई.
19	शुची वर्मा	1007–1021 ई.
20	नर वर्मा	1021–1035 ई.
21	कीर्ति वर्मा	1035–1051 ई.
22	योगराज	1051–1068 ई.
23	वैरट	1068–1088 ई.
24	हंसपाल	1088–1103 ई.
25	वैरी सिंह	1103–1107 ई.
26	विजय सिंह	1107–1127 ई.
27	अरि सिंह	1127–1138 ई.
28	चौड़ सिंह	1138–1148 ई.
29	विक्रम सिंह	1148–1158 ई.
30	रण सिंह (कर्ण सिंह)	1158–1168 ई.
31	क्षेम सिंह	1168–1172 ई.
32	सामंत सिंह	1172–1179 ई.
33	कुमार सिंह	1179–1191 ई.
34	मंथन सिंह	1191–1211 ई.
35	पद्म सिंह	1211–1213 ई.
36	जैत्र सिंह	1213–1253 ई.
37	तेज सिंह	1253–1267 ई.
38	रावल समर सिंह	1267–1302 ई.
39	रावल रतन सिंह	1302–1303 ई.
40	महाराणा हम्मीर सिंह	1326–1364 ई.
41	महाराणा क्षेत्र सिंह	1364–1382 ई.
42	महाराणा लक्ष सिंह	1382–1421 ई.
43	महाराणा मोकल	1421–1433 ई.
44	महाराणा कुम्भा	1433–1468 ई.
45	महाराणा उदा	1468–1473 ई.
46	महाराणा रायमल	1473–1509 ई.
47	महाराणा साँगा	1509–1528 ई.
48	महाराणा रतन सिंह-II	1528–1531 ई.
49	महाराणा विक्रमादित्य	1531–1536 ई.
50	महाराणा उदय सिंह	1537–1572 ई.
51	महाराणा प्रताप	1572–1597 ई.
52	महाराणा अमर सिंह	1597–1620 ई.
53	महाराणा कर्ण सिंह	1620–1628 ई.
54	महाराणा जगत सिह	1628–1652 ई.
55	महाराणा राजसिंह	1652–1680 ई.
56	महाराणा जयसिंह	1680–1698 ई.
57	महाराणा अमर सिंह–II	1698–1710 ई.
58	महाराणा संग्राम सिह-II	1710–1734 ई.
59	महाराणा जगत सिंह-II	1734–1751 ई.
60	महाराणा प्रताप सिंह-II	1751–1754 ई.
61	महाराणा राजसिंह-II	1754–1761 ई.
62	महाराणा अरिसिंह-II	1761–1773 ई.
63	महाराणा हमीर सिह-II	1773–1778 ई.
64	महाराणा भीम सिंह	1778–1828 ई.
65	महाराणा जवान सिंह	1828–1838 ई.
66	महाराणा सरदार सिंह	1838–1842 ई.
67	महाराणा स्वरूप सिंह	1842–1861 ई.
68	महाराणा शंभू सिंह	1861–1874 ई.
69	महाराणा सज्जन सिंह	1874–1884 ई.
70	महाराणा फतह सिंह	1884–1930 ई.
71	महाराणा भूपाल सिंह	1930–1955 ई.

निकट ही **'कमलनाथ पर्वत'** के निकट ही **'आवरगढ़'** में अपनी अस्थाई राजधानी बनाई।

- अकबर ने **महमूद खाँ** को युद्ध के बाद जानकारी लेने भेजा था।
- मानसिंह युद्ध के बाद अकबर के पास शाही दरबार में पहुँचा तो **अकबर नाराज** हो गया क्योंकि मानसिंह ने, न तो प्रताप को पूरी तरह से हराया और न ही बंदी बनाकर ला सका। अकबर ने नाराज होकर मानसिंह व आसफ खाँ की **ड्योढ़ी बंद** कर दी।

- **युद्ध निर्णय–** इस युद्ध में दोनों पक्षों में अपनी–अपनी विजय को माना है। **राजप्रशस्ति, राजविलास व जगदीश मंदिर प्रशस्ति** के अनुसार इस युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय हुई थी। फारसी इतिहासकार इसे अकबर की विजय मानते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि मानसिंह की सेना प्रताप को मारने या बंदी बनाने में असफल रही और न ही कुम्भलगढ़ किले को अपने अधिकार में ले पायी।

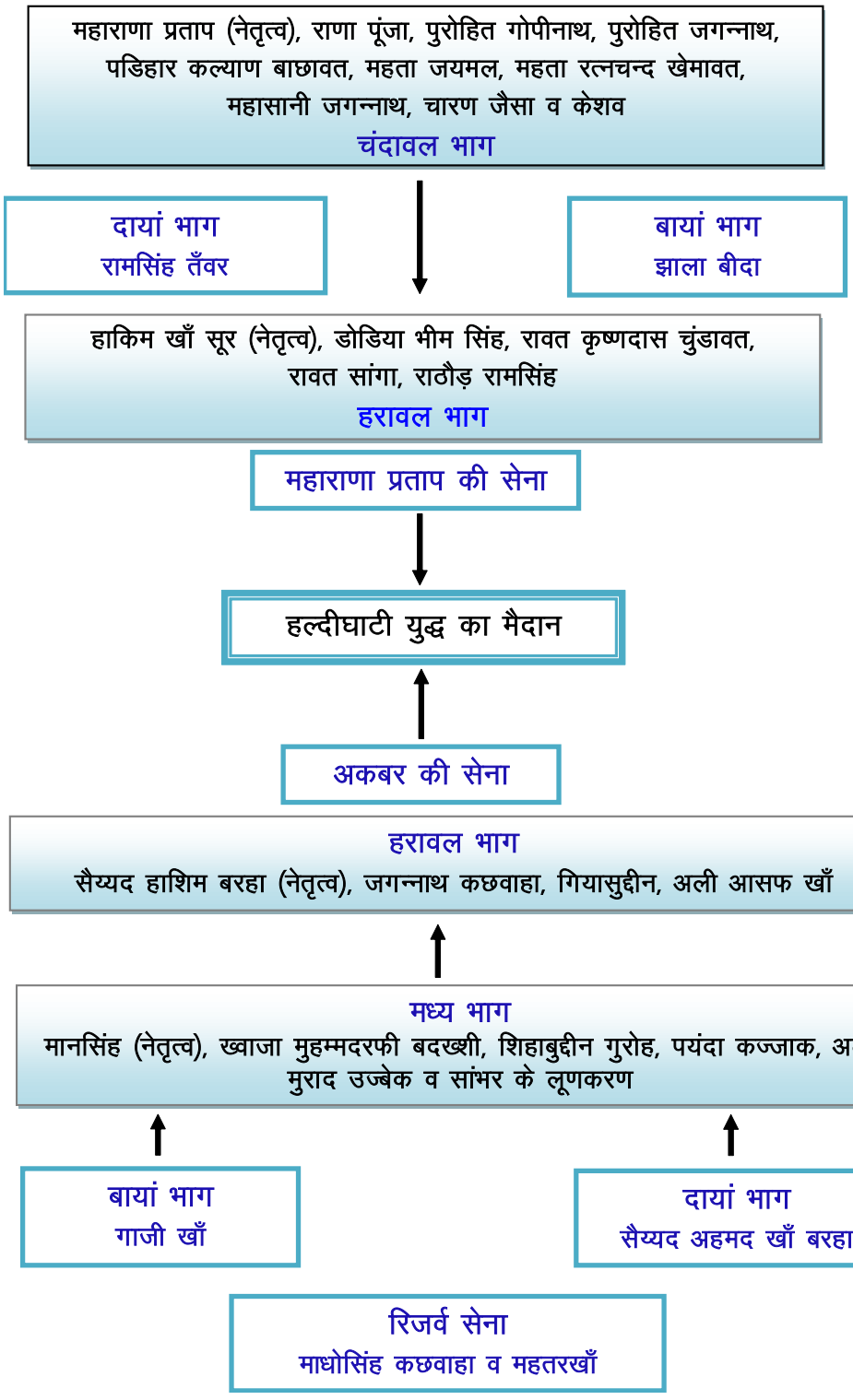

था। महाराणा फतेहसिंह भी दरबार में शामिल होने के लिए दिल्ली गये परन्तु दरबार में हाजिर हुए बिना, स्टेशन पर ही सम्राट से मिलकर लौट आये।

- **बिजोलिया किसान आन्दोलन**– इनके समय ऊपरमाल की जागीर में यह किसान आन्दोलन हुआ। जागीरदार के शोषण से परेशान किसानों ने आन्दोलन किया। किसानों के प्रतिनिधियों ने बार–बार महाराणा तक जागीरदार के अत्याचार व शोषण की शिकायतें की पर महाराणा ने किसानों को कोई राहत प्रदान नहीं की।
- **कुँवर भूपालसिंह को खिताब**– जॉर्ज पंचम के जन्मदिन के अवसर पर 1919 ई. में ब्रिटिश सरकार ने महाराणा के पुत्र कुँवर भूपालसिंह को **KCIE** का खिताब दिया। **पहली बार** राजपूताना के **किसी राजकुमार को** यह खिताब दिया गया था।
- 1921 ई. में **प्रिन्स ऑफ वेल्स** के उदयपुर आगमन पर महाराणा ने उससे मुलाकात नहीं की और कहा कि वे बीमार हैं।
- **महाराणा फतेहसिंह** के कार्यों से अंग्रेज सरकार खुश नहीं थी। अतः 1921 में इनसे राजकार्य का अधिकार लेकर **कुँवर भोपालसिंह** को सौंप दिया।

❖ महाराणा भूपालसिंह (1930–1955 ई.)–

- मेवाड़ के सिसोदिया वंश के अंतिम शासक थे। राजस्थान के एकीकरण के दौरान इन्हे 18 अप्रैल 1948 ई. को राजस्थान का **महाराज प्रमुख** बनाया गया।
- 1955 में इनकी **'महाराज प्रमुख'** के पद पर रहते हुए मृत्यु हो गई।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. 1303 ई. में सेनानायक गोरा और बादल किसकी सेना से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए?
   अलाउद्दीन खिलजी **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–A (संस्कृत शिक्षा) 2023)**
2. मुगल–मारवाड़ संघर्ष छिड़ने पर मेवाड़ के किस महाराणा ने राठौड़ों का साथ दिया? महाराणा जगतसिंह/महाराणा जयसिंह/महाराणा राजसिंह/ महाराणा कर्णसिंह
   महाराणा राजसिंह **(वरिष्ठ अध्य. ग्रुप– B (संस्कृत शिक्षा) 2023)**
3. खानवा के युद्ध में निम्न में से किसने राणा सांगा का पक्ष बदल कर बाबर का साथ दिया? झाला अज्जा/सलहदी तंवर/भोपत राय/ मणिकचन्द्र
   सलहदी तंवर **(वरिष्ठ अध्य. ग्रुप– B 2023)**
4. मेवाड़ राज घराने के अन्त्येष्टि स्थल का नाम क्या है?
   कागा/गेटोर /महासत्य/बड़ा बाग
   महासत्य **(CET Graduation- 2023)**
5. महाराणा प्रताप ने चावण्ड को अपनी राजधानी कब बनाया था?
   1580/1576/1582/1585
   1585 **(बेसिक कम्प्यूटर अनुदेशक– 2022)(CET Grad- 2023)**
6. निम्नलिखित युद्धों में से, उनके लड़े जाने के वर्ष के अनुसार पहले से आखिरी तक सही क्रम को चुनिए –
   (i) गागरोन का युद्ध (ii) सारंगपुर का युद्ध
   (iii) बयाना का युद्ध (iv) मावली का युद्ध
   सही विकल्प चुनें –
   (1) (ii), (iv), (iii), (i) (2) (ii), (i), (iii), (iv)
   (3) (i), (ii), (iii), (iv) (4) (i), (iii), (ii), (iv)
   (ii), (i), (iii), (iv) **(CET Graduation- 2023)**
7. निम्नलिखित में से कौन सा (युद्ध–वर्ष) सही सुमेलित नहीं है?
   खातौली का युद्ध – 1517 /खानवा का युद्ध – 1527/ सामेल का युद्ध – 1562 /हरमाड़ा का युद्ध – 1557
   सामेल का युद्ध – 1562 **(CET Graduation- 2023)**
8. गागरोण का युद्ध किसके मध्य लड़ा गया?
   महमूद खलजी–II और महाराणा सांगा **(CET 10+2 2023)** **(REET L- 2 (Urdu) 2023)**
9. कृष्णा कुमारी किस राज्य की राजकुमारी थी जिसके विवाह के विवाद ने राजपूताना में राजनीतिक उथल–पुथल उत्पन्न कर दी?
   उदयपुर **(REET L- 1 2023)**
10. मालवा के किस शासक को परास्त कर कुंभा ने कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाया था?
    महमूद खिलजी प्रथम **(REET L- 2 (sindhi) 2023)**
11. पन्नाधाय ने ..... के जीवन को बचाया था।
    राणा उदयसिंह **(REET L- 2 (Math) 2023)**
12. कृष्णा कुमारी किस राज्य की राजकुमारी थी?
    मेवाड़ **(REET L- 2 (English) 2023)**
13. आहड़ के वराह मन्दिर का निर्माण किसने करवाया?
    अल्लट **(REET L- 2 (Sanskrit) 2023)**
14. निम्नलिखित में से किस राजपूत शासक ने मुगल बादशाह के खिलाफ विद्रोह किया?
    बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह /मारवाड़ के महाराजा जसवंतसिंह
    मेवाड़ के महाराणा राजसिंह /आमेर के महाराजा बिशनसिंह
    मेवाड़ के महाराणा राजसिंह **(सरंक्षण अधिकारी– 2023)**
15. निम्नांकित में से राणा सांगा के समय मालवा का शासक कौन था? मेदिनी राय/मुजफ्फर/महमूद खिलजी I/महमूद खिलजी II
    महमूद खिलजी II **(PTI Grade-II 2023)**
16. हल्दीघाटी के युद्ध को 'गोगुन्दा का युद्ध' किसने कहा है?
    अब्दुल कादिर बदायूंनी **(PTI Grade-II 2023)**
17. निम्नांकित में से कौन सा युद्ध महाराणा सांगा और बाबर के मध्य हुआ था? चंदेरी का युद्ध/खानवा का युद्ध/पानीपत का युद्ध/तराईन का युद्ध
    खानवा का युद्ध **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–A - 2023)**

8 आमेर का कच्छवाहा राजवंश

ढूँढाड़ व कछवाहा वंश से सम्बन्धित कुछ तथ्य–

- प्राचीन काल में **ढूंढ नदी** दौसा के आसपास बहती थी, यह नदी जिस क्षेत्र में बहती थी वह क्षेत्र **ढूँढाड़** कहलाता था।
- एक मान्यता के अनुसार **अजमेर** के प्रतापी शासक **बीसलदेव चौहान** ने दौसा क्षेत्र में अपने शत्रुओं को पराजित किया और ढूंढ़–ढूंढ़ कर उनका संहार किया, इस कारण कालान्तर में इसका नाम **'ढूँढाड़'** पड़ा।

- **सूर्यमल्ल मिश्रण** के अनुसार **'कूर्म'** नामक रघुवंशी शासक की संतति होने से ये कूर्मवंशीय शासक कहलाने लगे और साधारण भाषा में कछवाहा कहलाने लगे। **(स्रोत– राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा–10)**
- **डॉ. ओझा** की मान्यता है कि इनका मूल पुरूष **'कच्छवाहा'** था, जिससे इन्हें कच्छवाहा कहा जाने लगा।
- ढूँढ़ाड़ क्षेत्र में प्राचीनकाल में **मीणाओं** का राज्य था, मीणाओं को हराकर बड़गुर्जरों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया, प्रथम राजधानी **दौसा** को बनाया।
- **नरवर** (ग्वालियर, एमपी) के जंगलों में सीतामाता ने अपना जीवन व्यतीत किया था, उन्हीं सीतामाता के 2 पुत्र लव व कुश थे। कुश के वंशज कछवाहा कहलाए। कछवाहा नरेश भी स्वयं को भगवान श्रीराम के पुत्र **'कुश की संतान'** मानते हैं।
- ग्वालियर के **सास बहु देवालय** (सहस्रबाहु) में एक 1093 ई. का अभिलेख मिला है जो कछवाहा वंश के **'महिपाल'** का है।
- इसी महिपाल के वंशज **'सोढ़ देव/सोढा सिंह'** के तेजकरण नामक पुत्र हुआ। जो अत्यधिक सुन्दर होने के कारण **'दुलहराय/धौलाराय'** के नाम से जाना गया।
- एक बार **दुलहराय** अपने सैनिकों के साथ **दौसा** से होकर गुजरा तो दौसा के शासक ने वहाँ उत्पात मचाने वाले बड़गुर्जरों से छुटकारा दिलाने की प्रार्थना की। दुलहराय ने दौसा के **बड़गुर्जरों** को पराजित कर **नवीन राज्य** स्थापित किया।
- **मोरागढ़** (दौसा) के चौहान शासक **'राला हंसी/रालणसी'** ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री **'सुजान कंवर'** की शादी दुलहराय से कर दी। चौहान राजा के पुत्र नहीं था तो दुलहराय को दहेज में **'दौसा राज्य'** दे दिया। दुलहराय ने अपने पिता सोढ़ देव को नरवर से दौसा बुला लिया व विधिवत राज्याभिषेक किया।
- 1137 ई. के लगभग **दुलहराय** ने **दौसा** को अपनी प्रारम्भिक राजधानी बनाते हुए **राजस्थान में कछवाहा वंश की नींव रखी।**
- इस प्रकार स्पष्ट है कि ढूँढ़ाड़ के कछवाहा शासक ग्वालियर से यहाँ आए थे और वे **नरवर** के कछवाहा राजवंश की एक शाखा थे। कछवाहा प्रारंभ में चौहानों के सामंत थे।
- **आमेर शिलालेख 1612 ई.** में कछवाहा राजवंश के शासकों को **'रघुवंश तिलक'** कहा गया है।
- **राजचिह्न**– जयपुर रियासत का झंडा **पंचरंगा,** झंडे के बीच में **सूर्य की आकृति** बनी है। सबसे ऊपर **राधा गोविन्द का चित्र** है।
- नीचे राज्य का मूलमंत्र लिखा होता है– **"यतो धर्मस्ततो जयः"।**
- आमेर के शासक **मानसिंह प्रथम** ने 1580 ई. में काबूल में 5 अलग–अलग कबीलों को हराया। उसके बाद से **मानसिंह** ने आमेर राज्य के लिए **पंचरंगा ध्वज** अपनाया। इससे पहले आमेर राज्य का सफेद रंग का राजकीय ध्वज था। जिस पर कचनार का पेड़ अंकित था।
- **श्री दीवान बचनात**– जयपुर रियासत के आदेशों का प्रारम्भ इन शब्दों से होता था। भगवान **गोविन्द देवजी** को जयपुर का स्वामी माना जाता है।
- आमेर के कछवाहा वंश की राजधानियों का क्रम– **दौसा, जमवा रामगढ़, खोह, आमेर, जयपुर।**

❖ दुलहराय/धौलाराय – (1137–1170 ई.)

- मूल नाम– **तेजकरण।** पिता– सोढ़ा सिंह कछवाहा
- पत्नी– **सुजान कंवर** (चौहान) दूसरी पत्नी– **मारूनी** (अजमेर)
- प्रारम्भिक राजधानी– **दौसा** पुत्र– **कोकिलदेव।**
- दौसा में राज्य स्थापित करने के बाद दुलहराय ने **'मांची/मांच'** (जयपुर ग्रामीण) के मीणाओं को हरा कर अधिकार कर मांची का नाम **'रामगढ़'** कर दिया। यहीं पर एक **नया दुर्ग** बनवाया गया। नाम अपने आदि पूर्वज राम के नाम पर **रामगढ़** रखा।
- इतिहासकार **डॉ. जदुनाथ सरकार** का मत है कि दुलहराय द्वारा माची का नाम रामगढ़ रखना इस तथ्य का परिचायक है कि वह स्वयं को भगवान **श्रीराम का वंशज** मानता था।
- इन्होनें रामगढ़ में **जमुवाय माता का मंदिर** (कछवाहा राजवंश की कुल देवी) बनवाया।
- **खोह/खोह गंग** (आमेर) के शासक **आलम सिंह** (मीणा) को हराया। गैता मीणा से **गैटोर** व झोटा मीणा से **झोटवाड़ा** का क्षेत्र छीनकर अपने राज्य में मिला लिया।
- दुलहराय ने अजमेर की राजकुमारी **मारूनी** से विवाह किया, एक दिन दुलहराय अपनी पत्नी मारूनी के साथ **जमुवाय माता के दर्शन** करके लौट रहा था। रास्ते में **मीणाओं ने आक्रमण** कर

9 मारवाड़ का राठौड़ राजवंश

क्र.सं.	राजवंश	शासनकाल
1	राव सीहा	1240–1273 ई.
2	राव आस्थान	1273–1291 ई.
3	राव धुहड़	1291–1309 ई.
4	राव रायपाल	1309–1313 ई.
5	राव कनकपाल	1313–1323 ई.
6	राव जालणसी	1323–1328 ई.
7	राव छाड़ा जी	1328–1344 ई.
8	राव तीड़ा जी	1344–1357 ई.
9	राव सलखा	1357–1374 ई.
10	राव मल्लीनाथ	
11	राव वीरमदेव	1374–1383 ई.
12	राव चूण्डा जी	1394–1423 ई.
13	राव काना जी	1423–1424 ई.
14	राव सत्ता जी	1424–1427 ई.
15	राव रिड़मल/रणमल्ल	1427–1438 ई.
16	राव जोधा	1438–1489 ई.
17	राव सातलदेव	1489–1492 ई.
18	राव सुजा	1492–1515 ई.
19	राव गंगा	1515–1532 ई.
20	राव मालदेव	1532–1562 ई.
21	राव चन्द्रसेन	1562–1581 ई.
22	खालसा घोषित	
23	मोटा राजा उदयसिंह	1583–1595 ई.
24	शूर सिंह	1595–1619 ई.
25	गजसिंह	1619–1638 ई.
26	जसवंत सिंह प्रथम	1638–1678 ई.
27	अजीतसिंह	1707–1724 ई.
28	अभयसिंह	1724–1749 ई.
29	रामसिंह	1749–1750 ई.
30	बख्त सिंह	1750–1752 ई.
31	विजयसिंह	1752–1793 ई.
32	महाराजा भीमसिंह	1793–1803 ई.
33	महाराजा मानसिंह	1803–1843 ई.
34	महाराजा तख्त सिंह	1843–1873 ई.
35	महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय	1873–1895 ई.
36	महाराजा सरदार सिंह	1895–1911 ई.
37	महाराजा सुमेर सिंह	1911–1918 ई.
38	महाराजा उम्मेद सिंह	1918–1947 ई.
39	महाराजा हनुवंत सिंह	1947–1949 ई.

राठौड़ वंश

- प्राचीन काल में **सतलज नदी** से समुद्र तक फैली समस्त भूमिको मारवाड़/मरूदेश कहा जाता था।
- **मारवाड़ क्षेत्र**– अरावली पर्वतमाला के पश्चिम का क्षेत्र मुख्यतः जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, बीकानेर, सांचौर, जालौर, नागौर, डीडवाना–कुचामन व पाली के आस–पास का क्षेत्र।
- **राठौड़** शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के **'राष्ट्रकूट'** शब्द से हुई है। राष्ट्रकूट शब्द का प्राकृत रूप **'रट्टऊड़'** है जिससे **'राडउड'** या **'राठौड़'** बना है।

राठौड़ों की उत्पत्ति

- राठौड़ों की उत्पत्ति का विषय काफी विवादास्पद है। इसके सम्बन्ध में कई मत प्रचलित है जो निम्न प्रकार है–
- **राज रत्नाकर** तथा **भाटों** की पोथियों के अनुसार राठौड़ **हिरण्यकश्यप की संतान** है।
- **दयालदास** ने अपनी ख्यात में इन्हें **सूर्यवंशी** बताते हुए ब्राह्मण वंश में पैदा होने वाले **भल्लराव की संतान** माना है। भल्लराव ने **रोटेश्वरी देवी** के नाम पर अपने पुत्र का नाम **'रठवर'** रखा। इसी के वंशधर **'रठवर/राठौड़'** कहलाए।
- **मुहणौत नैणसी, पृथ्वीराज रासो** व **जोधपुर राज्य की ख्यात** में मारवाड़ के राठौड़ों को **कन्नौज से आना** बताया गया है।
- **मुहणौत नैणसी के अनुसार**– मोहम्मद गौरी ने 1192 में **तराईन के द्वितीय युद्ध** में पृथ्वीराज चौहान तृत्तीय को हराया। उसके बाद 1194 में चन्दावर के युद्ध में कन्नौज के शासक **जयचन्द गहड़वाल** के साम्राज्य को नष्ट कर दिया। कुछ वर्षों बाद जयचंद के पौत्र **सीहा जी** ने 13वीं शताब्दी में मारवाड़ के राठौड़ वंश की स्थापना की।
- **जोधपुर राज्य की ख्यात** में राजा विश्वुतमान के पुत्र **राजा वृहद बल** से पैदा होना बताया है।
- **कर्नल टॉड** ने राठौड़ों की वंशावली के आधार पर इन्हें **सूर्यवंशी** माना है। टॉड ने ख्यातों के आधार पर जयचन्द गहड़वाल का वंशज माना है।
- 1596 ई. में लिखे गए **'राष्ट्रोढ़ वंश महाकाव्य'** में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बतायी है।
- विश्वम्भरा में सोमानी के **शान्तिनाथ ज्ञान भंडार,** खम्भात के **कल्पसुत्र ज्ञान भंडार,** सूर्यपुर की 1546 विक्रम संवतीय एक प्रति, फलौदी के **1555 ई. के शिलालेख** आदि के आधार पर प्रमाणित किया है कि

10 बीकानेर का राठौड़ राजवंश

- इस क्षेत्र का प्राचीन नाम **'जांगलू/कुरू जांगला/माद्रेय जांगला'** था। महाभारत काल में यह प्रदेश **'कुरू प्रदेश'** के नाम से जाना जाता था।
- जांगल प्रदेश की राजधानी **अहिच्छत्रपुर** (वर्तमान नागौर) थी।
- जांगलप्रदेश का पूर्वी भाग **सपादलक्ष** कहलाता था, उसकी राजधानी **शाकम्भरी** थी।
- राठौड़ वंश की कुलदेवी **नागणेची माता** हैं।
- बीकानेर के राठौड़ वंश की कुल देवी **करणी माता** है।
- **राती घाटी**– बीकानेर शहर जिस स्थान पर बसा है उसका प्राचीन नाम रातीघाटी था। नागौर, अजमेर और मुल्तान के मार्ग यहाँ मिलते थे, उस स्थान को पहले **'राती–घाटी'** के नाम से जाना जाता था।

❖ राव बीका (1465–1504 ई.)–

- बीकानेर के राठौड़ वंश का संस्थापक **'राव बीका'** था।
- राव जोधा का दूसरा पुत्र था। **दयाल दास री ख्यात** व **वीर विनोद** के अनुसार बीका, जोधा का दुसरा पुत्र था। प्रथम पुत्र **निम्बा** था, जिसकी **असामयिक मौत** हो गई थी।
- मारवाड़ के शासक राव जोधा ने अपनी रानी जसमादे के प्रभाव के कारण बीका को जोधपुर का राज्य न देकर **सातलदेव** को दिया। राव बीका ने अपने पिता द्वारा व्यंग्य किए जाने पर 1465 ई. में अपने **चाचा कांधल** के साथ **जांगल देश** को विजित किया जो मारवाड़ के उत्तर में स्थित था।
- बीका की माता का नाम **सांखला रानी नौरंग दे** था।
- राव बीका ने भाटी, चौहान, खीचिंयों व कायमखानी आदि स्थानीय शक्तियों की फूट का लाभ उठाकर अनेक गाँवों पर अधिकार कर लिया।
- बीका से परास्त होने के पहले **जाट लोग** कई सदियों से इस मरूभूमि में आबाद थे। उनके अधिकार की भूमि इस बात की पुष्टि करती है और वह तमाम प्रदेश जिससे बीकानेर राज्य बना, वह जाटों की निम्नलिखित **6 शाखाओं** (**1.पूनिया 2. गोदारा 3.सारण 4. असिंघ 5. बेनिवाल 6. जोहिया**) के अन्तर्गत था।
- सबसे पहले **गोदारा जाटों** ने राव बीका की अधीनता स्वीकार करने का फैसला किया और इसके लिए उन्होंने अपने दो प्रतिनिधियों को बीका के पास भेजा और अपनी कुछ शर्तों के साथ उसका प्रभुत्व स्वीकार किया।
- बीका द्वारा स्वीकार की गई शर्तों में बीका के उत्तराधिकारियों के राज्याभिषेक का टीका **गोदारा जाटों** द्वारा किया जाना भी शामिल था।
- पुरानी मान्यताओं के अनुसार राव बीका ने राजधानी निर्माण (बीकानेर शहर) के लिए जिस क्षेत्र को पसन्द किया था उसका मालिक **'नेरा/नरा'** नामक जाट था। राजधानी के नाम के साथ उसका नाम जोड़े जाने की शर्त पर वह अपनी बपौती की भूमि देने को तैयार हो गया। इस प्रकार **'बीका व नरा'** के नाम पर राजधानी का नाम **'बीकानेर'** पड़ा।
- **राव बीका** ने 1485 में **जांगल देश** को जीतकर इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- **रंगदे से विवाह**– राव बीका ने पुगल के शासक **राव शेखा की पुत्री रंगदे** से विवाह किया। वैवाहिक सम्बन्ध के बाद बीका ने **'कोडमदेसर'** नामक स्थान पर रहने का निश्चय किया।
- राव बीका की प्रथम राजधानी **'कोडमदेसर'** थी।
- 1485 ई. में राव बीका ने **एक दुर्ग** का निर्माण प्रारम्भ किया, लेकिन उसे पूर्ण नहीं कर पाया, जिसे वर्तमान में **'बीकाजी की टेकरी'** कहते हैं।
- **बीकानेर शहर**– 12 अप्रेल **1488 ई. वैशाख शुक्ल तृत्तीया** (आखातीज) को करणी माता के आशीर्वाद से राव बीका ने बीकानेर शहर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया। **आखातीज** (अक्षय तृत्तीया) को बीकानेर का स्थापना दिवस मनाते हैं।
- माना जाता है कि **करणी माता की** कृपा से ही राव बीका ने नवीन राज्य की स्थापना की थी। करणी माता ने आशीर्वाद में कहा–**''तेरा प्रताप जोधा से सवाया बढ़ेगा और बहुत से भूपति तेरे चाकर होंगे।''**
- बीकानेर में **नागणेची माता के मंदिर** का निर्माण करवाया।
- बीका ने मण्डोर से भैरव की मूर्ति लाकर **कोडमदेसर** में **भैरव मन्दिर** बनवाया।
- 1504 ई. में बीका की आकस्मिक मृत्यु हो गई।

❖ राव नरा (1504–05 ई.)–

- बीका की मृत्यु के बाद उसका पुत्र राव नरा बीकानेर का शासक बना। शासक बनने के **4 माह बाद** ही 13 जनवरी 1505 ई. को राव नरा की मृत्यु हो गई।

❖ राव लूणकरण (1505–26 ई.)–

- राव बीका का पुत्र व नरा का भाई था।
- राव नरा की **निःसंतान** मृत्यु होने पर नरा के छोटे भाई **राव लूणकरण** को बीकानेर का शासक बनाया गया।
- **लोद्रवा पर आक्रमण**– 1509 ई. में लोद्रवा पर आक्रमण कर **मानसिंह** को हराया।

में जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी 1589 से 17 जनवरी 1594 ई. के मध्य करवाया। जूनागढ़ किले के सूरजपोल द्वार पर **रायसिंह प्रशस्ति** लिखवाई। इस प्रशस्ति के रचयिता जैइता है। सूरजपोल के बाहर **जयमल–पत्ता की गजारूढ पाषाण प्रतिमाएँ** लगवाई।

- **जूनागढ़ प्रदेश**– 1593 ई. में अकबर ने रायसिंह से प्रसन्न होकर जूनागढ़ की जागीर दी।

➔ **रायसिंह के सैन्य अभियान–**

1. **काबुल–** 1581 ई. में अकबर ने रायसिंह को **काबुल** पर सैन्य अभियान हेतु भेजा।
2. **बलूचिस्तान–** 1585 ई. में अकबर ने रायसिंह को **बलूचिस्तान** पर सैन्य अभियान हेतु भेजा जिसमें रायसिंह ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
3. **कंधार–** अकबर द्वारा पहले **खानखाना** को कंधार विजय के लिए नियुक्त किया था लेकिन बाद में उसकी सहायता हेतु रायसिंह को भेजा गया।

- अकबर द्वारा **1603 ई.** में शाहजादे सलीम को मेवाड़ पर अभियान हेतु भेजा जिसमें रायसिंह को भी साथ में भेजा गया।

- **राय की उपाधि**– अकबर द्वारा 1604 ई में **शमशाबाद** व **नूरपुर** की जागीर व **'राय'** की उपाधि दी।
- रायसिंह ने दो मुगल बादशाहों **अकबर** व **जहाँगीर** की सेवा की।
- अकबर की मृत्यु के बाद 1605 ई. में जहाँगीर मुगल बादशाह बना। इसने रायसिंह को **5,000** का मनसब दिया।
- **रायसिंह** जहाँगीर का सबसे विश्वासपात्र राजपूत शासक था।
- **जहाँगीर की नाराजगी**– जहाँगीर के शासक बनते ही जब उसके पुत्र खुसरों ने विद्रोह कर दिया तो जहाँगीर को लाहौर जाना पड़ा, तो महल के हरम की स्त्रियों की देखभाल की जिम्मेदारी रायसिंह को मिली। किन्तु रायसिंह ने एक जैन साधु की भविष्यवाणी पर विश्वास कर हरम की स्त्रियों को बीच रास्ते में छोड़कर बीकानेर चला गया। जिस कारण कुछ समय के लिए उसे जहाँगीर के कोप का भाजन (शिकार) बनना पड़ा।
- **कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तनकं काव्यम्**– इसकी रचना **जयसोम** ने **कर्मचंद** नामक मंत्री के आश्रय में रहकर की थी। इस काव्य से **बीकानेर के शासकों** के वैभव और विद्यानुराग का पता चलता है। इसमें रायसिंह को **राजेन्द्र** (जीते जी शत्रुओं से अच्छा व्यवहार करने वाला) की उपाधि दी गई है।
- रायसिंह की रचनाएँ– **रायसिंह महोत्सव** (संस्कृत, राव सीहा से लेकर रायसिंह तक की श्लोकों में वंशावली), **वैद्यक वंशावली, बालबोधिनी** (ज्योतिष रत्नमाला पर लिखी गई टीका)।
- **राजा रायसिंह री बेल**– इस रचना में रायसिंह की प्रशंसा के 43 गीत रचे गए हैं रचयिता का नाम अज्ञात है।
- मुंशी देवीप्रसाद ने महाराजा रायसिंह को **'राजपूताने का कर्ण'** की संज्ञा दी। **(स्रोत– राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति– कक्षा–10)**
- रायसिंह के समय बीकानेर राज्य में **अकाल** पड़ा। तब इसने जगह–जगह सदाव्रत खोले व पशुओं के लिए चारे पानी की व्यवस्था की।
- एक बार रायसिंह एक मुगल अभियान में दक्षिण भारत में था। वहाँ फोग वृक्ष को देखकर रायसिंह द्वारा रचा गया दोहा–

  तू सैं देशी रूखड़ा, म्हैं परदेशी लोग।
  म्हाने अकबर तेड़ियां, तू क्यूं आयो फोग।
- बीकानेर में **चित्रकला की शुरूआत** महाराजा रायसिंह के समय हुई थी। बीकानेर चित्रकला का प्राचीन ग्रन्थ **'भगवत पुराण'** रायसिंह के समय का है।
- 1612 ई. में **बुरहानपुर** (मध्यप्रदेश) में रायसिंह की मृत्यु हो गई। रायसिंह ने अपने पुत्र **सूरसिंह** को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया गया हुआ था पर रायसिंह की मृत्यु के बाद जहाँगीर ने सूरसिंह से नाराज होकर रायसिंह के दूसरे पुत्र **दलपतसिंह** को बीकानेर का शासक बना दिया।,

- रायसिंह ने अपनी **भटियाणी रानी गंगा** के प्रभाव में आकर सूरसिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। रायसिंह के **मंत्री कर्मचन्द** ने षड्यंत्र रचकर रायसिंह के दूसरे पुत्र **दलपत सिंह** को शासक बनाने की सोची।
  रायसिंह की मृत्यु के बाद सूरसिंह ने शाही दरबार में पहुँचकर **सम्राट जहाँगीर** को अपने पिता द्वारा उत्तराधिकारी बनाने की बात कहकर बीकानेर का शासक बनाने का प्रस्ताव रखा। जहाँगीर ने सूरसिंह के इस व्यवहार से नाराज होकर **दलपत सिंह** को बीकानेर का राजा बना दिया।

❖ दलपत सिंह (1612–1613 ई.)–

- यह रायसिंह का पुत्र था। इसके राज्याभिषेक पर जहाँगीर ने **दलपत सिंह** को बीकानेर का टीका दिया। लेकिन एक वर्ष बाद ही उसे गद्दी से उतार दिया।
- दलपत सिंह शासक बनने के बाद **जहाँगीर के विरोध** में कार्य करने लगा। जिससे नाराज होकर जहाँगीर ने **दलपत सिंह** को भटनेर के किले में कैद करवा दिया था। उसकी वहीं मृत्यु हो गई थी। दलपत सिंह की मृत्यु के बाद इनकी 6 रानियाँ सती हुई जिनकी छतरियाँ **भटनेर दुर्ग** में हैं।

❖ सूरसिंह (1613–31 ई.)–

- यह रायसिंह का पुत्र था। दलपत सिंह के बाद जहाँगीर ने **सूरसिंह** को बीकानेर का शासक बनाया।
- सूरसिंह ने जहाँगीर के समय **खुर्रम के विद्रोह** (1622) का दमन किया था, फिर भी जब खुर्रम शाहजहाँ के नाम से मुगल बादशाह

11 जाट राजवंश

- जाट मूलतः एक कृषक व मेहनतकश जाति है, जो कृषि में कुशलता और अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध रही है।
- अठारहवीं शताब्दी में जाटों द्वारा राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के पूर्व सिन्धु नदी के तट से पंजाब, उत्तरी राजस्थान और यमुना के उत्तर की ओर चम्बल के पार ग्वालियर तक एक विशाल क्षेत्र में जाटों का निवास था।
- राजस्थान के पूर्वी भाग **भरतपुर, धौलपुर** व **डीग** आदि क्षेत्रों में 18वीं शताब्दी के मध्य जाट राजवंश का शासन था। यहाँ जाट शक्ति का उत्थान **औरंगजेब** के शासनकाल में हुआ था। औरंगजेब की नीतियों व कुछ आर्थिक कारणों को लेकर औरंगजेब के खिलाफ पहला संगठित विद्रोह **आगरा, दिल्ली** व **मथुरा** क्षेत्र में बसे जाटों ने किया।
- माना जाता है कि **भरतपुर** का नाम भगवान श्रीराम के भाई भरत के नाम पर रखा गया है। राम के भाई **लक्ष्मण** भरतपुर के जाट राजवंश के **कुलदेवता** थे।
- शाहजहाँ के शासनकाल के अन्तिम दिनों में मुगल साम्राज्य में अराजकता की स्थिति का लाभ उठाते हुए अलीगढ़ परगने के जाटों ने **नन्दराम** के नेतृत्त्व में संगठित होकर राज्य को **'कृषि–कर'** देना बन्द कर दिया।
- औरंगजेब के बादशाह बनते ही उसने विद्रोही जाटों के विरूद्ध **सैनिक कार्यवाही** की। अन्त में 1660 ई. में नन्दराम ने औरंगजेब के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

❖ गोकुल जाट–

- औरंगजेब की नीतियों के फलस्वरूप 1669 ई. में मथुरा क्षेत्र के जाटों ने **तिलपत** के एक स्थानीय जाट जमींदार **गोकुल** के नेतृत्त्व में जाट विद्रोह किया।
- मुगल फौजदार **हसन अली खाँ** ने इस जाट आन्दोलन को कुचल दिया। गोकुल को बंदी बनाकर उसकी **हत्या** कर दी गई।

❖ **ब्रज**– इसके बाद **सिनसिनी** ग्राम (डीग) के जमींदार खानचन्द के पुत्र ब्रज ने जाटों को संगठित कर मुगल प्रशासन को परेशान किया।

- उसने डीग के निकट **आऊ के शाही थाने** पर भी अधिकार कर लिया। अन्त में ब्रज अपने ग्राम **सिनसिनी** की मुगल सेना से रक्षा करता हुआ मारा गया।

❖ राजाराम जाट–

- गोकुल की मृत्यु के बाद राजाराम ने इस क्षेत्र के जाटों का नेतृत्त्व किया। 1685 ई. में राजाराम के नेतृत्त्व में दूसरा जाट विद्रोह हुआ।
- राजाराम ने सिकन्दरा (आगरा) में स्थित **अकबर के मकबरे** को खोद कर उसकी हड्डियों को जला दिया।
- औरंगजेब ने आमेर नरेश **रामसिंह प्रथम** को मथुरा का फौजदार नियुक्त कर उसे जाटों के इस विद्रोह को शान्त करने का कार्य सौंपा। रामसिंह की जल्दी मृत्यु हो जाने पर उसके पुत्र बिशनसिंह को जाटों के दमन का कार्य सुपुर्द किया गया।
- आमेर के **बिशनसिंह** व औरंगजेब के पौत्र **बीदर बख्श** ने 1688 ई. में राजाराम को परास्त कर दिया।
- इस बीच राजाराम की मृत्यु हो गई। अब उसके पुत्र **फतेहसिंह** ने जाटों का नेतृत्व संभाला परन्तु वह बिशनसिंह द्वारा पराजित कर दिया गया और सिनसिनी पर **कछवाहा शासक बिशन सिंह** का अधिकार हो गया।

❖ चूड़ामन (1695–1721 ई.)–

- भरतपुर के स्वतंत्र **जाट राजवंश का संस्थापक** चूड़ामन को माना जाता है। चूड़ामन योग्य नेता और कुशल राजनीतिज्ञ था। उसने अपनी अभूतपूर्व संगठन क्षमता, विलक्षण बुद्धि व रणचातुर्य से अब तक चल रहे जाट आन्दोलन में संजीवनी का संचार किया।
- चूड़ामन ने **मथुरा** एवं **आगरा** के मुगल इलाकों में लूटमार कर मुगल शक्ति को झकझोर दिया। चूड़ामन ने **रसूलपुर** को अपना कार्यक्षेत्र चुना। उसने राजपूतों से **राहिरी** तथा **राजगढ़** के कस्बे छीन लिए। इसके बाद सोखेर, उज्जैन, सोगर, कासोट में अपने थाने कायम कर दिए।
- चूड़ामन की इन गतिविधियों से परेशान होकर मुगल बादशाह औरंगजेब ने आमेर शासक **बिशनसिंह** को चूड़ामन का दमन करने भेजा। बिशनसिंह ने जाटों के एक शक्तिशाली सरदार ऊदा को अपने पक्ष में कर लिया व चूड़ामन की कुछ गढ़ियों पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया, पर उसे पूर्ण सफलता नहीं मिली।
- बिशनसिंह के चले जाने से **चूड़ामन** ने पुनः खुद को शक्तिशाली बना लिया। 1704 ई. में एक बार फिर उसने **सिनसिनी ग्राम (डीग)** पर अधिकार कर लिया। यद्यपि सिनसिनी पर उसका अधिक दिनों तक अधिकार नहीं रहा।
- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात हुए उत्तराधिकार संघर्ष में **जाजऊ के युद्ध** में आजम की पराजित सेना को चूड़ामन ने लूट लिया।
- इसके बाद वह मुगल बादशाह **बहादुरशाह** की सेवा में उपस्थित हो गया। बहादुरशाह ने भी खुश होकर उसे **1500 जात और 500 सवार** की मनसब प्रदान कर सम्मानित किया। उसे दिल्ली–आगरा शाही मार्ग पर नियन्त्रण रखने का दायित्व भी सौंपा। चूड़ामन ने मुगल सूबेदार को 1708 ई. के सांभर के युद्ध में राजपूतों को पराजित करने में मदद भी की।

12 राजस्थान के अन्य महत्त्वपूर्ण राजवंश

- पूर्व के अध्यायों में हमने राजस्थान के विभिन्न भू–भागों में स्थापित प्रमुख राजवंशों का अध्ययन किया था, अब हम राजस्थान के कुछ अन्य महत्वपूर्ण राजवंशों का अध्ययन करेंगे, जो निम्न प्रकार है–

परमार राजवंश

- 'परमार' का शाब्दिक अर्थ **'शत्रु को मारने वाला'** होता है। प्रारम्भ में परमार आबू के आस–पास ही शासन करते थे, बाद में जब प्रतिहारों की शक्ति का ह्रास हुआ, तो परमारों की राजनैतिक शक्ति का उत्थान हुआ।
- चन्दबरदाई के **पृथ्वीराज रासो** में परमारों की उत्पत्ति आबू में ऋषि वशिष्ठ के **अग्निकुण्ड** से बताई गई है।
- उदयपुर प्रशस्ति, पिंगल सूत्रवृत्ति, तेजपाल अभिलेख में परमारों को **'ब्रह्म क्षत्रकुलीन'** बताया गया है।
- परमारों में आबू के परमार, मारवाड़ के परमार, सिंध के परमार, गुजरात के परमार, बागड़ के परमार, मालवा के परमार आदि शाखाएँ हुई, जिनमें से आबू के परमार एवं मालवा के परमार ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं।
- परमार वंश का प्राचीनतम ज्ञात सदस्य **'उपेन्द्र कृष्णराज'** है। परमार वंश के प्रारम्भिक शासक दक्षिण के राष्ट्रकूटों के सामंत थे।
- परमार वंश की कुलदेवी **कालिका माता** (धार, मध्यप्रदेश) है।
- परमार अपने हर लड़के के जन्म पर मुन्डन बूसी गाँव (पाली) स्थित हनुमान जी के मंदिर में करते हैं।

आबू के परमार

- आबू के परमार वंश का संस्थापक **'धूमराज'** था लेकिन इनकी वंशावली **उत्पलराज** से आरंभ होती है। आबू के परमारों की राजधानी **'चन्द्रावती'** (सिरोही) थी। सिंधराज परमार एक प्रतापी शासक हुआ, जो **'मरूमण्डल का महाराज'** कहलाता था।
- पड़ोसी होने के कारण आबू के परमारों का गुजरात के शासकों से सतत् संघर्ष चलता रहता था।

❖ धरणीवराह–

- गुजरात के शासक **मूलराज सोंलकी** से पराजित होने के कारण आबू के शासक **धरणीवराह** को राष्ट्रकूट धवल की शरण लेनी पड़ी लेकिन कुछ समय बाद धरणीवराह ने आबू पर पुनः अधिकार कर लिया। **(स्रोत– राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति–कक्षा–10)**

❖ महिपाल–

- 1002 ई. में धरणीवराह के पुत्र महिपाल का **आबू** पर अधिकार प्रमाणित होता है। इस समय तक आबू के परमारों ने गुजरात के **सोलंकियों की अधीनता** स्वीकार कर ली।

❖ धन्धुक परमार–

- महिपाल का पुत्र **धन्धुक** परमार अगला परमार शासक हुआ। इसने सोलंकियों की अधीनता से मुक्त होने का प्रयास किया।
- आबू पर सोलंकी शासक **भीमदेव** ने आक्रमण कर दिया। धन्धुक परमार एवं **भीमदेव सोलंकी** के मध्य संघर्ष हुआ। धन्धुक आबू छोड़कर धार के **शासक भोज** की शरण में चला गया। भीमदेव सोलंकी ने विमलशाह को आबू का प्रशासक नियुक्त किया। बाद में **विमलशाह** ने भीमदेव व धन्धुक के मध्य पुनः मेल करवाया।
- विमलशाह ने 1031 ई. में देलवाड़ा (आबू) में **भगवान आदिनाथ का एक भव्य मंदिर** बनवाया। जो **विमलवसाही जैन मन्दिर** के नाम से प्रसिद्ध है।
- धंधुक की विधवा पुत्री ने **बसंतगढ़** में **'सूर्य मंदिर'** का निर्माण व सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया।

❖ कृष्णदेव–

- इसके शासनकाल में 1060 ई. में परमारों और सोलंकियों के सम्बन्ध पुनः बिगड़ गए, लेकिन नाडौल के चौहान शासक **बालाप्रसाद** ने इनमें पुनः मित्रता करवाई।

❖ विक्रमदेव–

- कृष्णदेव के पौत्र **विक्रमदेव** ने **'महामण्डलेश्वर'** की उपाधि धारण की।

❖ धारावर्ष परमार (1163–1219 ई.)–

- यह विक्रमदेव का पड़पौत्र था। धारावर्ष आबू के परमार शासकों में सबसे शक्तिशाली शासक हुआ। उसने 56 वर्षों तक शासन किया।
- इसने **मोहम्मद गौरी** के विरूद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व किया। वह गुजरात के चार सोंलकी शासकों **कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज** व **भीमदेव द्वितीय** का समकालीन था। उसने स्वयं को सोलंकी शासकों की अधीनता से स्वतंत्र कर लिया। उसने नाडोल के चौहानों से भी अच्छे सम्बन्ध रखे।
- आबू के अचलेश्वर में **मंदाकिनी कुण्ड** के पास बनी हुई धारावर्ष की मूर्ति और आर–पार छिद्रित तीन भैंसों की प्रतिमाएँ उसके पराक्रम की कहानी कहते हैं। कहा जाता है कि धारावर्ष एक ही बाण में तीन–तीन भैसों को बेध डालता था।

राजस्थान के प्रमुख साके

क्र. सं.	नाम साका	वर्ष	आक्रमणकारी	पराजित शासक	केसरिया	जौहर	विशेष
1.	रणथम्भौर का साका	1301 ई.	अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर देव चौहान	हम्मीर व अन्य राजपूत यौद्धा	रानी रंगदेवी	राजस्थान का प्रथम साका
2.	चित्तौड़ का प्रथम साका	1303 ई.	अलाउद्दीन खिलजी	रावल रतनसिंह	गौरा, बादल व अन्य राजपूत	रानी पद्मिनी	वर्णन तारीख–ए –अलाई में
3.	चित्तौड़ का दूसरा साका	1535 ई.	गुजरात शासक बहादुर शाह	विक्रमादित्य	बाघसिंह रावत व अन्य	कर्मावती, जवाहरबाई व अन्य	–
4.	चित्तौड़ का तीसरा साका	1568 ई.	मुगल शासक अकबर	उदयसिंह	जयमल राठौड़ व फतेहसिंह	फूलकंवर व अन्य	–
5.	सिवाणा का प्रथम साका	1310 ई.	अलाउद्दीन खिलजी	शीतल देव	शीतलदेव, सोमेश्वर व अन्य	मैणादे व अन्य	–
6.	सिवाणा का दूसरा साका	1582 ई.	मोटा राजा उदयसिंह	कल्ला राठौड़	कल्ला राठौड़ व अन्य	हाड़ी रानी व अन्य	–
7.	जालौर का साका	1311 ई.	अलाउद्दीन खिलजी	कान्हड़देव चौहान	कान्हड़देव, वीरमदेव व अन्य	जैतलदे व अन्य	वर्णन कान्हड़देव प्रबंध में
8.	जैसलमेर का प्रथम साका	1311 ई.	अलाउद्दीन खिलजी	महारावल मूलराज	मूलराज, रतनसी व अन्य	राजपूत वीरांगनाएँ	–
9.	जैसलमेर का दूसरा साका	–	फिरोजशाह तुगलक	रावल दूदा	रावल दूदा, त्रिलोकसी व अन्य	राजपूत वीरांगनाएँ	–
10.	जैसलमेर का अर्द्ध साका	1550 ई.	अमीर अली	रावल लूणकरण	लूणकरण व अन्य	नही हुआ	केसरिया हुआ लेकिन जौहर नहीं
11.	भटनेर का साका	1398 ई.	तैमूर लंग	दूलचंद भाटी	दूलचंद व अन्य	वीरांगनाएँ	मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया।
12.	गागरोन का प्रथम साका	1423 ई.	हौशंगशाह	अचलदास खींची	अचलदास व अन्य	लीला मेवाड़ी व अन्य	–
13.	गागरोन का दूसरा साका	1444 ई.	महमूद खिलजी प्रथम	पाल्हणसी	पाल्हणसी व अन्य	राजपूत वीरांगनाएँ	–

13 राजस्थान में मध्यकालीन प्रशासन व सामंती व्यवस्था

प्रशासनिक व्यवस्था –

- गुप्त शासकों की शक्ति कमजोर होने के बाद राजपूताना में शकों तथा हूणों के आक्रमण प्रारम्भ हो गए। कालान्तर में छोटी–छोटी प्रशासनिक इकाईयों का जन्म हुआ जो **'राजपूत राज्य'** के नाम से प्रसिद्ध हुए। 8वीं शताब्दी तक कई राजपूत राजवंश अस्तित्व में आ चुके थे।
- **8वीं से 12वीं शताब्दी** के काल में राजस्थान के शासन सम्बन्धी विवेचन की सामग्री विशेष रूप से प्राप्त नहीं होती, फिर भी उस समय के दानपत्रों, शिलालेखों तथा साहित्यिक ग्रन्थों से तत्कालीन शासन व्यवस्था की जानकारी हमें प्राप्त होती है।
- दिल्ली व आगरा में **मुगल साम्राज्य** स्थापित होने के बाद राजपूताना के शासक भी मुगलों के सम्पर्क में आए। जिससे राजपूताने की प्रशासनिक व्यवस्था में मुगल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।
- मध्यकालीन राजपूताना की प्रशासनिक व्यवस्था का विस्तृत अध्ययन निम्न प्रकार है–

केन्द्रीय प्रशासन

❖ शासक/राजा–

- संपूर्ण शासन व्यवस्था का केन्द्र **राजा** स्वयं होता था। राज्य की सभी शक्ति राजा में निहित थी। वह समस्त सैनिक, राजनीतिक, न्यायिक व प्रशासनिक शक्तियों का केन्द्र बिन्दु था। वह महाराजाधिराज, परमभट्टारक, राज–महाराज आदि उपाधियाँ धारण करता था। इस प्रकार की उपाधियों से शासकों की राजनीतिक शक्ति का ज्ञान होता है। शासक अपने आपको ईश्वर का अंश मानते थे, इस कारण वे भूमि उद्धारक तथा प्रजा संरक्षक भी थे।

राजा के अधिकार–

- ☞ मंत्रियों, राजदूतों व अन्य उच्चाधिकारियों की नियुक्ति करना।
- ☞ राजा, राज्य का मुख्य न्यायाधीश भी था। दीवानी और फौजदारी सभी मामलों में **अंतिम निर्णय** उसी का होता था।
- ☞ युद्ध के समय सामान्यतः राजा स्वयं **सेना** का संचालन करता था।
- ☞ शासन के आचरण, नियम–कायदों का निर्धारण करना, धर्म की रक्षा करना, प्रजा पालन करना, दुष्टों को दण्ड देना, सैन्य संचालन, सार्वजनिक उत्सवों में भाग लेना आदि राजा के मुख्य कर्त्तव्य थे।

- **राजा** राज्य का सर्वेसर्वा होता था, परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि राजस्थान के शासक पूर्ण रूप से स्वच्छंद व निरंकुश होते थे। इनके अधिकारों को नियंत्रित रखने के लिए मंत्रिमंडल, सामंत वर्ग, शासन–संस्थाएँ, धर्म शास्त्रों की मर्यादा और जनसमूह आदि प्रतिबन्ध का कार्य करते थे।

❖ युवराज–

- राजा के बाद **'राजकुमार/युवराज'** का शासन में बहुत महत्त्व था। बहु विवाह की परम्परा के कारण अनेक राजकुमार होते थे। प्रायः ज्येष्ठ पुत्र को ही युवराज घोषित करने का प्रचलन था। राजा किसी एक को अपना उत्तराधिकारी चुनता था।
- कभी–कभी राजा किन्हीं विशेष कारणों से अपने जीवनकाल में ही राजकार्य से मुक्त होकर शासन का भार अपने उत्तराधिकारी राजकुमार को दे देता था। **बापा** ने राजकार्य छोड़कर सन्यास ले लिया तथा **खुम्माण** को अपना राज्य सौंप दिया था। **भोजदेव प्रतिहार** ने **नागभट्ट** को शासक बनाया था।
- कभी–कभी प्रशासन सम्बन्धी किसी विषय को लेकर राजा व युवराज के बीच मतभेद हो जाता था। बीकानेर के **महाराजा सुजान सिंह** का अपने पुत्र जोरावर सिंह से दीवान पद की नियुक्ति को लेकर मनमुटाव हो गया था। मेवाड़ महाराणा **जगतसिंह द्वितीय** और उसके पुत्र प्रतापसिंह के बीच तीव्र मतभेद हो गए थे।

❖ सामन्त–

- राज्य प्रशासन में राजा के बाद सामन्तों की महत्ता थी। सामंत राज्य की **रीढ़ की हड्डी** थे। सामंतों के सहयोग के बिना शासक अकेला प्रशासन कार्य नहीं कर सकता था। राज्य की सुरक्षा का दायित्व सामंतों पर रहता था। समय–समय पर वे राज्य की **सैनिक सेवा** के लिए उपस्थित होते थे।

  नोट– राजस्थान की सामंत प्रथा का विस्तृत अध्ययन इसी अध्याय के अन्त में पृथक से दिया गया है।

मंत्रीमण्डल या परामर्शदाता और राज्य के उच्च अधिकारी

- मुगलों के सम्पर्क में आने से पूर्व ही विभिन्न ग्रन्थों व शिलालेखों में राजपूताना के राज्यों में राजा की सहायता के लिए **मंत्रीमण्डल** का उल्लेख मिलता है। मंत्रीमण्डल के सदस्य वंश, जाति व **योग्यता के आधार** पर चुने जाते थे।
- राज्य के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों व नीति सम्बन्धी विषयों पर राजा अपने ही द्वारा नियुक्त बड़े–बड़े पदाधिकारियों से **परामर्श** लिया करता था। इन पदाधिकारियों से ही मंत्रीमण्डल का गठन होता था।
- राजा अपनी **इच्छा से** इन्हें नियुक्त करता था और हटा देता था लेकिन विशेष रूप से जो मंत्री जनहित कार्यों के सम्पादन में उपयुक्त माने जाते थे उनका पद **वंशानुगत** चलता रहता था। शासक इन मंत्रियों की सलाह मानने के लिए बाध्यकारी नहीं थे। योग्य मंत्रियों की सलाह का राजा सम्मान करते थे।

14 राजस्थान में मराठा हस्तक्षेप एवं उसका प्रभाव

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन होना प्रारम्भ हो गया और उसके पुत्रों में उत्तराधिकार संघर्ष शुरू हो गया। औरंगजेब के पुत्र **आजम** ने मुगल शिविर में बंदी बनाए गए साहू को मुक्त कर दिया।
- साहू के महाराष्ट्र में प्रवेश करते ही गृह युद्ध आरम्भ हो गया। राजाराम की विधवा ताराबाई अपने पुत्र **शिवाजी द्वितीय** को शासक बनाना चाहती थी। दूसरी तरफ बहुत से मराठा सरदार **साहू** को मराठा राज्य का उत्तराधिकारी मानते थे।
- सौभाग्य से साहू को **बालाजी विश्वनाथ** जैसे योग्य और अनुभवी व्यक्ति का सहयोग मिला। उसने विरोधियों का दमन किया। धीरे–धीरे साहू की स्थिति सुदृढ़ होने लगी और शिवाजी के उत्तराधिकारी के रूप में **साहू** को मराठा राज्य का शासक स्वीकार कर लिया गया।
- **छत्रपति साहू** ने 1713 ई. में **बालाजी विश्वनाथ** को अपना **पेशवा** नियुक्त किया। बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद 1720 ई. में उसका पुत्र **बाजीराव प्रथम** पेशवा बना।
- फरवरी 1728 ई. में पालखेड़ के युद्ध में निजाम का दमन करने के बाद **'बाजीराव प्रथम'** ने मालवा व गुजरात प्रान्तों में हमले करने प्रारम्भ कर दिए।
- बाजीराव प्रथम की **उत्तर भारत** में मराठा राज्य के प्रसार की नीति से राजपूतों व मराठों में टकराव होना निश्चित था।

❖ राजस्थान में मराठा हस्तक्षेप के कारण –

1. **मुगल साम्राज्य का पतन–** औरंगजेब की मृत्यु के बाद कोई भी योग्य व्यक्ति मुगल सिंहासन पर नहीं बैठा। मुगल प्रशासन की रीढ़ माने जाने वाले राजपूत शासक भी उदासीन होकर अपने–अपने राज्यों में चले गए। मुगलों के **शक्तिशाली मनसबदार** अपने **स्वतंत्र राज्य** स्थापित करने लग गए। इन परिस्थितियों में मुगल साम्राज्य की कमजोर स्थिति का फायदा उठाकर मराठों ने उत्तर भारत की ओर अपने साम्राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया।
2. **राजपूत राज्यों की दुर्बलता–** मुगल साम्राज्य के कमजोर होने पर राजपूत राजाओं को सरंक्षण मिलना बंद हो गया। मनसबदारी के रूप मे आर्थिक सहायता तथा जागीरें मिलना बंद हो गई। अपने अहं की तुष्टि एवं छोटे–छोटे स्वार्थों के लिए राजपूत शासक आपस में लड़ने लग गए, इससे इनकी शक्ति और समृद्धि धीरे–धीरे कम होने लग गई।
3. **बाजीराव प्रथम की उत्तर की ओर प्रसार की नीति–** बाजीराव प्रथम मुगल सत्ता की कमजोरी का लाभ उठाकर उत्तर भारत में मराठा राज्य का प्रसार करना चाहता था। गुजरात व मालवा पर नियंत्रण करने के बाद राजस्थान भी उसके आक्रमणों का स्वाभाविक केन्द्र बन गया।
4. **मराठों की धन प्राप्ति की लालसा–** औरंगजेब के साथ लगातार संघर्ष के कारण मराठाओं की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई थी। **साहू** ने पेशवा बाजीराव को गुजरात व मालवा से **'चौथ'** व **'सरदेशमुखी'** वसूलने का आदेश दिया। बाजीराव के लगातार सैन्य अभियानों से मराठा खजाना खाली हो गया था। राजपूत राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में इन्होंने धन प्राप्त कर सहायता देना प्रारम्भ कर दिया। मराठे अपने स्वार्थों के लिए शासकों को आपस में लड़ाने लगे और पर्याप्त धन नहीं मिलने पर विरोधी पक्ष के साथ मिल जाते थे।
5. **राजपूत राज्यों में आपसी संघर्ष–** राजस्थान की रियासतों का आपसी संघर्ष ही राजस्थान में मराठा आक्रमण का कारण बना। यहाँ के राजपूत राजाओं ने स्वयं मराठों को सैनिक सहायता हेतु आमंत्रित किया था। **बूंदी, जयपुर** व **जोधपुर** राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष के दौरान मराठों ने राजपूतों की आपसी फूट का फायदा उठाया।

❖ मराठों का राजस्थान में प्रवेश –

- मई 1711 ई. में मराठों ने प्रथम बार **मेवाड़ राज्य** के अधीनस्थ क्षेत्र मंदसौर के पास धन वसूली की। **(स्रोत– राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन एवं शौर्य परम्परा, कक्षा–9)**
- सवाई जयसिंह ने **मालवा** की प्रथम सूबेदारी (1713–1717 ई.) के दौरान मेवाड़ व अन्य राजपूत राज्यों के सहयोग से मराठों को परास्त किया।
- मराठों ने निजाम को परास्त करने के बाद मालवा और गुजरात से सटे मेवाड़ी गाँवों को **लूटना प्रारम्भ** कर दिया। सवाई जयसिंह व महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने **मुगल बादशाह मुहम्मद शाह** को मराठा गतिविधियों से अवगत करवाया लेकिन मराठों के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जा सकी।
- 1726 ई. में मराठों ने **कोटा, बूँदी** पर आक्रमण किया व मेवाड़ी क्षेत्रों में लूटपाट की। 1728 ई. में मराठों ने **शाहपुरा** तक छापे मारे। मगर शाहपुरा के सैनिकों ने उन्हें पराजित कर खदेड़ दिया। 1728 ई. में मराठों ने मेवाड़ के अर्द्ध स्वतंत्र राज्य **डूंगरपुर** व **बाँसवाड़ा** से चौथ वसूली की।
- 1729 ई. में सवाई जयसिंह को पुनः **मालवा का सूबेदार** नियुक्त किया गया। सितम्बर 1730 में उसे हटाकर उसके स्थान पर **मुहम्मद बंगश** को मालवा का सूबेदार नियुक्त कर दिया।
- 1730 ई. में सवाई जयसिंह ने **'दीपसिंह'** के नेतृत्त्व में एक शिष्टमण्डल मराठा **छत्रपति साहू** के दरबार में सतारा भेजा। इसमें मेवाड़ महाराणा का प्रतिनिधि पिपलिया का ठाकुर **रावत**

15 राजस्थान में अंग्रेजी प्रभुत्त्व और उसके प्रभाव

- इससे पहले के अध्याय में हम राजस्थान में मराठाओं का प्रवेश, उनके आक्रमण व मराठा हस्तक्षेप के प्रभाव का अध्ययन कर चुके हैं। उस दौरान राजस्थान की सभी रियासतें मराठा नासूर से पीड़ित थी और वे उससे छुटकारा चाहते थे।
- इन परिस्थितियों में 1803 ई. में जब **पेशवा** अंग्रेजों का शरणागत हो गया तथा **सिंधिया** व **भोंसले** भी अंग्रेजों से पराजित हो गए तो राजपूताना के राज्यों को ईस्ट इण्डिया कम्पनी में आशा की एक किरण दिखाई दी। उस समय **ईस्ट इण्डिया कम्पनी** ही भारत में एकमात्र सत्ता थी, जो मराठों के भय से रक्षा कर सकती थी। अतः अपने राज्यों की बाह्य एवं आन्तरिक उपद्रवों से रक्षा के लिए राजपूत राज्यों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से संधियाँ की।

→ 1818 ई. से पूर्व की संधियाँ–

- राजस्थान की रियासतों में सबसे पहले **जयपुर** और **जोधपुर** रियासतों के शासकों ने अंग्रेजों से संधि के प्रयास किए। 1776 में **जयपुर** के महाराजा पृथ्वीसिंह ने अपने वकील को गवर्नर जनरल से वार्ता के लिए कलकत्ता भेजा। **(स्रोत– राजस्थान का स्वतंत्रता आन्दोलन एवं शौर्य परम्परा, कक्षा– 9)**
- इसी तरह 1781 में **जोधपुर** के शासक विजयसिंह व 1786 ई. में **जयपुर** महाराजा **प्रतापसिंह** ने मराठों के विरूद्ध अंग्रेजों से सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया। लेकिन कम्पनी ने राजाओं की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह अभी देशी राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति का अनुसरण कर रही थी।
- इसके बाद भी 1795 ई. में **जयपुर** और **कोटा** के शासकों ने, 1796 में **जोधपुर** के शासक ने तथा 1799 में **जयपुर** के शासक सवाई प्रतापसिंह ने अंग्रेजों से संधि के पुनः प्रयास किए, मगर अंग्रेजों ने ध्यान नहीं दिया।
- **द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध** (1803–04 ई.) में मराठों की हार के बाद सिंधिया की शक्ति को कमजोर करने के लिए अंग्रेजों ने राजपूताना के राज्यों से संधियाँ करने में उत्सुकता दिखाई।
- गवर्नर जनरल **लार्ड वेलेजली (सहायक संधियों का जनक)** के आदेशानुसार लार्ड लेक ने राजपूत राजाओं के पास 7 अनुच्छेद का संधि का एक मसौदा भेजा। इस मसौदे की **प्रमुख शर्तें** निम्न थी–
- कम्पनी सरकार और राजपूत राजाओं के मध्य मैत्री रहेगी, एक के मित्र व शत्रु दूसरे के मित्र व शत्रु समझे जायेंगे। कम्पनी सरकार राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी और न ही इनसे कर की माँग करेगी। आवश्कता पड़ने पर ये मित्र राज्य कम्पनी की सैनिक सहायता करेंगे, यदि राज्यों का किसी अन्य राज्य से झगड़ा होने पर वे कम्पनी को मध्यस्थ बनायेंगे। यदि राज्यों को कम्पनी की सैनिक सहायता की आवश्यकता होगी, तो वे सेना का खर्च वहन करेंगे। ये राज्य कम्पनी सरकार की अनुमति के बिना किसी यूरोपीय को अपने यहाँ नौकरी नहीं देंगे।
- उपरोक्त शर्तों के आधार पर 29 सितम्बर 1803 को **भरतपुर राज्य** (महाराजा रणजीत सिंह) ने अंग्रेजों से संधि कर ली। 14 नवम्बर 1803 को **अलवर महाराजा** बख्तावर सिंह ने व 12 दिसम्बर 1803 ई. को **जयपुर नरेश** जगतसिंह द्वितीय ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से संधि की। **जोधपुर महाराजा मानसिंह** ने 22 दिसम्बर 1803 को अंग्रेजों से संधि की।
- **धौलपुर** के शासक **कीरत सिंह** ने मराठा आक्रमणों से सुरक्षा के लिए जनवरी 1804 ई. में अंग्रेजों से संधि कर ली।
- उदयपुर और कोटा के शासकों ने भी अंग्रेजों से संधि का प्रयास किया, मगर **लार्ड वेलेजली** ने इन राज्यों को अनुकूल प्रत्युत्तर नहीं भेजा।
- **भरतपुर** और **मालवा** में अंग्रेज सेना की विफलता के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी के संचालक मंडल ने वेलेजली की देशी राज्यों के साथ **संधि की नीति को अस्वीकार** कर दिया। इसी मुद्दे पर मतभेद के बाद **वेलेजली** ने इस्तीफा दे दिया। जुलाई 1805 में **कार्नवालिस** गवर्नर जनरल बना। कार्नवालिस देशी राज्यों के साथ की गई संधियाँ रद्द करना चाहता था, मगर शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। बाद में उसके उत्तराधिकारी **'जॉर्ज बार्लो'** ने 1806 ई. में अलवर व भरतपुर के अलावा सभी राजपूत राज्यों से हुई संधियाँ रद्द कर दी।

ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा राजपूताना की विभिन्न रियासतों के साथ की गई संधियाँ

क्र.सं.	रियासत	संधि तिथि एवं वर्ष	शासक
1	भरतपुर	29 सितम्बर, 1803 10 अप्रेल 1805	महाराजा रणजीत सिंह
2	अलवर	14 नवम्बर, 1803	बख्तावर सिंह
3	जयपुर	12 दिसम्बर, 1803	महाराजा जगत सिंह द्वितीय
4	जोधपुर	22 दिसम्बर, 1803	महाराजा मानसिंह
5	धौलपुर	29 जनवरी, 1804	कीरत सिंह

❖ भरतपुर राज्य के साथ कम्पनी के सम्बन्ध–

- उत्तर भारत में भरतपुर ही **प्रथम राज्य** था, जिसके साथ ईस्ट इंडिया कम्पनी ने संधि की। 29 सितम्बर 1803 को महाराजा रणजीत सिंह व अंग्रेजों के मध्य हुई इस संधि के अनुसार अंग्रेज भरतपुर राज्य पर आक्रमण नहीं करेंगे। यदि अन्य कोई राज्य आक्रमण करेगा, तो अंग्रेज भरतपुर की सहायता करेंगे। अंग्रेजों पर किसी शक्ति का आक्रमण होता है तो भरतपुर अंग्रेजों की सहायता करेगा।

16 राजस्थान में 1857 की क्रांति

राजस्थान में 1857 की क्रान्ति के अध्ययन से पहले इस क्रान्ति के प्रमुख कारणों को जानना आवश्यक है जो निम्न प्रकार है।

❖ 1857 की क्रान्ति के प्रमुख कारण–

- **लार्ड वैलेजली की सहायक संधि–** 19वीं शताब्दी के आरम्भ में राजस्थान में व्याप्त **अराजक स्थिति** (मराठा व पिण्डारियों से परेशान होकर) ने राजपूताना के राज्यों को ब्रिटिश समर्थन प्राप्त करने के लिए बाध्य कर दिया। ऐसी स्थिति में देशी रियासतों ने **ईस्ट इंडिया कम्पनी** के साथ संधियाँ की। इस सहायक संधि के तहत देशी रियासत को न केवल ब्रिटिश सेना को अपने यहाँ रखना पड़ता था बल्कि उसका खर्च भी उठाना पड़ता था। उस रियासत के विदेशी सम्बन्ध भी ब्रिटिश अधिकारियों के अधीन थे। सर्वप्रथम **हैदराबाद के निजाम** ने 1798 में अंग्रेजों से सहायक संधि की। राजस्थान में सर्वप्रथम 9 नवम्बर, 1817 को करौली के **राजा हरबक्षपाल** ने अधीनस्थ संधि की।
- **लार्ड डलहौजी की हड़प नीति–** सन् 1848 में **लार्ड डलहौजी** भारत का गर्वनर जनरल बनकर आया, उसने भारत में अंग्रेजी राज्य के विस्तार हेतु एक नए सिद्धान्त **'The Doctrine of Lapse'** (व्यपगत सिद्धान्त) का प्रतिपादन किया। इसके तहत –
  (i) यदि किसी राज्य का शासक **बिना जीवित उत्तराधिकारी** के मृत्यु को प्राप्त हो जाता था तो उसका राज्य भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया जाता था।
  (ii) शासक को बच्चा **गोद लेने की अनुमति** नहीं थी।
  (iii) इसके तहत **कुप्रबन्ध** के आधार पर भी राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया जाता था।

☞ सर्वप्रथम **डलहौजी** द्वारा 1848 में **सतारा** को और उसके बाद **जैतपुर, सम्भलपुर** (1849) , **बघाट** (1850), **झांसी** (1853) तथा **नागपुर** (1854) आदि रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना दिया गया।

☞ 13 फरवरी 1856 को कुशासन का आरोप लगाकर लार्ड डलहौजी की विलय नीति के तहत **अवध** (नवाब वाजिद अली शाह) को औपचारिक रूप से ब्रिटिश साम्राज्य का अंग घोषित कर दिया गया।

- डलहौजी द्वारा **नाना साहब धोधुपंत** की पेंशन बंद कर देना।
- डलहौजी द्वारा मुगल सम्राट व अवध की **बेगमों का अपमान** करना।

❖ तात्कालिक कारण –

- अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के साथ **भेदभाव** व उच्च पदों पर नियुक्तियों से वंचित करना।
- लार्ड केनिंग द्वारा सैनिकों के लिए **'समुद्र पारीय सेवा'** की अनिवार्यता लागू करना।
- 1833 के चार्टर एक्ट द्वारा ईसाई मिशनरियों को भारत में **ईसाई धर्म प्रचार** की अनुमति देना।
- **धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम** 1856 के द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले लोगों को अपनी पैतृक सम्पति का हकदार माना गया, उन्हें नौकरियों में पदोन्नति, शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश की सुविधा दी गई।
- ब्राऊन बैस के स्थान पर **'एनफील्ड राइफल्स'** लगाना, जिसमें गाय व सुअर की **चर्बी वाले कारतूस** भरे जाते थे।

☞ **एनफील्ड राईफल** का सर्वप्रथम प्रयोग **किमिया युद्ध** में किया गया, भारत में इसका प्रशिक्षण जनवरी, 1857 में शुरू हुआ। इस राईफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली कि इस बन्दुक के कारतुस में **गाय** व **सुअर की चर्बी** लगी होती है। इस बन्दुक का सर्वप्रथम विरोध 26 फरवरी 1857 को **बुरहानपुर** (मध्यप्रदेश) छावनी में किया गया

❖ आर्थिक कारण–

- ईस्ट इंडिया कम्पनी के 100 वर्षों के शासन काल में भारतीय **अर्थव्यवस्था** के ढांचे को छिन्न–भिन्न कर देना।
- भारत के **उद्योग धंधों** व **हस्तशिल्प** का नष्ट हो जाना।
- ग्रामीण, हस्तशिल्पी, कुटीर उद्यमियों का **बेरोजगार** हो जाना।

❖ राजस्थान के सन्दर्भ में 1857 की क्रान्ति के कारण–

- राजपूताना के शासकों के साथ सहायक संधियों के बाद अंग्रेजों ने देशी रियासतों के प्रशासन व **आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप** करना प्रारम्भ कर दिया।
- अंग्रेजों ने रियासती शासकों व सामन्तों के विशेषाधिकारों में कटौती कर दी और **शासक वर्ग की उपेक्षा** की जिससे आमजन मानस में अंग्रेजों के प्रति नकारात्मक धारणा बनी।
- अंग्रेजी हस्तक्षेप से राज्यों की आय कम हो गई इसलिए शासकों को अपने **खर्चों में कटौती** करनी पड़ी।
- अंग्रेजों ने **उदयपुर रियासत** में प्रधान की नियुक्ति को लेकर, **जयपुर रियासत** में 1818 में महाराजा जगतसिंह की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी के चयन को लेकर, **कोटा राज्य** में 1819 में महाराव उम्मेदसिंह की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी के चयन को

- नाना साहब व लक्ष्मीबाई के हारने के बाद तांत्या टोपे जयपुर व हाड़ौती से **सैनिक सहयोग** की आशा से अपनी सेना के साथ राजस्थान आया।
  तांत्या टोपे **दो बार** राजस्थान आया–
- प्रथम बार– **मांडलगढ़** (भीलवाड़ा) 8 अगस्त, 1857
- दूसरी बार– **बांसवाड़ा,** दिसम्बर 1857
- तांत्या टोपे की सेना में लगभग 5000 ग्वालियर के विद्रोही व 4000 भील सैनिक थे।
- 9 अगस्त 1857 को कुहाड़ा (भीलवाड़ा, कोठारी किनारे) **'जनरल रॉबर्ट्स'** की सेना व तांत्या टोपे के बीच युद्ध हुआ। तांत्या टोपे को पीछे हटना पड़ा।
- तांत्या ने कोठारिया **रावत जोधसिंह** से रसद सामग्री प्राप्त की, यहाँ से नाथद्वारा पहुँचे और श्रीनाथ जी के दर्शन किए।
- 13 अगस्त 1857 रूकमगढ़ (कोठारिया के पास,राजसमंद) में **'राबर्टस की सेना'** से फिर मुठभेड़ हुई, तांत्या के 700 सैनिक मारे गए, तांत्या हार कर झालावाड़ पहुँचा।
- **रेलायता का युद्ध**– तांत्या को झालावाड़ की सेनाओं से सहयोग मिला, उसने यहाँ के शासक **पृथ्वीसिंह** को **रेलायता नामक स्थान** पर हराया व बंदी बनाकर झालावाड़ पर अधिकार कर लिया। वहीं पर **'ब्रिगेडियर पार्क'** व तांत्या के बीच युद्ध हुआ। तांत्या हारकर ग्वालियर (एम.पी.) चला गया।
- तांत्या टोपे का दूसरी बार राजस्थान आगमन दिसम्बर 1857 में हुआ।
- 11 दिसम्बर 1857 को बाँसवाड़ा **'महारावल लक्ष्मण सिंह'** को पराजित कर बाँसवाड़ा पर अधिकार कर लिया। परन्तु अंग्रेज अधिकारी **'लिन माउथ'** की सेना ने उसे वहाँ से भगा दिया। बाँसवाड़ा से जनवरी 1858 में टोंक पहुँचे। टोंक के जागीरदार **नासिर मोहम्मद खाँ** ने तांत्या का साथ दिया। बनास नदी किनारे व अमीरगढ़ के किले के निकट क्रान्तिकारियों की सेना ने नवाब की सेना को हरा दिया। सूचना मिलने पर **मेजर ईडन** (जयपुर) ने इनका दमन किया।
- 16 जनवरी को शावर्स ने **दौसा** में तांत्या टोपे की सेना पर आक्रमण किया परन्तु वह बच निकला, फिर 21 जनवरी 1859 को सीकर जा पहुँचा। **कर्नल होम्स** ने सीकर पहुँचकर तांत्या पर आक्रमण किया। तांत्या के क्रांतिकारी सैनिक भाग छुटे, हार के बाद तांत्या टोपे जंगल की ओर भाग गया। अपने मित्र नरवर के जागीरदार **'मानसिंह नरूका'** के विश्वास घात के कारण तांत्या टोपे **नरवर के जंगलों** से गिरफ्तार किए गए।
- तांत्या टोपे को 8 अप्रेल 1859 को **न्यायाधीश बाग** ने फाँसी की सजा सुनाई और 18 अप्रेल 1859 **शिवपुरी** (मध्यप्रदेश) में फाँसी दी गई।

नोट– तांत्या टोपे **जैसलमेर** के अलावा राजपूताने की प्रत्येक रियासत में घूमा।

☞ ब्रिटिश अधिकारी **कैप्टन शॉवर्स** ने अपनी पुस्तक में तांत्या टोपे को फाँसी देने के लिए सरकार की कटू आलोचना की। उन्होने लिखा है कि तांत्या ब्रिटिश राज्य का निवासी और नागरिक नहीं था। उस पर राजद्रोह का अपराध लगाना कहाँ तक न्यायोचित कहा जा सकता है। इतिहास में तांत्या को फाँसी देना ब्रिटिश सरकार का अपराध समझा जायेगा और आने वाली पीढ़ी पूछेगी कि इस सजा के लिए किसने स्वीकृति दी और किसने पुष्टि की।

अन्य प्रमुख तथ्य–

- विद्रोह के समय राजस्थान में स्थित 6 छावनियों में सबसे शक्तिशाली छावनी **'नसीराबाद'** थी।
- उस समय राजस्थान में **अंग्रेजी सत्ता का केन्द्र** व प्रतीक अजमेर था, अजमेर में गोला बारूद तथा शस्त्रागार था। सरकारी खजाना एवं अन्य राजकीय सम्पत्ति अजमेर में थी।
- **प्रिचार्ड** ने अपनी पुस्तक **'द म्यूटिनीज इन राजस्थान'** में लिखा है कि ''आउवा के ठाकुर का झगड़ा अपने राजा के साथ था अंग्रेजी सरकार से नहीं।''
- **प्रिचार्ड** ने अपनी पुस्तक **'द म्यूटिनीज इन राजस्थान'** में लिखा है कि ''यदि अजमेर पर क्रांतिकारियों का अधिकार हो जाता तो राजस्थान के शासक उनके सहयोगी बन जाते।''
- जयपुर **एकमात्र रियासत** थी, जिसमें राजा के साथ वहाँ की आम जनता ने भी अंग्रेजों का साथ दिया था।
- ''भारत में अगर बहादुरशाह जफर के बदले कोई योग्य नेता होता तो अंग्रेज हार जाते''– **जॉन लॉरेन्स**

नाम स्थान	विद्रोह की तिथि	प्रमुख क्रान्तिकारी
नसीराबाद	28 मई 1857	बख्तावर सिंह
भरतपुर	31 मई 1857	गुर्जर व मेव
नीमच	3 जून 1857	मोहम्मद अली बेग व हीरासिंह
देवली	5 जून 1857	नीमच के क्रांतिकारी
टोंक	14 जून 1857	मीर आलम खाँ, नासिर मुहम्मद खाँ
अलवर	11 जुलाई 1857	नीमच के क्रांतिकारी
अजमेर केन्द्रीय कारागार	9 अगस्त 1857	केन्द्रीय कारागार के कैदी
एरिनपुरा	21 अगस्त 1857	मोती खाँ, शीतलप्रसाद, तिलकराम
आऊवा	8 सितम्बर 1857	कुशालसिंह, शिवनाथसिंह
धौलपुर	12 अक्टुबर 1857	रामचन्द्र व हीरालाल
कोटा	15 अक्टुबर 1857	जयदयाल, मेहराब खाँ

17 1857 की क्रांति के बाद सुधारों और राजनीतिक चेतना का काल

- ब्रिटिश सरकार द्वारा 1857 के विद्रोह को सफलता पूर्वक कुचल दिया गया, फिर भी ब्रिटिश सरकार इस निष्कर्ष पर पहुँची थी कि उसे भारत में अपना साम्राज्य बनाए रखना है तो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के स्थान पर उसका स्वयं का प्रत्यक्ष नियन्त्रण रखना आवश्यक है। इसके बाद 2 अगस्त 1958 को ब्रिटिश संसद द्वारा **एक अधिनियम** पारित किया जिसके तहत ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त हुआ और ब्रिटेन की महारानी **भारत की सम्राज्ञी** घोषित की गई। महारानी विक्टोरिया की यह घोषणा 1 नवम्बर 1958 को इलाहाबाद में एक दरबार आयोजित कर भारत के प्रथम गर्वनर जनरल और वायसराय **लार्ड केनिंग** द्वारा पढ़कर सुनाई गई।
- महारानी विक्टोरिया की इस घोषणा के परिणामस्वरूप भारत के सभी देशी राजा पूर्णरूप से महारानी के अधीन हो गए। भारत के देशी राज्यों को यह विश्वास दिलाया गया कि उनके सभी अधिकारों की रक्षा की जाएगी और सभी रीति–रिवाजों और परम्पराओं का पालन किया जाएगा।

❖ राजस्थान के राजा, महाराजाओं द्वारा घोषणा का स्वागत–

- राजस्थान के सभी राजाओं ने महारानी विक्टोरिया की घोषणा का उत्साहपूर्वक स्वागत किया कई राजाओं ने तो अपनी स्वामीभक्ति प्रकट करने के लिए **समारोह** भी आयोजित किए जो इस बात का प्रमाण था कि राजा, महाराजा हर कीमत पर अपनी गद्दी बचाए रखना चाहते थे। जोधपुर, नीमच और प्रतापगढ़ में समारोह आयोजित कर प्रसन्नता प्रकट की गई। **नीमच** में ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेन्ट को सलामी दी गई व रात्रि में आतिशबाजी की गई। मेवाड़ में सार्वजनिक स्थानों पर रोशनी व आतिशबाजी की गई व यूरोपीय सैनिकों को **रात्रि भोज** दिया गया। उदयपुर महाराणा ने ब्रिटिश महारानी को एक **खरीता** भेजा गया जिसमें भारत में ब्रिटिश शासन स्थापित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की गई।

☞ **खरीता–** वह लिफाफा जिसमें राजाओं के आदेश, पत्र आदि भेजे जाते थे।

- इसके बाद देशी राज्यों ने ब्रिटेन के साथ नमक, रेल्वे, मुद्रा, डाक और निष्क्रमण **संधियाँ** की। जिनके परिणामस्वरूप राज्यों में संचार साधनों और रेल सुविधा का विस्तार हुआ। ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेन्टों द्वारा राजस्थान के राजा–महाराजाओं को अपने–अपने राज्यों में प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक सुधार लागु करने का परामर्श दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेन्ट राजा–महाराजाओं के आन्तरिक कार्यों में भी **हस्तक्षेप** करने लगे।

❖ मेवाड़ राज्य में सुधार–

- 16 नवम्बर 1861 को महाराणा स्वरूपसिंह की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी **शम्भूसिंह** अव्यस्क थे। अतः राज्य संचालन के लिए ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेन्ट द्वारा एक परिषद् की नियुक्ति की गई, लेकिन यह परिषद् सफलतापूर्वक कार्य संचालन नहीं कर पाई और मेवाड़ का प्रशासन भ्रष्टाचारी हो गया। 19 अगस्त 1863 को तत्कालीन पॉलिटिकल एजेन्ट **कर्नल ईडन** ने एक आदेश जारी कर मेवाड़ का समूचा प्रशासन स्वयं ने संभाल लिया।
- इस आदेश का नागरिकों और जागीरदारों ने विरोध किया और स्थिति तनावपूर्ण हो गई। जागीरदारों ने ब्रिटिश सरकार को एक पत्र लिखकर मेवाड़ का प्रशासन **5 व्यक्तियों** की एक **परामर्शदात्री समिति** को सौंपने की माँग की। इस अवधि में मेवाड़ में कानून का शासन नहीं था, शिशुओं को खरीदना–बेचना और अभियुक्तों को बर्बरतापूर्वक दण्ड देना एक सामान्य बात थी। राजस्व एकत्र करने की पद्धति में बदलाव के परिणामस्वरूप मेवाड़ राज्य की आय भी बढ़ गई।
- सामाजिक सुधारों के तहत **शम्भूरत्न पाठशाला** (राजकीय विद्यालय) व राजकीय अस्पताल की स्थापना की गई। शहर में नागरिकों की सुरक्षा हेतु **सशस्त्र सैनिक** तैनात किए गए। नगर की स्वच्छता और मंदिरों की देखभाल पर भी ध्यान दिया गया। अकाल, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए एक पृथक विभाग की स्थापना की। मेवाड़ राज्य में सड़कों का भी विकास हुआ। एक सरकारी आदेश जारी कर सती प्रथा रोकने, बेगार लिए जाने और स्त्रियों, बच्चों के क्रय–विक्रय को समाप्त घोषित कर दिया गया।
- इसी दौरान **23 सितम्बर 1863** को ब्रिटिश सरकार द्वारा एक आदेश जारी कर **'आन प्रथा'** को समाप्त कर दिया और यदि कोई व्यक्ति भविष्य में किसी को आन प्रथा की **शपथ** दिलाएगा, वह दण्ड का भागी होगा। उक्त सभी सुधारों को मेवाड़ के जागीरदारों, अधिकारियों और आम जनता ने अपने रीति–रिवाजों और परम्पराओं में ब्रिटिश सरकार का खुला हस्तक्षेप माना। इसका विरोध प्रकट करने के लिए **30 मार्च 1864** को समुचे शहर में **हड़ताल** की गई और **नगर सेठ चम्पालाल** के नेतृत्व में 3000 लोगों ने **कैप्टन ईडन** के निवास के सामने प्रदर्शन किया। जिसमें उन्होंने आन प्रथा पुनः शुरू करने, स्त्रियों और बच्चों का क्रय–विक्रय जारी रखने और व्यापारियों को परेशान नहीं करने की माँग की।
- 1870 ई. के आस–पास मेवाड़ राज्य को जिलों में विभाजित किया गया, सेना का पुनर्गठन किया गया व रेल्वे लाईन बिछाई गई।

18 राजस्थान के जनजाति एवं किसान आन्दोलन

राजस्थान में जनजाति आन्दोलन

- राजस्थान की जनजातियों में भील, मीणा, सहरिया व गरासिया आदि प्रमुख है। राजस्थान के **दक्षिणी व दक्षिणी पूर्वी भाग** में मेवाड़, बागड़ और हाड़ौती तथा ढूढ़ाड़ क्षेत्र में इन जनजातियों का बाहुल्य है।
- राजस्थान में शासकों के साथ जागीरदारों और साहुकारों ने भी इन जातियों का **शोषण किया**। **अंग्रेजों के आगमन** के साथ ही इनके परम्परागत अधिकारों और जीवन में हस्तक्षेप प्रारम्भ हो गया। ऐसी स्थिति में **19वीं शताब्दी** में कुछ जनसेवकों ने इन जातियों में **जागृति** पैदा की। परिणामस्वरूप राजस्थान में **1818 ई.** से लेकर स्वतंत्रता तक भीलों, मेर व मीणाओं के आन्दोलन हुए।

❖ मेर आन्दोलन (1818–1821 ई.)–

- **मेरवाड़ा क्षेत्र** इस आन्दोलन के आगमन से पूर्व तक किसी एक रियासत के अधीन न होकर **मेवाड़, मारवाड़** और **अजमेर** के अधीन आता था। ऐसी स्थिति में मेरों पर किसी भी एक राज्य का राजनीतिक व प्रशासनिक नियंत्रण नहीं था। मेर अपने आस–पास के क्षेत्र में **लूटपाट कर** अपना जीवन व्यतीत करते थे।
- अंग्रेजों ने मेरों को पूर्ण रूप से अपने **नियन्त्रण में** लेना चाहा, अंग्रेजों का यही प्रयास मेरों के **विद्रोह का प्रमुख कारण** बना।
- 1818 ई. में अंग्रेज **सुपरिन्टेन्डेट एफ. विल्डर** ने **'झाक गाँव'** में मेरों के साथ एक समझौता किया, जिसमें मेरों ने कभी लूटपाट न करने की सहमति प्रदान की।
- मार्च 1819 में **विल्डर ने मेरों** पर समझौता तोड़ने का आरोप लगाकर **मेरवाड़ा** पर आक्रमण कर दिया, जिससे मेर भड़क उठे।
- 1820 ई. में **'झाक'** नामक स्थान पर मेरों ने पुलिस चौकियों व थानों पर आक्रमण कर **सिपाहियों की हत्या** कर दी।
- जनवरी 1821 में **मेवाड़, मारवाड़ व अंग्रेजों** की संयुक्त सेनाओं ने मेरों पर आक्रमण कर इस विद्रोह का दमन कर दिया।

- **मेरवाड़ा रेजिमेंट**– मेरों के इस विद्रोह के दमन के बाद अंग्रेजों ने **1822** ई. में **'मेरवाड़ा रेजिमेंट'** का गठन किया। जिसमें मेर सैनिकों की भर्ती की गई।
- इस बटालियन का मुख्यालय **'ब्यावर'** में स्थापित किया गया। इस प्रकार **अंग्रेजों** ने **मेरों के विद्रोह** को मेरों द्वारा ही कुचलने की योजना बनाई।

❖ भील विद्रोह (1818–1860 ई.)–

- मेवाड़ में **मराठा हस्तक्षेप** के कारण महाराणा की सैन्य कमजोरी उजागर हो गई थी, जिसका लाभ उठाकर **भोमट क्षेत्र** के भील सरदारों ने **लूटमार** करना प्रारम्भ कर दिया। **भील मुखिया** (गमेती) अपने क्षेत्रों से गुजरने वाले माल व यात्रियों से **'बोलाई'** (सुरक्षा कर) तथा **गाँवों** की चौकीदारी के बदले **'रखवाली'** (चौकीदारी कर) वसूल करने लगे।
- 13 जनवरी, 1818 को **मेवाड़ महाराणा भीमसिंह** ने अंग्रेजों से सहायक संधि की, जिसके तहत अंग्रेजों को राज्य के आंतरिक मामलों में **हस्तक्षेप करने का अधिकार** मिल गया। मेवाड़ के पॉलिटिकल एजेन्ट **कर्नल टॉड** ने भोमट क्षेत्र पर नियन्त्रण स्थापित करने का प्रयास किया।
- अंग्रेजों ने सर्वप्रथम **1818** में भीलों द्वारा लिए जाने वाले **रखवाली कर** व **बोलाई कर** पर रोक लगाने की कोशिश की। ब्रिटिश साम्राज्य के प्रतिबन्धों ने भीलों को **विद्रोह** करने के लिए बाध्य कर दिया। भीलों ने अपने इन परम्परागत अधिकारों को छोड़ने से इन्कार करते हुए अंग्रेजों व **उदयपुर राज्य** के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। **(स्रोत– राजस्थान का स्वतंत्रता आन्दोलन एवं शौर्य परम्परा, कक्षा–9)**
- यह राजस्थान का **प्रथम भील विद्रोह** था, जो **'उदयपुर राज्य'** में ही आरम्भ हुआ।
- जनवरी 1823 से दिसम्बर 1823 के मध्य **कर्नल लूम्बे** के नेतृत्त्व में अंग्रेजों व उदयपुर की संयुक्त सेना ने इस **भील विद्रोह का दमन** कर दिया।

- **लिम्बाराबारू विद्रोह**– भोमट क्षेत्र के भीलों से प्रेरित होकर इसी समय **डूँगरपुर** राज्य के **लिम्बाराबारू** के भीलों ने विद्रोह कर दिया। अंग्रेजों ने इस विद्रोह के दमन के लिए सेना भेजी तो **12 मई, 1825 ई.** को लिम्बाराबारू के भीलों ने अंग्रेजों से **संधि** कर ली। इसी संधि के तहत अंग्रेजों ने भीलों पर कई कर थोप दिए।

- जनवरी 1826 ई. में गरासिया भील मुखिया **दौलतसिंह एवं गोविन्दा** ने अंग्रेजों व उदयपुर राज्य के खिलाफ विद्रोह कर दिया। दोनों के नेतृत्त्व में भीलों ने **पुलिस थानों पर आक्रमण** कर सैंकड़ों सिपाहियों को मार दिया। **कैप्टन ब्लैक** ने इस अव्यवस्था को नियन्त्रित किया।
- 1826 ई. में दोनों पक्षों में लम्बी वार्तालाप के बाद भीलों को **'बोलाई'** कर एकत्रित करने का अधिकार देकर इस क्षेत्र में शांति स्थापित की। 1826 ई. में **दौलतसिंह** के आत्मसमर्पण के बाद यह विद्रोह समाप्त हुआ।

❖ काँगड़ काण्ड –

- बीकानेर राज्य के **रतनगढ़** के काँगड़ (वर्तमान में जिला चुरू) के जागीरदार ने **1946** में **अकाल** व **सूखे** के समय भी किसानों से पुरा लगान वसूलना चाहा, जिसका किसानों ने विरोध किया।
- जिस पर वहाँ के जागीरदार **ठाकुर गोपसिंह** ने किसानों पर अत्याचार किए। इस **काँगड़ काण्ड** की **बीकानेर प्रजा परिषद्** सहित अन्य संगठनों ने निन्दा की।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. मेव कृषक आन्दोलन का मुख्य नेता कौन था?
यासीन खाँ **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–B, 2023)**

2. 1911 एवं 1912 ई में गोविन्द गुरू की गतिविधियों का केन्द्र.... ...था। **बेडसा** **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–A, 2023)**
(REET L- 2 (Punjabi) 2023)(CET 10+2 2023)

3. निम्नलिखित युग्मों में से कौनसा युग्म सुमेलित है? (किसान–किसान आन्दोलन)
रूपाजी एवं कृपाजी– बेंगू किसान आन्दोलन / नानक भील एवं देवीलाल गुर्जर– बीकानेर किसान आन्दोलन / नानजी एवं ठाकरी पटेल– बूँदी किसान आन्दोलन / देवा गुर्जर एवं भवानी शंकर – सीकर किसान आन्दोलन **(Food Safety Officer- 2023)**
रूपाजी एवं कृपाजी– बेंगू किसान आन्दोलन

4. गोविन्द गुरू किस आन्दोलन के नेता थे?
भील आन्दोलन **(Food Safety Officer- 2023)**

5. बेगूं किसान आंदोलन का नेतृत्व निम्नलिखित में से किसके द्वारा किया गया था? विजय सिंह पथिक / मोतीलाल पटेल / हरिभाऊ उपाध्याय / रामनारायण चौधरी **(EO/RO- 2023)**
रामनारायण चौधरी **(REET L- 2 (Urdu) 2023)**

6. 23 नवंबर, 1931 को किसने भरतपुर में व्यापक किसान विरोध का आयोजन किया और जिसके कारण उनकी गिरफ्तारी से लघु किसान आंदोलन समाप्त हुआ? नाथूराम शर्मा / भोजी लंबरदार / कुंभाराम आर्य / जननारायण व्यास
भोजी लंबरदार **(EO/RO- 2023)**

7. पथिक ने किस समाचार–पत्र के माध्यम से बिजौलिया कृषक आंदोलन को अन्य भारतीय समाचार–पत्रों तक पहुँचा दिया? प्रताप / राजस्थान केसरी / नवीन राजस्थान / प्रभात
प्रताप **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–A (संस्कृत शिक्षा) 2023)**
(लैब असिस्टेंट– 2022)(CET Graduation- 2023)

8. भीलों में धर्मसुधार के लिए 'भगत पंथ' की स्थापना किसने की?
गोविन्द गुरु **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–A, 2023)**

9. मोतीलाल तेजावत ..... ठिकाने में कामदार थे।
झाडोल **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप– B (संस्कृत शिक्षा) 2023)**

10. निम्नलिखित ठिकानों में से किसने 'चँवरी कर' लगाया?
बिजौलिया **(CET Graduation- 2023)**

11. किसके नेतृत्व में, 25 अप्रैल, 1934, को कटराथल में आयोजित विशाल महिला सम्मेलन में हजारों महिलाओं ने भाग लिया?
किशोरी देवी **(CET Graduation- 2023)**

12. अलवर के किस शासक के समय नीमूचाणा कांड हुआ?
महाराजा जय सिंह **(CET Graduation- 2023)**

13. किसके नेतृत्त्व में, शेखावाटी किसान आंदोलन में 10,000 से अधिक जाट महिलाओं ने भाग लिया?
किशोरी देवी **(CET Graduation- 2023)**

14. 'मेवाड़ की पुकार' 21 सूत्रीय मांगपत्र का सम्बन्ध किससे था?
मोतीलाल तेजावत **(CET Graduation- 2023)**
(Librarian Grade III -2022)(JEN Elec. Mech. Digree- 2022)

15. किस किसान आन्दोलन के संदर्भ में ट्रेंच आयोग का गठन किया गया था? **बेगूं आन्दोलन** **(CET 10+2 2023)**
(JEN Agriculture- 2022)(REET L- 1 2023)

16. दूधवाखारा आन्दोलन किस रियासत से सम्बन्धित है?
बीकानेर **(REET L- 2 (sindhi) 2023)(हाईकोर्ट LDC- 2023)**

17. बूंदी रियासत के बरड़ किसान आन्दोलन का नेता कौन था?
नयनूराम शर्मा **(वनरक्षक– 2022)(REET L- 2 (English) 2023)**

18. 'सम्प सभा' की स्थापना किसने की थी?
गोविंद गुरु **(REET L- 2 (Sanskrit) 2023)**

19. निम्नांकित में से बिजौलिया आन्दोलन के समय बिजौलिया का ठिकानेदार कौन था?
तखतसिंह / अमरसिंह / भोपालसिंह / राव कृष्ण सिंह
राव कृष्ण सिंह **(PTI Grade-II 2023)**

20. 1921 की चाँदखेरी नामक घटना किस किसान आंदोलन से सम्बन्धित है? शेखावाटी किसान आंदोलन / मारवाड़ किसान आंदोलन / बेगूं किसान आंदोलन / दूधवाखारा किसान आंदोलन
बेगूं किसान आंदोलन **(PTI Grade-II 2023)**

21. 'सीताराम साधु' का सम्बन्ध किस आन्दोलन से था?
गौ–रक्षा / किसान / शिक्षा / जन–जातीय
किसान **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–B - 2023)**

22. बरड़ का किसान आन्दोलन किस भूतपूर्व देशी रियासत से सम्बंधित है? **बूँदी** **(वनपाल– 2022)(वरिष्ठ अ. ग्रुप–C - 2023)**

23. 'कूदण' की घटना किस किसान आंदोलन से सम्बन्धित है?
सीकर **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–D - 2023)**

24. निम्न में से राजस्थान का प्रथम किसान आन्दोलन कौन सा है?
बिजोलिया किसान आंदोलन **(मोटर वाहन SI - 2022)**

25. मारवाड़ किसान आंदोलन का प्रमुख नेता कौन था?
जय नारायण व्यास **(मोटर वाहन SI - 2022)**

19 राजस्थान में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन

राजस्थान की प्रमुख सामाजिक संस्थाएँ

❖ देश हितैषणी सभा, उदयपुर (1877)–

- मेवाड़ महाराणा **सज्जनसिंह** की अध्यक्षता में उदयपुर में 2 जुलाई, 1877 को **'देश हितैषणी सभा'** की स्थापना की गई। इसका मुख्य उद्देश्य वैवाहिक समस्याओं का समाधान करना था। इस संस्था ने राजपूतों में **विवाह के खर्चे** को कम करने तथा राजपूतों, ब्राह्मणों व महाजनों के लिए **बहुविवाह** व **त्याग** सम्बन्धी नियम बनाए।

❖ परोपकारिणी सभा, उदयपुर (1883)–

- **स्वामी दयानन्द सरस्वती** ने फरवरी 1883 में **उदयपुर** में परोपकारिणी सभा की स्थापना की।

☞ **नोट–** परोपकारिणी सभा व **स्वामी दयानन्द सरस्वती** के बारे में विस्तृत अध्ययन के लिए इस पुस्तक के अध्याय 17 को देखें।

❖ वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा, अजमेर (1888–89)–

- राजपूताना के तत्कालीन कार्यवाहक **ए.जी.जी.** **कर्नल वाल्टर** ने राजपूताना के शासक वर्ग में फैली सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए **9 मार्च, 1888** को **अजमेर** में सभी रियासतों के प्रभावशाली सामन्तों, जागीरदारों और चारणों को बुलाकर इस सभा की स्थापना की।
- 22 फरवरी, 1889 को पुनः **अजमेर** में सभी रियासतों के प्रतिनिधि एकत्र हुए। जिसमें इस सभा का नाम **'वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी'** सभा रखा गया। कर्नल वाल्टर को इसका **अध्यक्ष** व **अजमेर के कमिश्नर** को उपाध्यक्ष बनाया गया। इस सभा ने विवाह की आयु बढ़ाने, बहुविवाह बंद करने, त्याग प्रथा व मृत्यु भोज को सीमित करने के प्रयास किए।

❖ सर्वहितकारिणी सभा, चुरू (1907)–

- **स्वामी गोपालदास** ने पंडित **कन्हैयालाल ढूंढ** तथा पंडित श्रीराम मास्टर के सहयोग से 1907 में **चुरू** में **सर्वहितकारिणी सभा** की स्थापना की। यह सभा आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित थी। इस सभा की राष्ट्रीय गतिविधियों के कारण बीकानेर महाराजा ने इसके प्रति दमनकारी नीति अपनाई। अपनी राजनीतिक गतिविधियों के कारण यह सभा **'चुरू की कांग्रेस'** कहलाई।
- इस सभा के अन्तर्गत स्वामी गोपालदास ने चुरू में बालिका शिक्षा के लिए 1912 में **'सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला'** तथा हरिजन वर्ग की शिक्षा के लिए **'कबीर पाठशाला'** की स्थापना की।

❖ हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर (1912)–

- हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना **भरतपुर** में **जगन्नाथ दास अधिकारी** ने 1912 में की थी। इस समिति द्वारा 1927 में भरतपुर में पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा की अध्यक्षता में **'विश्व हिन्दी सम्मेलन'** का आयोजन करवाया।

❖ अमर सेवा समिति, चिड़ावा (1922)–,

- **मास्टर प्यारेलाल गुप्ता** ने **चिड़ावा** में 1922 में अमरसेवा समिति की स्थापना की। इस समिति ने चिड़ावा में **एक स्कूल** खोला तथा लोगों में राष्ट्रीय भावना का प्रसार किया।

❖ भील सेवा मण्डल, मेवाड़ (1922)–

- भील सेवा मण्डल की स्थापना **अमृतलाल विठ्ठल दास ठक्कर** (ठक्कर बापा) ने **1922** में की। इस संस्था ने भीलों की स्थिति सुधारने के लिए कार्य किया। ठक्कर बापा ने ही जनजातियों को **'आदिवासी'** नाम दिया।

❖ राजस्थान चरखा संघ, अजमेर (1925)–

- **सेठ जमनालाल बजाज** ने 1925 में **अजमेर** में चरखा संघ की स्थापना की। जिसे 1927 में **जयपुर** स्थानान्तरित कर दिया गया। 1925 से लेकर 1938 तक जमनालाल बजाज ही चरखा संघ के अध्यक्ष रहे।

❖ जीवन कुटीर, वनस्थली, टोंक (1929)–

- हीरालाल शास्त्री ने टोंक के **वनस्थली** में **1929** में जीवनकुटीर नामक संस्था की स्थापना की। **(स्रोत– राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत, डॉ. जैन एवं माली)**
- शास्त्री जी ने यहाँ सामाजिक कार्यकत्ताओं के दल को प्रशिक्षित किया। शास्त्री जी व उनकी पत्नी **रत्ना शास्त्री** ने अपनी पुत्री **शांताबाई** की आकस्मिक मृत्यु के बाद यहाँ शांताबाई शिक्षा कुटीर के नाम से एक विद्यालय की स्थापना की, जो वर्तमान में **'वनस्थली विद्यापीठ'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- **पंडित नेहरू** ने कहा था कि ''यदि मैं लड़की होता तो मैं तालिम के लिए वनस्थली ही आता''।

❖ राजस्थान हिन्दी विद्यापीठ, उदयपुर (1931)–

- **जनार्दन राय नागर** ने 21 अगस्त, 1931 में **उदयपुर** में हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करना था।

20 राजस्थान में प्रजामण्डल व स्वतंत्रता आन्दोलन

❖ कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन– 1938

- **सुभाषचन्द्र बोस** की अध्यक्षता में आयोजित इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार यह निर्णय किया कि कांग्रेस को **रियासती जनता** के संघर्ष में साथ देना चाहिए। इस अधिवेशन में **उत्तरदायी शासन की स्थापना** के लिए स्थानीय रियासतों में प्रजामंडलों की स्थापना का प्रस्ताव पारित किया गया।
- इस अधिवेशन के बाद ही राजस्थान की अधिकांश रियासतों में **प्रजामंडलों** या **प्रजा परिषदों** की स्थापना हुई तथा राजनीतिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन शुरू किए गए।
- प्रजामण्डलों की स्थापना से पूर्व भी बुद्धिजीवी वर्ग ने ब्रिटिश भारत के समान रियासतों में भी अनेक संगठन बनाए। ऐसे संगठनों में 1918 ई. में **राजपूताना मध्य भारत सभा**, 1919 ई. में **राजस्थान सेवा संघ** तथा **1927 ई.** में **अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्** प्रमुख थे। इन संगठनों के माध्यम से स्वतंत्रता आन्दोलन में तीव्रता आई।

❖ जयपुर प्रजामंडल–

- जयपुर राज्य में जन–जागृति व राजनीतिक चेतना जगाने का सर्वप्रथम प्रयास **अर्जुनलाल सेठी** ने किया।
- अर्जुनलाल सेठी ने 1905 में जयपुर में **'जैन शिक्षा प्रचारक समिति'** की स्थापना की और 1907 में **'वर्धमान विद्यालय'** की स्थापना की। इसके बाद **आर्य समाज** व जयपुर हितकारिणी सभा ने भी युवाओं में राष्ट्रीय भावना पैदा की।
- हिन्दी को **राजभाषा** बनाने के लिए ठाकुर कल्याणसिंह व श्यामलाल वर्मा ने तथा **जमनालाल बजाज** ने **चरखा संघ** के माध्यम से जनजागृति पैदा करने का प्रयास किया।
- 5 अप्रैल, 1931 को जयपुर नगर में **'मोतीलाल दिवस'** मनाया गया।
- **प्रजामंडल की स्थापना**– जयपुर प्रजामंडल की स्थापना 1931 में **'कर्पूरचंद पाटनी'** ने जयपुर में की। लेकिन यह संस्था 5 वर्ष तक निर्जीव बनी रही।
- 1936–37 में **सेठ जमनालाल बजाज** और हीरालाल शास्त्री ने प्रजामंडल को पुनःकार्यशील (पुनर्गठन) किया। इसके अध्यक्ष **चिरंजीलाल मिश्र**, महामंत्री **हीरालाल शास्त्री** को तथा **कर्पुरचन्द पाटनी** को संयुक्त मंत्री बनाया गया।
- प्रजामंडल के प्रमुख सदस्य **बाबा हरिश्चन्द्र, हंस डी रॉय, लादुराम जोशी, टीकाराम पालीवाल** व **पूर्णचन्द्र जैन** थे।
- 8–9 मई, 1938 को **जमनालाल बजाज** की अध्यक्षता में जयपुर प्रजामंडल का **प्रथम अधिवेशन** हुआ। 30 मई, 1938 को राज्य ने किसी गैर पंजीकृत संस्था द्वारा सभा–सम्मेलन करना व सदस्य बनाना अवैध घोषित कर दिया। 16 दिसम्बर, 1938 को जयपुर राज्य ने जमनालाल बजाज के जयपुर **प्रवेश पर रोक** लगा दी।
- 1938 में **'शेखावाटी किसान सभा'** का जयपुर प्रजामंडल में विलय हुआ।
- **अवैध** घोषित होने के बाद प्रजामंडल का कार्यालय **आगरा** स्थानान्तरित कर दिया गया। 11 फरवरी, 1939 को बजाज ने आदेश का उल्लंघन कर **जयपुर में प्रवेश** किया, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही **हीरालाल शास्त्री**, **चिरंजीलाल, हरिश्चन्द्र, कपूरचंद पाटनी** व **हंस डी. राय** को भी गिरफ्तार किया गया।
- 5 फरवरी, 1939 से जयपुर प्रजामंडल ने सरकार की दमनकारी नीति के विरोध में सत्याग्रह किया, श्रीमती **दुर्गावती देवी शर्मा** के नेतृत्त्व में महिलाओं ने भी गिरफ्तारी दी।
- 2 अप्रैल, 1940 को जयपुर प्रजामंडल व सरकार के मध्य **समझौता** हुआ, इसी दिन जयपुर प्रजामंडल को **मान्यता प्रदान** कर पंजीकृत किया गया।
- हीरालाल शास्त्री की प्रेरणा से **जयपुर हितकारिणी सभा** का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष **बालचंद शास्त्री** थे।
- 25 मई, 1940 को प्रजामंडल के अधिवेशन में जमनालाल बजाज ने उत्तरदायी शासन की माँग को पुनः दोहराया, **नवम्बर 1941** में **सीकर** में प्रजामंडल का तीसरा अधिवेशन हुआ।
- प्रजामंडल कार्यकारिणी से मतभेद होने पर चिरंजीलाल ने **'प्रजामंडल प्रगतिशील दल'** का गठन किया। फरवरी 1942 में जमनालाल बजाज के निधन से प्रजामंडल को धक्का लगा।

✦ **जेन्टलमेंस एग्रीमेंट–** 1942 में **भारत छोड़ो आन्दोलन** के समय प्रजामंडल ने महाराजा से उत्तरदायी शासन स्थापित करने की माँग की। प्रजामंडल के अध्यक्ष **हीरालाल शास्त्री** व जयपुर के प्रधानमंत्री **सर मिर्जा इस्माईल** के बीच एक समझौता 'जेन्टलमेंस एग्रीमेंट' हुआ।

- इस एग्रीमेंट में–(1) जयपुर राज्य द्वारा युद्ध में अंग्रेजों की सहायता नहीं करना, (2) प्रजामंडल को शांतिपूर्ण तरीकों से युद्ध विरोधी अभियान चलाने की स्वतंत्रता देना, (3) अंग्रेजी प्रांतों के किसी भी आन्दोलनकारी को जयपुर में प्रवेश से नहीं रोकना तथा (4) राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना की कार्यवाही करने (5) प्रजामण्डल महाराजा के विरूद्ध किसी प्रकार की सीधी कार्यवाही नहीं करेगा। उपरोक्त शर्तें सम्मिलित थी। इस समझौते के बाद प्रजामंडल ने भारत छोड़ों आन्दोलन को स्थगित रखा।

☞ **नोट– टोंक** राजस्थान की एकमात्र रियासत थी, जिसमें प्रजामंडल का गठन नहीं हुआ। **बीकानेर** (कलकत्ता में), **सिरोही** (बम्बई में), **भरतपुर** (रेवाड़ी) व **जैसलमेर** (जोधपुर में) प्रजामंडलों की स्थापना इन रियासतों से बाहर हुई थी।

क्र.सं.	नाम दिवस	दिनांक	रियासत
1.	जवाहर दिवस	14 नवम्बर 1930	जैसलमेर
2.	मोतीलाल दिवस	5 अप्रैल 1931	जयपुर
3.	जयसिंहपुरा गोलीकाण्ड दिवस	21 जुलाई 1934	शेखावाटी
4.	सीकर दिवस	26 मई 1935	सीकर
5.	कृष्णा दिवस	1936	जोधपुर
6.	उत्तरदायी शासन दिवस	28 मार्च 1941	जोधपुर
7.	मारवाड़ सत्याग्रह दिवस	26 जुलाई 1942	जोधपुर
8.	गाँधी उपवास दिवस	24 फरवरी 1943	जयपुर
9.	नेताजी दिवस	23 जनवरी 1946	बीकानेर
10.	किसान दिवस	6 जुलाई 1946	बीकानेर
11.	बीरबल दिवस	17 जुलाई 1946	बीकानेर
12.	मुक्ति दिवस	28 अक्टुबर 1946	जयपुर

प्रजामंडल व स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान शहीद हुए राजस्थानी

नाम	स्थान	दिनांक
प्रतापसिंह बारहठ	शाहपुरा	27 मई, 1918
नानक जी भील	बूँदी	02 अप्रैल, 1923
देवीलाल गुर्जर	बूँदी	02 अप्रैल, 1923
रूपा जी	बेगूँ	13 जुलाई, 1923
कृपा जी धाकड़	बेगूँ	13 जुलाई, 1923
बालमुकुन्द बिस्सा	जोधपुर	19 जून, 1942
नानाभाई खाँट	डूँगरपुर	18 जून, 1947
कालीबाई	डूँगरपुर	20 जून, 1947
हेमू कालानी	सक्कुर (पाकिस्तान)	21 जनवरी, 1943
सागरमल गोपा	जैसलमेर	01 अप्रैल, 1946
शहीद बीरबल सिंह	बीकानेर	01 जुलाई, 1946
ठाकुर छत्रसिंह	धौलपुर	08 अप्रैल, 1947
पंचम सिंह	धौलपुर	08 अप्रैल, 1947
रमेश स्वामी	भरतपुर	05 फरवरी, 1947
शांतिलाल	उदयपुर	05 अप्रैल, 1948
आनन्दीलाल	उदयपुर	05 अप्रैल, 1948

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. ठाकुर पंचम सिंह एवं ठाकुर छत्तर सिंह का सम्बन्ध किस स्थान के आन्दोलन से हैं?
   तसीमो **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–B - 2023)**
2. मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना वर्ष 1938 में..... की अध्यक्षता में की गई। **(CET 10+2 2023)**
   बलवंत सिंह मेहता **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–B, 2023)**
3. निम्नलिखित व्यक्तियों पर विचार कीजिए–
   (1) गोपालदास (2) खूबराम
   (3) सत्यनारायण (4) मानमल जैन
   इनमें से कौन बीकानेर राजद्रोह एव षड्यंत्र मामले में सम्मिलित थे?
   (i), (ii), (iii) **(Food Safety Officer- 2023)**
4. जयपुर में राजनीतिक चेतना के उदय और विकास में निम्न में से किसने योगदान दिया?
   अर्जुनलाल सेठी **(Food Safety Officer- 2023)**
5. मेवाड़ प्रजा मंडल की स्थापना ..... द्वारा की गई थी।
   माणिक्य लाल वर्मा **(EO/RO- 2023)**
6. राजस्थान के निम्नलिखित प्रजामंडलों पर विचार कीजिए:
   (i) मारवाड़ (ii) मेवाड़ (iii) बाँसवाड़ा
   इनका स्थापना के अनुसार सही कालानुक्रम है:
   (i), (ii), (iii) **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप– B, 2023)**
7. निम्नलिखित में से कौनसा (राजनीतिक कार्यकर्ता–संबंधित देश राज्य) सुमेलित नहीं है?
   कृष्णदत्त पालीवाल– धौलपुर/हरिमोहन माथुर– करौली/मथुरा दास माथुर– मारवाड़/गोपीलाल यादव– भरतपुर
   हरिमोहन माथुर– करौली **(CET Graduation- 2023)**
8. भरतपुर राज्य प्रजा संघ की स्थापना हुई –
   1928 में **(CET Graduation- 2023)**
9. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म (राजनीतिक कार्यकर्त्ता – संबंधित रियासती राज्य) सुमेलित नहीं है?
   मीठालाल व्यास– जैसलमेर/भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी– कोटा/किशनलाल जोशी– भरतपुर/पंडित हरिनारायण शर्मा – अलवर
   भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी – कोटा **(CET Graduation- 2023)**
10. भरतपुर राज्य के स्वतंत्रता आंदोलन में निम्न में से कौन एक नेता थे? **किशन लाल जोशी** **(CET Graduation- 2023)**
11. जेल में अन्याय के खिलाफ भूख हड़ताल के कारण मारवाड़ लोक परिषद् के किस नेता की मृत्यु 19 जून, 1942 को हुई?
    बाल मुकुंद बिस्सा **(CET Graduation- 2023)**
12. जमनालाल बजाज ने स्थापना की थी–
    जयपुर प्रजामंडल **(CET Graduation- 2023)**
13. किस रियासत में रघुवर दयाल गोयल ने 1942 में प्रजा मंडल की स्थापना की? **बीकानेर** **(CET 10+2 2023)**

21 राजस्थान का एकीकरण

- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में **19 रियासतें, 3 ठिकाने व 1 केन्द्रशासित प्रदेश** (अजमेर मेरवाड़ा) थे। इन देशी राज्यों, ठिकानों एवं केन्द्रशासित प्रदेश को एकसूत्र में पिरोकर एक सुदृढ़ प्रशासनिक इकाई **'राजस्थान'** का निर्माण हुआ।
- राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया 18 मार्च, 1948 से प्रारम्भ होकर 1 नवम्बर, 1956 तक **7 चरणों** में पूर्ण हुई। इसमें कुल **8 वर्ष 7 माह 14 दिन** का समय लगा।

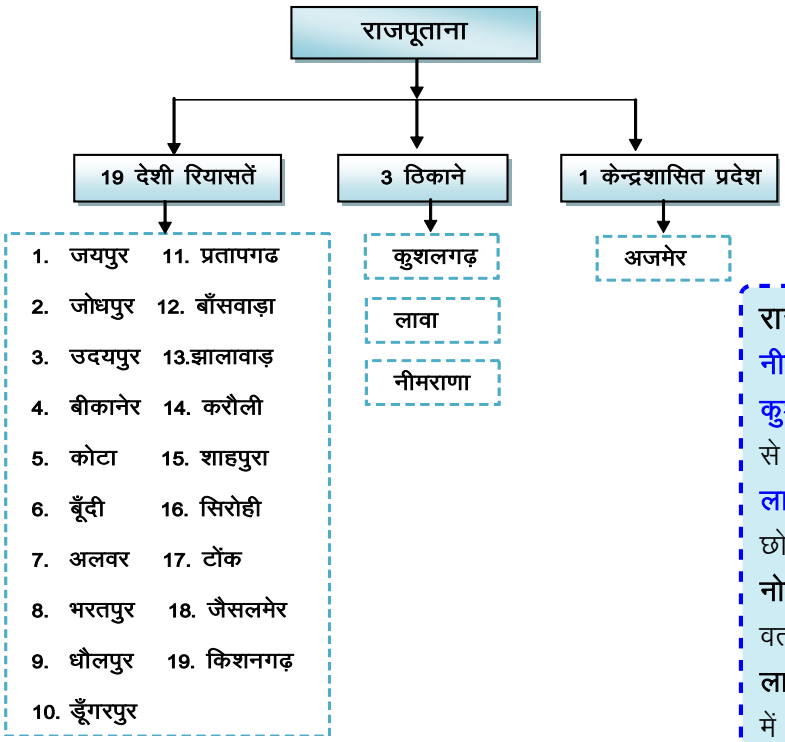

राजस्थान के 3 ठिकाने–

नीमराणा (वर्तमान जिला कोटपूतली–बहरोड़)– **राव राजेन्द्रसिंह**

कुशलगढ़– (बाँसवाड़ा)– **राव हरेन्द्र सिंह** (क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा ठिकाना था, 340 वर्ग मील)

लावा (टोंक)– **बंस प्रदीप सिंह** (क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा ठिकाना था, 20 वर्ग मील)

नोट– एकीकरण के समय लावा ठिकाना **जयपुर** रियासत में था, वर्तमान में लावा ठिकाना **टोंक** जिले में है। 19 जुलाई, 1948 को **लावा ठिकाने** को केन्द्रीय सरकार के आदेश से **'जयपुर रियासत'** में शामिल कर लिया गया था।

अंग्रेजों ने राजाओं की हैसियत के आधार पर तोपों की सलामी की संख्या निर्धारित कर रखी थी। अंग्रेजों ने तोपों की सलामी के आधार पर रियासतों को **दो श्रेणियों** में बाँट रखा था।

- **सेल्यूट स्टेट्स**– जिन रियासतों के शासकों को तोपों की सलामी दी जाती थी।
- **नॉन सेल्यूट स्टेट्स**– जिन रियासतों के शासकों को तोपों की सलामी नहीं दी जाती थी।
- रियासतों को तोपों की सलामी का अधिकार था, जबकि ठिकानों को तोप सलामी का अधिकार नहीं था।**शाहपुरा** व **किशनगढ़** अपवाद रूप में दो ऐसी रियासतें थी, जिनको तोप सलामी का अधिकार नहीं था।
- **19 तोपों की सलामी– उदयपुर**
- **17 तोपों की सलामी–** जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, भरतपुर, कोटा, बूंदी, करौली, टोंक
- **15 तोपों की सलामी–** जैसलमेर, सिरोही, अलवर, धौलपुर, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़
- **13 तोपों की सलामी– झालावाड़** ।

- 31 दिसम्बर, 1945 को उदयपुर में **पं. जवाहरलाल नेहरू** की अध्यक्षता में **'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्'** का अधिवेशन हुआ। इसी अधिवेशन में रियासतों के एकीकरण व राजपूताना सभा बनाने का निर्णय हुआ।
- **रियासती सचिवालय–** रियासतों की समस्या से निपटने हेतु 5 जुलाई, 1947 को रियासती सचिवालय की स्थापना की गई। जिसके अध्यक्ष **सरदार वल्लभ भाई पटेल** व सचिव **वी.पी. मेनन** थे। (वी.पी. मेनन की पुस्तक– द स्टोरी ऑफ इंटिग्रेशन ऑफ इंडियन स्टेट्स)
- रियासती सचिवालय ने घोषणा की, कि स्वतंत्र भारत में वे राज्य ही अपना अलग अस्तित्व रख सकेंगे, जिनकी जनसंख्या **10 लाख** व वार्षिक आय **1 करोड़** रू. होगी।
- इस मापदण्ड के अनुसार राजस्थान में केवल **जयपुर, जोधपुर, बीकानेर** व **मेवाड़** ही ऐसी रियासतें थी, जो अपना अलग अस्तित्व रख सकती थी। इस घोषणा के बाद छोटे–छोटे राज्यों में अस्तित्व के लिए खलबली मच गई।

- **प्रिवीपर्स–** स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न देशी रियासतों का भारत में विलय करते समय देशी रियासतों के शासकों को भरण–पोषण एवं खर्चों के लिए दिया जाने वाला शाही भत्ता या राजभत्ता 'प्रिवीपर्स' कहलाता था।
- एकीकरण के बाद सर्वाधिक प्रिवीपर्स किस शासक को– **जयपुर** (18 लाख रू. वार्षिक)
- एकीकरण के बाद रियासतों में न्यूनतम प्रिवीपर्स– **शाहपुरा** को (90 हजार रूपए वार्षिक)
- ठिकानों में सर्वाधिक प्रिवीपर्स– **कुशलगढ़ ठिकाना** (34,475 रु.)
- ठिकानों में न्यूनतम प्रिवीपर्स– **लावा ठिकाना** को (12550 रु.)
- चौथी पंचवर्षीय योजना (1969–1974) में 26वें संविधान संशोधन 1971 द्वारा प्रधानमंत्री **इंदिरा गाँधी** के शासनकाल में इन शासकों को दिया जाने वाला प्रिवीपर्स समाप्त कर दिया गया।

1946 में संविधान निर्मात्री सभा में राजस्थान के मनोनीत सदस्य–

क्र.सं.	नाम	रियासत	क्र.सं.	नाम	रियासत
1	हीरालाल शास्त्री	जयपुर	7	मुकुट बिहारी भार्गव	अजमेर–मेरवाड़ा
2	बलवंत सिंह मेहता	उदयपुर	8	जसवंत सिंह	बीकानेर
3	माणिक्यलाल वर्मा	उदयपुर	9	गोकुल लाल असावा	शाहपुरा
4	सरदार सिंह	खेतड़ी	10	दलेल सिंह	कोटा
5	राज बहादुर	भरतपुर	11	रामचन्द्र उपाध्याय	अलवर
6	जयनारायण व्यास	जोधपुर			

राजस्थान का एकीकरण

चरण	दिनाँक	उद्घाटनकर्त्ता	सम्मिलित होने वाले राज्य	राजधानी	संवैधानिक प्रमुख	मुख्यमंत्री / प्रधानमंत्री
प्रथम चरण मत्स्य संघ	18 मार्च, 1948	एन.वी. गाडगिल	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली रियासतें और नीमराणा ठिकाना	अलवर	धौलपुर महाराजा उदयभान सिंह (राजप्रमुख)	शोभाराम कुमावत (अलवर)
द्वितीय चरण पूर्व राजस्थान संघ	25 मार्च, 1948	नरहरि विष्णु गाडगिल	कोटा, बूँदी, झालावाड़, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा, किशनगढ़, शाहपुरा, टोंक व कुशलगढ़ ठिकाने	कोटा	कोटा महाराव भीमसिंह द्वितीय (राजप्रमुख)	गोकुल लाल असावा (शाहपुरा)
तृत्तीय चरण संयुक्त राजस्थान	18 अप्रैल, 1948	पं. जवाहर लाल नेहरू	राजस्थान संघ+उदयपुर	उदयपुर	मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह (राजप्रमुख)	माणिक्यलाल वर्मा
चतुर्थ चरण वृहद् राजस्थान	30 मार्च, 1949	सरदार पटेल	संयुक्त राजस्थान+जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर	जयपुर	महाराजा सवाई मानसिंह (राजप्रमुख), भूपालसिंह (महाराजा प्रमुख)	हीरालाल शास्त्री (जयपुर)
पंचम चरण संयुक्त वृहद् राजस्थान	15 मई, 1949	–	वृहद् राजस्थान+मत्स्य संघ	जयपुर	महाराजा सवाई मानसिंह	हीरालाल शास्त्री
षष्ठ चरण सिरोही का विलय राजस्थान	26 जनवरी, 1950	–	संयुक्त वृहद् राजस्थान में सिरोही (आबू व देलवाड़ा को छोड़कर) का विलय	जयपुर	महाराजा सवाई मानसिंह	हीरालाल शास्त्री
सप्तम चरण पुनर्गठित राजस्थान	1 नवम्बर, 1956		आबू व देलवाड़ा तहसील, अजमेर–मेरवाड़ा प्रदेश एवं सुनेल टप्पा का राजस्थान में विलय, सिरोंज (कोटा) मध्यप्रदेश को दिया	जयपुर	राज्यपाल गुरूमुख निहाल सिंह	मोहन लाल सुखाड़िया

22 राजस्थान के ऐतिहासिक व्यक्तित्त्व एवं स्वतंत्रता सेनानी

❖ अर्जुनलाल सेठी (1880–1941 ई.)

- राजस्थान के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी अर्जुनलाल सेठी का जन्म 9 सितम्बर, 1880 को जयपुर में एक जैन परिवार में हुआ था।
- उपनाम– **राजस्थान का दधिचि/जयपुर में जनजागृति का जन्मदाता।**
- प्रारम्भ में ये **चौमू के ठाकुर** देवीसिंह के शिक्षक व निजी सचिव नियुक्त हुए। जयपुर के तत्कालीन महाराजा माधोसिंह द्वितीय ने इन्हें जयपुर राज्य का प्रधानमंत्री बनाने की पेशकश की, तब इन्होंने यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि **"अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को भारत से कौन निकालेगा"**।
- सेठी ने **'जैन शिक्षा प्रचारक समिति'** की स्थापना 1905 में **जयपुर** में की। इसी के तहत इन्होंने जयपुर में 1907 में वर्धमान विद्यालय, **वर्धमान छात्रावास** और वर्धमान पुस्तकालय की स्थापना की। वर्धमान स्कूल का मुख्य कार्य क्रांतिकारियों को प्रशिक्षण देना था। **(स्रोत**– राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन एवं शौर्य परम्परा, कक्षा–9)
- इन्होंने मथुरा में एक **जैन विद्यालय** में अध्यापक के रूप में कार्य भी किया।
- **हॉर्डिंग बम कांड**– 23 दिसम्बर, 1912 को गवर्नर जनरल **लार्ड हॉर्डिंग** के जुलूस पर दिल्ली के चाँदनी चौक में बम फेंके जाने की रूपरेखा अर्जुनलाल ने तैयार की थी। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह बम राजस्थान के क्रांतिकारी **'जोरावर सिंह बारहठ'** ने बुर्का औढ़कर चाँदनी चौक स्थित मारवाड़ी लाइब्रेरी से फेंका था। इस बमकांड में अर्जुनलाल सेठी सहित कई क्रांतिकारी गिरफ्तार किये गये। **बालमुकुंद** और **अमीचन्द** को इस अपराध के लिए मृत्युदंड दिया गया। अर्जुनलाल सेठी के खिलाफ कोई सबूत नहीं मिलने पर बिना मुकदमा चलाए ही उन्हे जेल में बंद रखा गया। अर्जुनलाल सेठी के जयपुर प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया व उन्हे **वैलूर जेल (मद्रास)** में रखा गया।
- **निमेज हत्याकाण्ड** (आरा षड्यंत्र केस)– क्रांतिकारियों के पास धन का अभाव था, इसलिए बिहार में आरा जिले के **नीमेज ग्राम** में स्थित एक **धनिक महन्त (भगवानदास)** की हत्या कर उसका धन प्राप्त करने का निश्चय किया। इसके लिए अर्जुनलाल सेठी ने वर्धमान स्कूल के शिक्षक **विष्णुदत्त त्रिवेदी (मर्जापुर)** व छात्र मानकचंद (शोलापुर), मोतीचंद, जोरावर सिंह व जयचंद को नियुक्त किया गया। 20 मार्च, 1913 को इस महंत (भगवानदास) व उसके नौकर की हत्या कर दी, परन्तु दुर्भाग्यवश क्रांतिकारियों को धन हाथ नहीं लगा। इस हत्याकाण्ड में **मोतीचंद** को फाँसी दी गई और **विष्णुदत्त** को आजीवन कारावास की सजा दी गई। सबूत के अभाव के बावजूद **अर्जुनलाल सेठी** व **केसरीसिंह** को गिरफ्तार कर दोनों को **20–20 वर्ष** के कठोर कारावास की सजा दी गई।
- लगभग **7 वर्ष** बाद 1920 में उन्हें **वैलूर जेल** से छोड़ा गया, तब राजस्थान लौटते समय बालगंगाधर तिलक के नेतृत्त्व में 2000 लोगों ने **पूना रेलवे स्टेशन** पर इनका भव्य स्वागत किया। छात्रों ने **बग्घी के घोड़े** खोलकर उनकी बग्घी हाथों से खींची।
- अर्जुनलाल सेठी की पुस्तकें– **शुद्र मुक्ति, स्त्री मुक्ति, पार्श्वयज्ञ, मदन पराजय, 'महेन्द्र कुमार'** (नाटक)।
- अपने जीवन के अंतिम दिनों में **अजमेर** में मदरसे में **'करीम खाँ'** नाम रखकर मुसलमान बच्चों को अरबी और फारसी का अध्यापन करवाया।
- अपनी मृत्यु से पूर्व अर्जुनलाल सेठी ने स्वयं को जलाने की जगह **कब्र में दफनाने की इच्छा** व्यक्त की। 23 दिसम्बर, 1941 को अजमेर स्थित **'ख्वाजा साहब की दरगाह'** में अर्जुनलाल सेठी की मृत्यु हो गई, जहाँ पर लोगों ने उन्हे मुसलमान समझकर दफना दिया था।
- "दधिचि जैसा त्याग और दृढ़ता लेकर वह जन्मे थे और उसी दृढ़ता से उन्होंने मृत्यु को गले लगा लिया"–कथन **सुन्दरलाल** ने (भारत में **अंग्रेजीराज** नामक पुस्तक के रचनाकार)
- राजस्थान में राजनीतिक चेतना जागृत करने वालों में अर्जुनलाल सेठी अग्रगण्य माने जाते हैं।

❖ सेठ जमनालाल बजाज (1889–1942 ई.)

- इनका जन्म **काशी का बास** (सीकर) में 1889 ई. में हुआ।
- उपनाम– **राजस्थान का भामाशाह**।
- 1915 में गाँधीजी के सम्पर्क में आए और उनसे प्रभावित होकर जीवन भर गाँधीवादी विचारधारा को अपनाया।
- **नागपुर अधिवेशन** (1920) में इन्हें **'गाँधीजी के पाँचवे पुत्र'** की संज्ञा दी गई। 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कोषाध्यक्ष बने और आजीवन इस पद पर रहे।
- **असहयोग आन्दोलन** के दौरान इन्होंने 1921 में अंग्रेजों द्वारा दी गई **'रायबहादुर'** की उपाधि लौटा दी। 1 लाख रूपये तिलक स्वराज कोष में दिये तथा 11 हजार रूपये मुस्लिम लीग को दिये।
- 1921 में वर्धा में **'सत्याग्रह आश्रम'** की स्थापना की। 1924 में नागपुर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष बने।
- **चरखा संघ**– 1925 में अजमेर में चरखा संघ की स्थापना की, जिसे 1927 में **जयपुर** स्थानान्तरित कर दिया।
- जमनालाल बजाज राजस्थान में सर्वप्रथम उत्तरदायी शासन की माँग करने वाले व्यक्ति थे।

- 1957 में उदयपुर से व 1962 में **चित्तौड़गढ़** से सांसद रहे। 14 मार्च 1969 को इनका निधन हो गया।

❖ हीरालाल शास्त्री (1899–1974 ई.)–

- इनका जन्म 24 नवम्बर, 1899 ई. को **जोबनेर** कस्बे (जयपुर) में हुआ था।
- जयपुर राज्य की सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर 1927 में स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े और अर्जुनलाल सेठी के सम्पर्क में आए।
- इन्होंने **वनस्थली ग्राम** (निवाई, टोंक) में **1929** में **'जीवन कुटीर'** नामक संस्था की स्थापना की। यही संस्था आगे चलकर वनस्थली विद्यापीठ के नाम से प्रसिद्ध हुई। इनकी समाधि **वनस्थली विद्यापीठ** (टोंक) में है।
- 1936 में **जयपुर प्रजामंडल** की पुनः स्थापना हीरालाल शास्त्री व जमनालाल बजाज ने की थी।
- **जेन्टलमैन्स एग्रीमेन्ट 1942**– यह समझौता जयपुर प्रजामंडल के अध्यक्ष **हीरालाल शास्त्री** व जयपुर के प्रधानमंत्री **सर मिर्जा इस्माईल** के मध्य हुआ। जयपुर सरकार ने युद्ध में अंग्रेजों को कोई भी मदद नहीं करने व शीघ्र ही उत्तरदायी शासन स्थापना का वादा किया।
- इन्हें राजस्थान के एकीकरण के **चौथे चरण** में 30 मार्च, 1949 को **वृहत् राजस्थान का प्रधानमंत्री** बनाया गया। ये राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री थे। ये 30 मार्च, 1949 से 5 जनवरी, 1951 तक मुख्यमंत्री रहे।
- 1957–1962 तक सवाईमाधोपुर से **कांग्रेस के सांसद रहे।**
- इनकी आत्मकथा– **प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र।**
- इन्होंने लोकप्रिय गीत **'प्रलय प्रतीक्षा नमोः नमः'** की रचना की।

❖ हरिभाउ उपाध्याय (1893–1972 ई.)–

- इनका जन्म 9 मार्च, 1893 ई. में **भौंरासा** (ग्वालियर एम.पी.) में हुआ।
- इनका वास्तविक नाम **बद्रीनाथ** था।
- उपनाम– **सर्वोदयी नेता, गाँधीवादी नेता, दा–साहब।**
- इन्होंने अजमेर में 1 अप्रैल, 1925 को **सस्ता साहित्य मंडल,** 1 अगस्त, 1927 को बाबा नृसिंहदास अग्रवाल की सहायता से **गाँधी आश्रम** तथा 3 अक्टूबर, 1945 को **महिला शिक्षा सदन** की हंटूड़ी (अजमेर) में स्थापना की।
- **मालव मयूर पत्र (बनारस से प्रकाशित), हिन्दी नवजीवन** (अजमेर), **औदुम्बर** (काशी), **त्यागभूमि** (अजमेर से 1927 में प्रारंभ), **कर्मभूमि** (अजमेर) नामक समाचार पत्रों का सम्पादन किया तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ **सरस्वती** (अजमेर) नामक पत्रिका का संपादन किया।
- प्रमुख रचनाएँ– **युगधर्म, सर्वोदय की बुनियाद, विश्व की विभूतियाँ बापू के आश्रम में, स्वतंत्रता की ओर, साधना के पथ पर, दुर्वादल।**
- इन्होंने अजमेर में 20 अप्रैल, 1930 को **नमक कानून का उल्लंघन** किया, इन्हें **2 वर्ष** की सजा सुनाई गई।
- राजस्थान के एकीकरण के समय अजमेर मेरवाड़ा अलग से विधानसभा क्षेत्र था, उस समय इसके प्रथम मुख्यमंत्री हरिभाउ उपाध्याय थे, ये 1952 में मुख्यमंत्री बने।
- मोहनलाल सुखाड़िया की सरकार में ये **वित्त मंत्री** व **शिक्षा मंत्री** रहे।
- मंत्री पद से त्यागपत्र देने के बाद उनकी निम्न रचनाएँ प्रकाशित हुई। 1. मेरे हृदय देव 2. गाँधी युग के संस्मरण 3. भागवत् धर्म (द्वितीय भाग) 4. बापू कथा 5. बदलते संदर्भ और साहित्यकार (मरणोपरांत)
- राजस्थान साहित्य अकादमी , उदयपुर द्वारा 1964 ई. में **"मनीषी"** उपाधि से विभूषित किया गया था।
- इन्हें 1966 में **पद्म–भूषण** सम्मान मिला तथा 1972 में प्रधानमंत्री द्वारा **ताम्रपत्र** से सम्मानित किया गया।
- 25 अगस्त, 1972 को इनका निधन हो गया।

❖ मघाराम वैद्य–

- इन्हें बीकानेर में जनजागृति का जनक माना जाता है।
- इन्होनें 1936 में बीकानेर में **'बीकानेर प्रजामंडल'** की स्थापना की।
- इन्होंने **दूधवाखारा किसान आन्दोलन** का नेतृत्त्व हनुमान सिंह बुडानिया के साथ मिलकर किया।
- पुस्तक– **बीकानेर की थोथीपोथी।**

❖ रघुवार दयाल गोयल–

- इन्होनें 1942 में **'बीकानेर प्रजा परिषद'** की स्थापना की। इसके बाद गोयल को गिरफ्तार कर राज्य से निर्वासित कर दिया गया। गोयल ने कलकत्ता में प्रजापरिषद् की शाखा स्थापित की तथा वहाँ से 1945 में **'आज का बीकानेर'** नामक समाचार पत्र भी प्रकाशित किया।
- ये प्रकृति प्रेमी थे। **पेड़–पौधों** व अनेक जलाशयों का निर्माण व संरक्षण किया।

❖ स्वामी गोपालदास–

- इनका जन्म सन् 1882 ई. गाँव, भैंरूसर (चुरू) में हुआ था।
- इन्होंने 1907 में चुरू में **सर्वहितकारिणी सभा** की स्थापना की।
- इन्होंने पिछड़े व वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए चुरू में **'कबीर पाठशाला'** की स्थापना की व बालिकाओं की शिक्षा के लिए **'सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला'** व **वाचनालय** की स्थापना की।

23 राजस्थान की इतिहास प्रसिद्ध महिलाएँ

राजस्थान की इतिहास प्रसिद्ध महिलाएँ

❖ अंजना देवी चौधरी–

- इनका जन्म **नीमकाथाना** जिले के **श्रीमाधोपुर** में 1897 ई. में हुआ। ये राजस्थान के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी **रामनारायण चौधरी** की पत्नी थी।
- इन्होंने 1921–24 में मेवाड़ व बूँदी क्षेत्र की महिलाओं में राजनीतिक चेतना जागृत की तथा सत्याग्रह आन्दोलनों में भाग लिया।
- इन्होंने 1924 में **बिजौलिया किसान आन्दोलन** में भाग लेते हुए 500 महिलाओं के जुलूस का नेतृत्त्व करते हुए गिरफ्तारी दी।
- कांग्रेस के **नमक सत्याग्रह** (1930) के दौरान इन्हें **6 महीने** का कारावास भुगतना पड़ा। **(स्रोत– राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत, डॉ. जैन व माली)**
- ये राजस्थान में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार होने वाली **प्रथम महिला** थी।
- इन्होंने **बेगूँ** (चित्तौड़) किसान आन्दोलन में भी सत्याग्रही महिलाओं का नेतृत्त्व किया। 1934–36 ई. तक **अजमेर** के **नारेली आश्रम** में रहकर हरिजन सेवा कार्यों में भाग लिया।

❖ किशोरी देवी–

- इनका जन्म **दुलारों का बास**, झुंझुनू जिले में हुआ था। ये **शेखावाटी** के स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी। इन्होने अपने पति के साथ शेखावाटी क्षेत्र में जागीर प्रथा के विरोध में हुए आन्दोलन में भाग लिया।
- इन्होने सिहोट ठाकुर द्वारा **सोतिया का बास नामक गाँव** में जाट महिलाओं के साथ किए गए दुव्यर्वहार के विरोध में 25 अप्रैल 1934 को सीकर के **कटराथल** गाँव में **10,000** महिलाओं के विशाल सम्मेलन की अध्यक्षता की।
- इन्होंने महिलाओं का समूह बनाकर **जयपुर** में सत्याग्रह भी किया।

❖ जानकी देवी–

- ये प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी **विजयसिंह पथिक** की धर्मपत्नी थी।
- 24 फरवरी, 1930 को इनका विवाह पथिक जी से हुआ। विवाह के पश्चात् इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

❖ जानकी देवी बजाज–

- इनका जन्म **जावरा** (मध्यप्रदेश) में 1893 ई. में हुआ। इनके पिता सेठ गिरधारीलाल मूलतः लक्ष्मणगढ़ (सीकर) के निवासी थे। ये सेठ **जमनालाल बजाज** की धर्मपत्नी थी।
- इन्हें काँग्रेस के **नमक सत्याग्रह** (1930) के दौरान **6 माह** का कारावास दिया गया था।
- इन्होंने 1944 में **जयपुर प्रजामंडल** के अधिवेशन की अध्यक्षता की। इन्होंने महिलाओं में जनजागृति पैदा की व सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। जानकी देवी ने विनोबा भावे के सानिध्य में गौसेवा का कार्य किया, उनके **भूदान आन्दोलन** के दौरान अनेक कुओं का निर्माण करवाया।
- बजाज जी के निधन के बाद ये गौसेवा संघ की अध्यक्षा बनी।
- 1956 में इन्हें भारत सरकार ने **पद्म–विभूषण** से अलंकृत किया। ये पद्म विभूषण प्राप्त करने वाली राजस्थान की प्रथम महिला एवं प्रथम व्यक्तित्त्व थी।

❖ श्रीमती रतन शास्त्री–

- इनका जन्म खाचरोद (मध्यप्रदेश) में 15 अक्टुबर, 1912 को हुआ। ये हीरालाल शास्त्री की पत्नी थी। इन्होंने बालिकाओं की शिक्षा के लिए अपने पति के साथ टोंक के वनस्थली में **'शांताबाई शिक्षा कुटीर'** नामक विद्यालय की स्थापना की, जो वर्तमान में **'वनस्थली विद्यापीठ'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- इन्होंने 1939 ई. में **जयपुर राज्य प्रजामण्डल** के सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) के समय भूमिगत कार्यकत्ताओं तथा उनके परिवारों की सेवा की।
- इन्हें भारत सरकार द्वारा 1955 में **पद्मश्री** तथा 1975 में **पद्म विभूषण** से सम्मानित किया गया। ये पद्मश्री से सम्मानित होने वाली राजस्थान की प्रथम महिला थी।

❖ नारायणी देवी वर्मा–

- ये माणिक्यलाल वर्मा की धर्मपत्नी थी। इनका जन्म **सिंगोली** (मध्यप्रदेश) में हुआ।
- इन्होंने अपने पति के साथ किसान सत्याग्रह, भारत छोडो आन्दोलन, समाज सुधार तथा **बिजौलिया आन्दोलन** में भाग लिया।
- 1939 ई. में प्रजामण्डल के कार्यों में भाग लेने के कारण इन्हें जेल जाना पड़ा। 1942 ई. में **भारत छोड़ो आन्दोलन** में भाग लेने के कारण इन्हें **पुनः जेल** जाना पड़ा।
- नारायणी देवी ने महिला शिक्षा व जागृति के लिए भीलवाड़ा में 1944 में **महिला आश्रम** की स्थापना की।
- बिजौलिया किसान आन्दोलन के समय इन्हें बंदी बनाकर कुम्भलगढ़ किले में रखा गया था। स्वतंत्रता के बाद इन्हें **1970 से 1976 ई.** तक राज्यसभा की सदस्या रहीं।
- 12 मार्च, 1977 को इनकी मृत्यु हो गई थी।